Each directory should have a file called README bib.txt. with bibliographic entry with following details:-

i. Discipline : **Jainology & Prakrit**
ii. Name of the text : **Gommaṭasāra - karmakāṉda**
iii. Author : **Nemicandra**

File named "README_type_log.txt" containing the following details:-

i. Name of the institute : **Jaipur Campus**
ii. (a) Principal Investigator : **Prof. Radhavallabh Tripathi**
(b) Investigator : **Prof. R. Devnathan**
(c) Co-investigator : **Dr. Shukla Mukherjee**
(d) Editor : **Dr. Kamalesh Kumar Jain**
iii. Name of the typist : **Ramprasad Jajoriya**
iv. Completion date of data entry : **31.08.2009**
v. Name of the proof reader : **Dr. Kamalesh Kumar Jain**
vi. Completion date of proof reading : **November 5, 2009**
vii. Name of the approval authority
from Rashtriya Sanskrit Sansthan : **Prof. Arknath Choudhary**
viii. Date of approval : **22.03.2010**

श्रीमद्राजचंद्रजैनशास्त्रमाला

श्री परमात्मने नमः

श्रीमन्नेमिचन्द्रसैद्धान्तिकचक्रवर्तिविरचित

गोम्मटसार

(कर्मकाण्ड)

गोम्मटसार कर्मकाण्ड

विषय-सूची (list of Contents)

विषय	गाथा संख्या
मङ्गलाचरण एवं ग्रन्थप्रतिज्ञा	1
2- प्रकृतिसमुत्कीर्तनाधिकार	
प्रकृति शब्द का अर्थ	2
कर्म-नोकर्म ग्रहणकरनेका कारण	3
कर्म-नोकर्मके परमाणुओं की संख्या	4
कर्म क परमाणुओं के उदय तथा सत्त्व का प्रमाण	5
कर्म के सामान्यादि भेद	6-7
कर्म के आठ भेद	8
घाति-अघाति कर्मसंज्ञा	9
कर्मों के घाति-अघाति होने में युक्ति	10
अघातिकर्मों में आयुकर्म का कार्य	11
नामकर्म का कार्य	12
गोत्रकर्म का कार्य	13
वेदनीयकर्म का कार्य	14
जीव के प्रधान गुण	15
कर्मों के पाठक्रमकी सार्थकता	16-20
आठ कर्मों के स्वभावका दृष्टान्त	21
कर्मों की उत्तरप्रकृतियों(विशेषभेदों) का क्रम	22
पांच निद्राओंका कार्य	23-25
मिथ्यात्वके तीन भेदोंका कारण	26
पांच शरीरोंके संयोगी भेद	27
आंगोपांगोंके नाम	28
छह संहननवालोंके उत्पत्तिस्थान	29
आतपका लक्षण	33
नामकर्मकी प्रकृतियोंका अभेदसे अंतर्भाव	34
बंधयोग्य प्रकृतियोंकी संख्या	35
उदयप्रकृतियोंकी संख्या	36-37
सत्त्वप्रकृतियोंकी संख्या	38
घातिया कर्मों के भेद	39-40
अघातिया कर्मों के भेद	41-44

कषायोंका कार्य तथा संस्कारकाल 45
पुद्गलविपाकी प्रकृति 47
भवविपाकी, क्षेत्रविपाकी, जीवविपाकी
प्रकृतियोंकी संख्या 48-51
नामादि चार निक्षेपोंसे कर्मके भेद और
उनमेंसे नामनिक्षेप कर्म 52
स्थापनारूप कर्म 53
द्रव्यनिक्षेपरूप कर्म तथा भेद 54
नोआगमद्रव्यकर्म 55
भूतशरीर(त्यक्त शरीर) के भेद 56
कदलीघातमरण या अकालमृत्यु
का स्वरूप 57
च्यावित एवं त्यक्त शरीर 58
त्यक्त एवं भक्तप्रतिज्ञा शरीरके भेद 59
भक्तप्रतिज्ञा के भेद 60
इंगिणीमरण और प्रायोपगमन
का लक्षण 61
नोआगमद्रव्यकर्म के भेद 62-63
भावनिक्षेपकर्मका स्वरूप
और भेद 64-66
कर्मविशेषमें नामादिनिक्षेप 67-68
मूल और उत्तर प्रकृतियों के
नोकर्मद्रव्य 69-85
नोआगमभावकर्म का स्वरूप 86

2- बन्धोदयसत्त्वाधिकार

मंगलाचरण एवं वक्तव्यप्रतिज्ञा 87
स्तवका लक्षण 88
कर्मकी बंधअवस्थाके भेद 89-91
प्रकृतिबंधका गुणस्थानोंमें नियम 92
तीर्थंकरप्रकृति के बंध में विशेष
नियम 93
गुणस्थानोंमें प्रकृतियोंकी बंध-
व्युच्छित्ति संख्या 94
बंधव्युच्छित्तिकी संख्या
(गुणस्थान क्रम से) 95-02
बंध और अबंधप्रकृतियोंकी संख्या
(गुणस्थानक्रमसे) 103-04
बंधव्युच्छित्ति आदि की संख्या
(मार्गणाओं के क्रमसे) 105-21
प्रकृतिबंधमें सादि-आदि भेदोंका
स्वरूप तथा स्वामी 122-24
प्रकृतियोंके विरोधी एवं अविरोधी
भेद 125-26

स्थितिबंधका स्वरूप 127
स्थितिके उत्कृष्टादि भेद 128-33
उत्कृष्टस्थिति आदिके कारण 134
उत्कृष्टस्थितिबंध के स्वामी 135-47
जघन्यादि स्थितिभेदों का चौदह जीवभेदों में कथन 148-50
जघन्यस्थितिबंधके स्वामी 151
स्थितिभेदोंमें सादि-आदि भेद 152-54
स्थितिकी आबाधाका लक्षण 155
आबाधाका उदयकी अपेक्षा कथन 156-58
आबाधाका उदीरणाकी अपेक्षा कथन 159
कर्मों के निषेकका स्वरूप 160
निषेकका क्रम 161-62
अनुभागबंधका स्वरूप 163
अनुभाग के उत्कृष्टादि भेदों के स्वामी 164-69
जघन्य अनुभागबंधके स्वामी 170-77
अनुभागबंधके सादि-आदि भेद 178
ध्रुवप्रकृतियोंमें सादि-आदि भेद 179
अनुभागबंधका घातियाकर्मों में दृष्टान्तद्वारा समर्थन 180-83
अनुभागबन्धका अघातियाकर्मों में दृष्टान्तद्वारा कथन 184
प्रदेशबंधका स्वरूप 185-91
कर्मप्रदेशों(परमाणुओं) का मूल-प्रकृतियों में विभाजन 192-99
कर्मपरमाणुओं के उत्तरप्रकृतियोंमें विभागका कथन 200-06
प्रदेशबंधके उत्कृष्टादि भेदोंके सादि-आदिक भेदोंका कथन 207-10
उत्कृष्ट प्रदेशबंधके स्वामी 211-14
जघन्य प्रदेशबंधके स्वामी 215-17
प्रकृतिप्रदेशबंधके कारण-योगस्थानोंका स्वरूप संख्या भेद तथा स्वामी 518-31
योगस्थानोंमे 84 स्थानोंका अल्पबहुत्वकथन प्रतिज्ञासहित 232-60
कर्मों के उदयका कथन 261-62
उदयव्युच्छित्तिका कथन 263-72
केवलीभगवानके सातादिके उदयसे इन्द्रियजन्यसुखदुःखके अभावका युक्तिपूर्वक विवेचन 273-75
उदयप्रकृतियोंकी गुणस्थानक्रमसे

संख्या 276
अनुदयरूपप्रकृतियोंकी संख्या 277
उदयप्रकृतियोंकी उदीरणासे
विशेषताका कथन 278-80
उदीरणाकी गुणस्थान क्रम से
व्युच्छित्ति 281
उदीरणा अनुदीरणारूप प्रकृतियों
की संख्या(गुणस्थानों में) 282-83
उदयादि तीन भेदोंका गति आदि
चौदह मार्गणाओंमें कथन 284
सत्त्वप्रकृतियोंका गुणस्थान
क्रम से स्वरूप 333-36
सत्त्वव्युच्छित्तिका कथन 337-41
सत्त्व और असत्त्व प्रकृतियों की
संख्या (गुणस्थानक्रमसे) 342-44
सत्त्वप्रकृतियों का गत्यादि
मार्गणाओं में कथन 345-56
अधिकारसमाप्तिसूचक मंगलाचरण 357

3- सत्त्वस्थान भंगाधिकार

मंगलाचरणपूर्वक अधिकार के
कथन की प्रतिज्ञा 258
स्थान और भंग कहनेकी रीति 359-61
आयुके बंधाबंधकी अपेक्षा गुणस्थानों
में सत्त्वस्थानका कथन 362-63
स्थानोंके भंगों(भेदों) की संख्या 364
मिथ्यात्वगुणस्थानके स्थानों की
प्रकृतियोंकी संख्या 365-66
मिथ्यात्वगुणस्थानमें भंगसंख्या 367-71
सासादनादि गुणस्थानोंमें स्थान
और भंगोंकी संख्या 372-94
सत्त्वस्थानके अध्ययन का फल 395
कनकनन्दिकथित सत्त्वस्थान को
कहने की सूचना 396
ग्रन्थकर्त्ता का चक्रवर्तित्व 397

4- त्रिचूलिकाधिकार

मंगलाचरणपूर्वक अधिकार के
कथन की प्रतिज्ञा 398
तीन चूलिकाओंमेंसे नवप्रश्नचूलिकाओं
का वर्णन 399-07
पंचभागहार (द्वितीयचूलिका) का
मंगलाचरण 408-35
दशकरणचूलिका मंगलपूर्वक 436-37

दशकरणोंका नाम व स्वरूप 438-40
दशकरणोंका गुणस्थानों में यथासंभव प्रकार 441-50

5- स्थानसमुत्कीर्तनाधिकार

मंगलाचरणपूर्वक अधिकार कथन प्रतिज्ञा 451
बंधादिस्थानोंका प्रकृतिसंख्या सहित गुणस्थानोंमें कथन 452-89
मोहनीयकर्मके उदयस्थानों तथा प्रकृतियों की संख्या का उपयोग-योग-संयम लेश्या और सम्यक्त्व की अपेक्षासे कथन 490-07
मोहनीयके सत्त्वस्थानोंका कथन 508-18
नामकर्मके 41 जीवपदोंका कथन 519-20
नामकर्मके बंधादिस्थान तथा भंग, गुणस्थान और मार्गणाओं की अपेक्षा कथन 521-26
बंधोदयसत्त्वके त्रिसंयोगी भंग 627-703
बंधोदयसत्त्वस्थानोंका चौदह जीवसमासोंकी अपेक्षा कथन 704-09
बंधोदयसत्त्वस्थानोंका चौदहमार्गणाओं की अपेक्षाकथन 710-39
बंधादि त्रिसंयोगमें एक आधार और दो आधेयकी अपेक्षा कथन 740-59
बंधादिस्थानोंमें दो आधार एक आधेयकी अपेक्षा कथन 760-83
नामकर्मके संयोगीभेद 784

6- प्रत्ययाधिकार

मंगलाचरणपूर्वक अधिकार की वक्तव्यप्रतिज्ञा 785
आस्रवोंका स्वरूप एवं उनके भेद 786
मूल एवं उत्तर प्रत्ययोंका गुण-स्थानों में कथन 787-90
प्रत्ययोंकी व्युच्छित्ति तथा अनुदय 790/1-7
आस्रवोंके विशेषों(भेदों) का कथन 791-99
कर्मों के बंधके कारण एवं परिणामों का कथन 800-10

7- भावचूलिकाधिकार

मङ्गलाचरण एवं अधिकार वक्तव्य
प्रतिज्ञा 811-12
भावोंके नाम एवं भेद 813
भावोंकी उत्पत्तिका कारण 814-15
भावोंके भेदोंके नाम 816-22
उत्तरभावों के भेद
(प्रकारान्तर से) 823-39
भावोंके स्थानभंग और पदभंगोंका
गुणस्थानोंकी अपेक्षा कथन 840-75
एकान्तमतके भेदोंका स्वरूप 876
एकान्तभेदोंके भेदोंका स्वरूप 877-93
एकान्तमतोंके विवादनिवारण की
युक्ति (सारांशसहित) 894
एकान्तमतों के मिथ्या होनेका
कारण (युक्तिसहित) 895

8- त्रिकरणचूलिकाधिकार

मंगलाचरण एवं गुरु को नमन 896
तीनकरणोंका स्वरूप 897-99
अधःकरणका अंकों के संकेत
से कथन 900-07
अधःकरणके कालका प्रमाण 908
अपूर्वकरणमें अंकोंकी सहनानी 909
अपूर्वकरणके कालका प्रमाण 910
अनिवृत्तिकरणकी सहनानी तथा
कालका प्रमाण 911-12

9- कर्मस्थितिरचनाधिकार

मङ्गलाचरण एवं वक्तव्यप्रतिज्ञा 913
कर्मस्थितिरचनाका प्रकार 914-22
कर्मस्थितिरचनाकी अंकसंदृष्टि 923
कर्मस्थितिरचनाकी अर्थसंदृष्टि 924-43
सत्तारूप त्रिकोणयंत्ररचनाके जोड
देने की विधि 944
स्थिति के भेदोंका कथन 945
सांतरस्थिति के भेद 946
स्थिति के कारण कषायाध्यवसाय-
स्थानों का मूलप्रकृतियों में
कथन 947-48
स्थितिबंधाध्यवसायस्थानोंका
प्रमाण 949-51
जघन्यचय का महत्त्व 952
आयुकर्म के स्थितिबंधाध्यवसाय-
स्थानों में विशेषता 953

अध्यवसायस्थानोंमें अनुकृष्टि-
विधान 954-62
स्थितिसंबंधी अनुभागबंधाध्यवसाय-
स्थानोंका कथन 963

ग्रंथकर्त्ता की प्रशस्ति

ग्रन्थ रचनाका प्रयोजन 965
अजितसेनगुरुको नमस्कार 966
चामुण्डरायको बुद्धिवर्धक आशीर्वाद 967
दक्षिणकुक्कुट नामसे प्रसिद्ध जिन
के प्रतिबिंबको जयशब्द 968
चामुण्डरायको विशेष आशीर्वाद 969-71
अन्तिम आशीर्वाद 972

गोम्मटसार कर्मकाण्ड

गाथानुक्रमणी (index of Verses)

गाथा	गाथा संख्या (क्रमानुसार)
अ	
अक्खाणं अणुभवणं	14
अत्थं देक्खिय जाणादि	15
अब्भरहिदादु पुव्वं	16
अप्पोवयारवेक्खं	61
अणणोकम्मं मिच्छं	75
अयदे बिदियकसाया	97
अवरो भिण्णमुहुतो	126
अरदी सोगे संढे	130
अजहण्णट्ठिदिबंधो	152
अणथीणतियं	171
अवसेसा पयडीओ	183
अविभागपडिच्छेदो	223
अवरुक्कस्सेण हवे	242
अट्ठसमयस्स थोवा	243
अण्णोण्णगुणिदरासी	249
अणुभागाणं बंध	260
अयदे बिदियकसाया	266
अपमत्ते सम्मत्तं	268
अवणिदतिप्पयडीणं	280
अयदापुण्णे ण हि थी	287
अविरदठाणं एक्कं	305
अणुभयवचि वियल	311
अणसंजोगे मिच्छे	328/2,560
अणुदय तदियं णीचं	341
अभव्वसिद्धे णत्थि हु	355
अण्णदरआउसहिया	378
अणियाट्टिचरिमठाणा	389
अणियट्टिगुणट्ठाणे	392
अठ्ठारस चउअट्ठ	393
असहायजिणवरिंदे	398
अण्णोण्णब्भत्थं पुण	433
अण्णत्थठियस्सुदये	439

अट्ठुदओ सुहुमोत्ति य	454	अपमत्ते य अपुव्वे	701
अप्पं बंधंतो बहु	469	अण्णाणदुगे बंधो	723
अप्पदरा पुण तीसं	473	अविरमणे बंधुदया	729
अणसंजोजिदसम्मे	478	अडवीसचऊ बंधा	731
अणियट्टिकरणपढमा	483	अत्थि णवट्ठ य दुदओ	738
अट्ठत्तीससहस्सा	505	अडवीसे तिगिणउदे	780
अट्ठत्तरीहिं सहिया	506	अडवीसमिवुणतीसे	781
अट्ठेव सहस्साइं	507	अवरादीणं ठाणं	791
अट्ठ य सत्त य छक्क य	508	अणरहिदसहिदकूडे	796
अडचउरेक्कावीसं	511	अरहंतसिद्धचेदिय	802
अडवीस दु हारदुगे	546	अणुवदमहव्वदेहिं य	807
अडवीसतिय दु साणे	551	अरहंतादिसु भत्तो	809
अविरदभंगे मिस्स य	553	अवधिदुगेण विहीणं	827
अप्पपरोभयठाणे	555	अयदुवसमगचउक्के	845
अविरदसम्मो देसो	558	अट्ठगुणिज्जा वामे	849
अणसंजोजिदमिच्छे	328 / 1,561	अडदालं छत्तीसं	855
अडवण्णा सत्तसया	608	अडसट्ठी एक्कसयं	871
अट्ठविहसत्तछब्बं	628	अडदालं चारिसया	872
अडछव्वीसं सोलस	649	असिदिसदं किरियाणं	876
अट्ठसु एक्को बंधो	653	अत्थि सदो परदोवि...हु	877
अणियट्टीबंधतियं	654	अत्थि सदो... वोच्छामि	878
अडबीसदुगं बंधो	700	अण्णाणी हु अणीसो	880

अणुकट्टिपदेण हदे	906
अप्पिट्ठपंतिचरिमो	936
अवरट्ठिदिबंधज्झव	949
अहियागमणणिमित्तं	950
अवरुक्कस्सठिदीणं	960
अट्ठण्हंपि य एवं	961

आ

आवरणमोहविग्घं	9
आउबलेण अवट्ठिदि	18
आऊणि भवविवाई	48
आयदणाणायदणं	74
आवलियं आवाहा	159,918
आबाहूणियकम्म	160,919
आवाहं बोलाविय	161,910
आदाओ उज्जोओ	165
आहारमप्पमत्ते	172
आवरणदेसघादं	182
आउगभागो थोवो	192
आउक्कस्स पदेसं	211
आदी अंते सुद्धे	254
आहारं तु पमत्ते	261
आउगबंधाबंधण	359
आउदुगहारतित्थं	367
आदिमपंचट्ठाणे	379
आदिल्लदससु सरिसा	381
आहारदुगं सम्मं	415
आदिमसत्तेव तदो	442
आहारगा दु देवे	542
आहारे बंधुदया	737
आदेसेवि य एवं	875
आलसड्ढो णिरुच्छाहो	890
आदिधणादो सव्वं	901
आदिम्मि कमे वड्ढदि	907
आवरणवेदणीये	938
आउस्स य संखेज्जा	939
आवाधाणं बिदियो	941
आउट्ठिदिबंधज्झव	947
आउस्स जहण्णट्ठिदि	953

इ

इट्ठाणिट्ठवियोगं	77
इगि पंचेंदिय थावर	131
इगिठाणफड्ढयाओ	227

इगिठाणफड्ढयाओ सम. 250
इगिविगलथावरचऊ 288
इत्थीवेदेवि तहा 321
इदि चदुबंधक्खवगे 515
इगि अड अट्ठिगि 577
इगिविहि गिगि ख 578
इगिवारं वज्जित्ता 643
इगिवीसेण णिरुद्धे 675
इगिवीसं ण हि पढमे 676
इगिवीसादी एक्कत्ती 697
इगिछक्कडणववीस 708
इगिविगलबंधठाणं 715
इगिछक्कडणववीसं तीसदु 716
इगितीसे तीसुदओ 744
इगिणवदीए बंधा 756
इगिबंधट्ठाणेण दु 768
इगि णउदीए तीसं 771
इगिवीसादट्ठुदओ 772
इगितीसबंधठाणे 774
इगिवीसट्ठाणुदये 775
इट्ठपदे रूऊणे 861
इगिदालं च सयाइं 870
इगिवीस मोह खवणुव 897
इगिपंतिगदं पुध पुध 935
इट्ठसलायपमाणं 937

उ

उच्चस्सुच्चं देहं 84
उवघादमसग्गमणं 44
उवसंतखीणमोहे 102
उदयं पडि सत्तण्हं 156,915
उवघादहीणतीसे 167
उज्जोवो तमतमगे 169
उत्तरपयडीसु पुणो 196
उक्कडजोगो सण्णी 210
उववादजोगठाणा 219
उदयस्सुदीरणस्स य 278
उव्वेल्लिददेवदुगे 388
उव्वेल्लण विज्झादो 409
उव्वेल्लणपयडीणं 413
उगुदालतीससत्त य 418
उदये संकममुदयेतं अ 440
उवसंतोत्ति सुराऊ 446
उदये संकममुदये 450

उगुवीसं अट्ठारस	465
उदयठ्ठाणं दोण्हं	482
उदयट्ठाणं पयडिं	490
उवसामगा दु सेढिं	559
उदधिपुधत्तं तु तसे	615
उवरदबंधे चदुपं	632
उच्चुव्वेल्लिदतेऊ	636
उच्चव्वेल्लिद तेऊवाऊ	637
उदया चउवीसूणा	699
उदओ तीसं सत्तं	702
उदया इगिपण सगअड	713
उदया उणतीसतियं	724
उदयासव्वं चउपण	726
उदया इगिपणवीसं	733
उदया मदिं व खइये	734
उदया इगिवीसचऊ	735
उदयं सट्ठाणाणि य	741/1
उवरदबंधेसुदया	745
उवरिल्लपंचये पुण	788
उम्मग्गदेसगो मग्ग	805
उवसमखइयो मिस्सो	813
उवसमभावो उवसम	816
उत्तरभंगा दुविहा	823
उदयेणक्खे चडिदे	834
उगुवीसतियं तत्तो	839
उवसामगेसु दुगुणं	843
उड्ढतिरिच्छपदाणं	863
उभयधणे संमिलिदे	902
उक्कस्सट्ठिदिबंधो	940
उवरिमगुणहाणीणं	944

ऊ

ऊणत्तीससयाहिय	605
ऊणत्तीससयाइं	869

ए

एइंदियमादीणं	80
एयं पणकदि	144
एयक्खेत्तोग्गाढं	185
एयसरीरोगाहिय	186
एयाणेयक्खेत्तट्ठिय	187
एयंतवड्ढिठाणा	222
एक्केक्के पुण वग्गे	226
एदेसिं ठाणाणं	232
एदेसिं ठाणाओ	241

एदेण कारणेण दु	275
एयं वा पणकाये	309
एवं माणादितिए	323
एवं पंचतिरिक्खे	347
एवं तिसु उवसमगे	385
एदे सत्तट्ठाणा	386
एवं सत्तट्ठाणं	395
एक्क य छक्केयारं	481
एक्क य छक्केयारं दस	488
एकावण्णसहस्सं	493
एयक्ख अपज्जत्त	530
एक्कं व दो व तिण्णि व	584
एगे इगिवीसपणं	595
एक्के एक्कं आऊ	642
एवमबंधे बंधे	644
एक्काउस्स तिभंगा	645
एक्कुदयुवसंतंसे	690
एगेगमट्ठ एगे	694
एगुणतीसत्तिदयं	698
एगे वियले सयले	711
एगेगं इगितीसे	741
एवं खिगितीसे ण हि	767
एवं पण छव्वीसे	770
एवमडसीदितिदये	776
एक्कं च तिण्णि पंच य	793
एक्कारं दसगुणियं	852
एक्कादी दुगुणकमा	860
एक्को चेव महप्पा	881
एकम्हि कालसमये	911

ओ

ओहिमणपज्जवाणं	71
ओही केवलदंसण	73
ओरालियवेगुव्विय	81
ओघे वा आदेसे	105
ओराले वा मिस्से	116
ओघं तसे ण थावर	310
ओघं कम्मे सरगदि	318
ओघं वा णेरइये	346
ओघं देवे ण हि णिर	348
ओघं पंचक्खतसे	349
ओरालमिस्सजोगे	353
ओरालदुगे वज्जे	425
ओक्कट्टणकरणं पुण	445

ओरालं दंडदुगे	587
ओहिदुगे बंधतियं	730
ओरालमिस्स तसवह	790/4
ओदयिया पुण भावा	818
ओघादेसे संभव	820

अं

अंतिमतियसंहडणं	32
अंतोमुहुत्तपक्खं	46
अंतोकोडाकोडिट्ठिदिस्स	157,916
अंतरमुवरीवि पुणो	230
अंगुलअसंखभागप्प	239
अंतरगा तदसंखे	255
अंगुल असंखभागंवि	434
अंतिमठाणं सुहुमे	548
अंतोमुहुत्तमेत्तो	899
अंतोमुहुत्तकालं	908
अंतोमुहुत्तमेत्ते	910
अंतोकोडाकोडि	945

क

कम्मत्तणेण ए	6
केवलणाणं दंसण	10
कम्मकयमोहवड्ढिय	11
केवलणाणावरणं दंस	39
कदलीघादसमेदं	58
कम्मद्दव्वादण्णं	64
कम्मागमपरिजाणग	65
कप्पित्थीसु ण तित्थं	112
कम्मे उरालमिस्सं	119
कम्मसरूवेणागय	155,914
कम्मे व अणा...चंदेण	332
कम्मेवाणाहारे...सत्तमेव	356
किं बंधो उदयादो	399
कम्माणं संबंधो	438
कोहस्स य माणस्स य	486
कम्मं वा किण्हतिए	549
कम्मोरालियमिस्सं	586
कम्मुवसमम्मि उवसम	814
कम्मुदयज कम्मिगुणो	815
कालो सव्वं जणयदि	879
को करइ कंटयाणं	883
को जाणइ णवभावे	886
को जाणइ सत्तचऊ	887

ख

खीणकसाय दुचरिमे	270
खिव तस दुग्गदि दुस्सर	308
खाइयसम्मो देसे	329
खवणं वा उवसमणे	343
खीणोत्ति चारि उदया	461
खाओवसमियभावो	817
खाइय अविरदसम्मे	831

ग

गदिआदि जीवभेदं	12
गदिजादी उस्सासं	51
गुडखंडसक्करामिय	184
गदियादिसु जोग्गाणं	284
गदिआणुआउ उदओ	285
गुणहाणिअणंतगुणं	435
गयजोगस्स य बारे	598
गयजोगस्स दु तेरे	611
गुणसंजादप्पयडिं	612
गोम्मटजिणिंदचंदं	811
गोम्मटसंगहसुत्तं कम्मा.	965
गोम्मटसंगहसुत्तं	968
गोम्मटसुत्तल्लिहणे	972

घ

घादीवि अघादिं वा	17
घादिं व वेयणीयं	19
घादीणीचमसादं	43
घम्मे तित्थं बंधदि	106
घादितिमिच्छकसाया	124
घादीणं अजहण्णो	178
घादितियाणं सगसग	201
घोडणजोगोऽसण्णी	216
घादीणं छदुमट्ठा	455

च

चरिम अपुण्णभवत्थो	217
चत्तारि तिण्णि कमसो	246
चक्खुम्मि ण साहारण	325
चत्तारिवि खेत्ताइं	334
चदुगदिमिच्छे चउरो	351
चउछक्कदि चउअट्ठं	363
चत्तारि तिण्णि तिय चउ	453
चदुरेक्क दु पण पंच य	556
चदुगदिया एइंदी	593

चत्तारि वारमुवसम 619
चरिमे चदु तिदुगेक्कं 668
चदुबंधे दो उदये 678
चउरुदयुवसंतंसे 689
चारुसुदंसणधरणे 739
चरिमदु वीसूणुदयो 757
चदुपच्चइगो बंधो 787
चउवीसट्ठारसयं 797
चक्खूण मिच्छसासण 830
चयधणहीणं दव्वं 903
चरिमं चरिमं खंडं 958

छ

छट्ठे अथिरं असुहं 98
छण्हं पि अणुक्कस्सो 207
छण्णोकसायणिद्दा 213
छसु सगविहमट्ठविहं 452
छब्बावीसे चदु इगि 467
छट्ठोत्ति चारि भंगा 634
छप्पण उदये उवसं 688
छण्णवछत्तियसग इगि 693
छब्बीसे तिगिणउ 778
छप्पंचादेयंतं 799
छण्णउदि चउसहस्सा 909

ज

जीरदि समयपबद्धं 5
जंतेण कोद्दवं वा 26
जाणुगसरीर भवियं 55
जदि सत्तरिस्स एत्तिय 145
जेट्ठावाहोवट्टिय 147
जेट्ठे समयपबद्धे 188
जोगट्ठाणा तिविहा 218
जोगा पयडिपदेसा 257
जुगवं संजोगित्ता 336
जह चक्केण य चक्की 397
जत्थ वरणेमिचंदो 408
जस्स य पायपसाये 436
जोगिम्मि अजोगिम्मि य 703
जहखादे बंधतियं 728
जेहिं दु लक्खिज्जंते 812
जीवत्तं भव्वत्तम 819
जोगिम्मि अजोगिम्मिय 873
जत्तु जदा जेण जहा 882

जावदिया वयणवहा	894
जम्हा उवरिमभावा	898
जम्हि गुणा विस्संता	966
जेण विणिम्मियपडिमा	969
जेणुब्भियथंभुवरिम	971

ठ

ठिदि अणुभागपदेसा	91
ठिदि अणुभागाणं पुण	429
ठाणमपुण्णेण जुदं	522
ठिदिगुणहाणिपमाणं	951

ण

णाणस्स ...पयडीओ	8
णाणस्स ...सिद्धं	20
णलया बाहू य तहा	28
णवगेविज्जाणुद्दिस	30
णाणावरणचउक्कं	40
णाणं ठवणा दवियं	52
णोआगमभावो पुण	66
णिरयायुस्स अणिट्ठा	78
णिरयादीण गदीणं	79
णोआगमभावो पुण सग	86
णमिऊण णेमिचंदं	87
णिरयेव होदि देवे	111
ण हि सासणो अपुण्णे	115
णवरि य सव्वुवसम्मे	120
णरतिरिया सेसाउं	137
णाणंतरायदसयं	209
णिव्वत्ति सुहुमजेट्ठं	234
णाणागुणहाणिसला	248
णिरयं सासणसम्मो	262
णट्ठा य रायदोसा	273
णिरयगदि आउणीच	316
णिरयतिरिक्खसुरा	335
णिरयतिरिक्ख दु वियलं	338
णभतिगिणभ इगि	342
णिरयादिसु पयडिट्ठिदि	344
णमिऊण वड्ढमाणं	358
णारकछक्कुव्वेल्ले	370
णिरयतिरियाउ दोण्णिवि	384
णत्थि अणं उवसमगे	391
णवरि विसेसं जाणे	443
णमिऊण णेमिणाहं	451
णवछक्क चदुक्कं च य	459

णव सासणोत्ति बंधो 460

णभचउवीसं बारस 472

णवसय सत्ततरिहिं 489

णवणउदि सगसयाहिय 492

णत्थि णउंसयवेदो 497

णिरया पुण्णा पण्हं 519

णिरयेण विणा तिण्हं 523

णरगइणामरगइणा 525

णामस्स णवधुवाणि य 526

णेरयियाणं गमणं 538

णामस्स बंधठाणा 544

णिरयादिजुदट्ठाणे 552

णामधुवोदयबारस 588

णारयसण्णिमणुस्स 607

णउदी चदुग्गदिम्मि य 621

णिरये वा इगिणउदी 623

णीचुच्चाणेकदरं 635

णवरि य अपुव्वणवगे 677

णामस्स य बंधोदय...सव्वत्थ 692

णामस्स य बंधोदय ...जुत्तीए 695

णिरयादिणामबंधा 712

णवपंचोदयसत्ता 740

णामस्स य बंधादिसु 784

णमिऊण अभयणंदिं 785

णवरि विसेसं जाणे 829

णत्थि सदो परदोवि य 884

णत्थि य सत्तपदत्था 885

णमह गुणरयणभूसण 896

त

तं पुण अट्ठविहं वा 7

तेजाकम्मेहिं तिये 27

तित्थयरं उस्सासं 50

तव्वदिरित्तं दुविहं 63

तेजदु हारदु समचउ 100

तियउणवीसं छत्तिय 104

तिरिये ओघो तित्था 108

तिरिये व णरे णवरि हु 110

तीसं कोडाकोडी तिघादि 127

तित्थाहाराणंतो 141

तण्णोकसायभागो 204

तीसण्हमणुक्कस्सो 208

तह य असण्णी सण्णी 236

तह सुहुम सुहुम जेट्ठं 238

तेहिं असंखेज्जगुणा	259	तिण्णि दस अट्ठ ठाणा	458
तदियेक्कवज्जणिमिणं	271	तिसु तेरं दस मिस्से	494
तदियेक्कं मणुवगदी	272	तेवण्णणवसयाहिय	498
तीसं बारस उदयु	279	तेरससयाणि सत्तरि	501
तेउतिगूणतिरिक्खे	289	तेवण्ण तिसदसहिय	502
तिरये ओघो सुरणर	294	तिण्णेगे एगेगं	509
तिरिय अपुण्णं वेगे	306	तेरस बारेयारं	512
तिम्मिस्से पुण्णजुदा	312	तट्ठाणे एक्कारस	514
तित्थयरमाणमाया	322	तिण्णेव दु बावीसे	516
तेउतिये सगुणोघं	327	तेवीसं पणवीसं	521
तित्थाहारा जुगवं	333	तसबंधेण हि संहदि	527
तिरिये ण तित्थसत्तं	345	तित्थेणाहारदुगं	529
तिरियाउगदेवाउग	366	तत्थासत्थो णारय	533
तित्थाहारचउक्कं	373	तत्थासत्थं एदि हु	534
तित्थण्णदराउदुगं	374	तत्थतणऽविरदसम्मो	539
तित्थाहारे सहियं	377	तेउदुगं तेरिच्छे	540
ते चोद्दसपरिहीणा	390	तिविहो दु ठाणबंधो	563
तेजदुगं वण्णचऊ	403	तदियो सणामसिद्धो	564
तिरिय दु जाइचउक्कं	414	तेवीसट्ठाणादो	566
तिरियेयारुव्वेल्लण	417	तित्थयरसत्तणारय	574
तिरियेयारं तीसे	421	तसमिस्से ताणि पुणो	590
ततोपल्लसलाय	432	तत्थासत्था णारय	600

तिदु इगि णउदी णउदी	609
तेउदुगे मणुवदुगं	616
तेरट्ठचऊ देसे	657
तिसु एक्केक्कं उदओ	664
तेरदु पुव्वं वंसा	667
तत्तो तियदुगमेक्कं	672
तिदुइगिबंधेक्कुदये	679
तेरणवे पुव्वंसे	682
तेणेवं तेरतिये	683
तिदुइगिबंधे अडचउ	684
तेणतिये तिदुबंधो	691
तेवीसादी बंधा	696
तियपणछवीसबंधे	742
ते णवसगसदरिजुदा	750
तीसे अट्ठवि बंधो	751
तेणउदीए बंधा	754
तेवीसबंधगे इगि	760
तेणुवरिमपंचुदये	761
तेण णभगि तीसुदये	763
तेणवदि सत्तसत्तं	764
तेणउदिछक्कसत्तं	766
तेवीसबंधठाणे	769
तेण दुणउदे णउदे	782
तीसुदयं विगितीसे	783
तिव्वकसाओ बहुमो	803
तत्थेव मूलभंगा	822
तत्थावरणजभावा	825
तेरिच्छा हु सरित्था	862
तग्गुणगारा कमसो	867
तेवत्तरिं सयाइं	868
तेवट्ठिं च सयाइं	923
तत्थंतिमच्छिदिस्स य	934
तत्तो उवरिमखंडा	962
तत्तो कमेण वड्ढदि	964

थ

थीणुदयेणुट्ठविदे	23
थीपुंसंढसरीरं	76
थिरजुम्मस्स थिराथिर	83
थिरसुहजससाददुगं	177
थीणति थीपुरिसूणा	290
थावरदुगसाहारण	295
थीपुरिसोदयचडिदे	388
थूले सोलसपहुदी	790

द

देहोदयेण सहिओ	3
देहे अविणाभावी	34
देहादी फासंता	47
दव्वे कम्मं दुविहं	54
देवे वा वेगुव्वे	118
दुक्खतिघादीणोघं	128
देवाउगं पमत्तो	136
देवा पुण एइंदिय	138
देसोत्ति हवे सम्मं	181
देसावरणण्णोण्ण	198
देवचउक्कं वज्जं	214
दव्वतियं हेट्ठुवरिम	245
दसचउरिगि सत्तरसं	263
देसे तदियकसाया तिरिया	267
देसे तदियकसाया णीचं	300
देवोघं वेगुव्वे	314
दुग्गदि दुस्सरसंहदि	317
देहादी फासंता	340
दुतिछस्सट्ठणवेक्कार	365
दुगछक्कस अट्ठं	376
देसतियेसुवि एवं	382
दुगछक्कतिण्णिवग्गे	383
देवचउक्काहारदु	400
दुग्गमणादावदुगं	405
दसवीसं एक्कारस	468
दसणव अट्ठ य सत्त य	475
दसणव णवादि चउतिय	480
दस णव पण्णरसाइं	518
देवेसु देवमणुवे	562
देवट्ठवीसणरदे	572
देवट्ठवीसबंधे	573
देवजुदेक्कट्ठाणे	575
देवाहारे सत्थं	602
देसणरे तिरिये	648
दसयचऊ पढमतियं	662
दसयादिसु बंधंसा	665
दसगुदये अडवीसति	685
दो छक्कट्ठचउक्कं	710
दोण्णि य सत्त य चोद्दस	790/2
दस अट्ठारस दसयं	792
दुसु दुसु देसे दोसुवि	835
दुविहा पुण पदभंगा	844
दइवमेव परं मण्णे	891

दव्वं ठिदिगुणहाणी	922
दव्वं समयपबद्धं	924
दोगुणहाणिपमाणं	928

ध

धुववड्ढीवड्ढंतो	253

प

पणमिय सिरसा णेमिं	1
पयडी सील सहावो	2
पडपडिहारसिमज्जा	21
पंचणव दोण्णि	22
पयलापयलुदयेण य	24
पयलुदयेण य जीवो	25
पंचणवदोण्णिछव्वी	35
पंचणव... उदयपयडीओ	36
पंचणव... सत्तपयडीओ	38
पढमादिया कसाया	45
पडपडि... आहारं देह	69
पडवीस (य) पहुदी दव्वं	70
पंचण्हं णिद्दाणं	72
पयडिट्ठिदिअणुभाग	89
पढमुवसमिये सम्मे	93
पुरिसं चदुसंजलणं	101
पुण्णिदरं विगिविगले	113
पंचिंदिएसु ओघं	114
पण्णारसमुणतीसं	117
पुव्वाणं कोडितिभा	158,917
परघाददुगं तेज दु	175
पुंबंधद्धा अंतो	205
पणविग्घे विवरीयं	206
परिणामजोगठाणा	220
पल्लासंखेज्जदिमा	224
पुण्णतसजोगठाणं	247
पण णव इगि सत्तरसं	264
पंचेक्कारसबावीस	277
पण णव इगि सत्त	281
पंचेक्कारस ... इगिणवदालं	282
पुंसंढूणित्थिजुदा	296
पुण्णेक्कारसजोगे	352
पण्णास बार छक्क	364
पण्णेकारं छक्ककदि	394
पण्णरकसायभयदुग	401
पढमकसायाणं च वि	448
पुव्विल्लेसुवि मिलिदे	479

पुरिसोदयेण चडिदे	484
पणबंधगम्मि बारस	485
पणदाल छस्सयाहिय	500
पंचसहस्सा बेसय	504
पढमतियं च य पढमं	510
पुरिसोदयेण चढिदे अंति	513
पंचविधचदुविधेसु य	517
पुण्णेण समं सव्वे	528
पज्जत्तगबिति चपमणु	531
पुढवी आऊ तेऊ	535
पंचक्खतसे सव्वं	545
पडिय मरियेक्कमेक्कू	582
परघादमंगपुण्णो	591
पल्लासंखेज्जदिमं	617
पणणव णव पण भंगा	646
पंचादि पंचबंधो	658
पढमं पढमति चउपण	666
पणदो पणगं पणचदु	704
पुढवीयादीपंचसु	717
पढमचऊसीदिचऊ	725
परिहारे बंधतियं	727
पुव्वं व ण चउवीसं	743
पणवीसे तिगिणउदे	777
पणवण्णा पण्णासा	789
पणचदु सुण्णं णवयं	790/1
पडिणीगमंतराए	800
पयडीएपणुकसाओ	806
पाणबधादीसु रदो	810
परिणामो दुट्ठाणो	832
पुणरवि देसोत्ति गुणो	838
पुव्वं पंचणियट्ठि	842
पत्तेयपदा मिच्छे	857
पिंडपदा पंचेव य	858
पत्तेयाणं उवरिं	859
पण्णरसोलट्ठारस	865
परसमयाणं वयणं	895
पचयधणस्साणयणे	904
पडिसमयधणेवि पदं	905
पचयस्स य संकलणं	931
पल्लासंखेज्जदिमा	954
पढमं पढमं खंडं	956

फ

फड्ढयगे एक्केक्के	225

फड्ढयसंखाहि गुणं 229

ब

बंधणपहुदि समण्णिय 82

बिदियगुणे अणथीणति 96

बारस य वेयणीणे 139

बासूप बासूअ वरट्ठिदीओ 148

बिदिये विदियणिसेगे 162,921

बादालं तु पसत्था 164

बहुभागे समभागो 195

बहुभागे सम... बंधा 200

बादरणिव्वत्तिवरं 235

बीइंदियपज्जत्त 251

बिदियादिसु छसु पुढ 293

बिगुणणवचारिअट्ठं 362

बिदिये तुरिये पणगे 371

बिदियस्सवि पणठाणे 380

बंधे संकामिज्जदि 410

बंधे अधापवत्तो 416

बंधुक्कटणकरणं 437

बंधुक्कटणकरणं सगसग 444

बावीसमेक्कवीसं... मोहस्य 463

बावीसमेक्कवीसं... ठाणाणि 464

बारससयतेसीदी 787

बिदिये बिगिपणगयदे 499

बाबत्तरि अप्पदरा 575

बासीदिं वज्जिता 624

बाणउदि णउदि सत्ता 626

बंधोदयकम्मंसा 630

बिदियावरणे णवबंध 631

बादालं पणुवीसं 650

बावीसं दसयचऊ 655

बंधपदे उदयंसा 660

बावीसयादिबंधे 661

बंधुदये सत्तपदं 673

बावीसेण णिरुद्धे 674

बावीसे अडवीसे 680

बावीसबंध चदुतिदु 686

बंधा तियपणछण्णव 706

बाणउदी णउदिचउ 707

बंधतियं अडवीस दु 721

बाणउदि णउदिसत्तं मिच्छे 736

बाणउदी णउदिचऊ 749

बाणउदीए बंधा	755
बाणउदि णउदि सत्तं एवं	762
बासीदे इगिचउपण	773
बारचउ ति दुगमेक्कं	836
बारट्ठट्ठछवीसं	850
बादालं बेण्णिसया	853
बावत्तरि तिसहस्सा	900
बिदियं बिदियं खंडं	957

भ

भेदे छादालसयं	37
भूदं तु चुदं चइदं	56
भत्तपइण्णा इंगिणि	59
भत्तपइण्णाइविही	60
भवियंति भवियकाले	62
भिण्णमुहुत्तो णर	142
भोगं व सुरे णरचउ	304
भव्विदरुबसमवेदग	328
भंगा एक्केक्का पुण	387
भेदेण अवत्तव्वा	474
भयसहियं च जुगुच्छा स	477
भूबादरपज्जत्ते	524
भवणतियाणं एवं	543
भव्वे सव्वमभव्वे	550
भुजगारा अप्पदरा अवट्ठि...	554
भूबादरतेवीसं	565
भोगे सुरट्ठवीसं	567
भुजगारप्पदराणं	571
भुजगारा अप्पदरा हवंति	580
भुजगारे अप्पदरे	581
भोगभुमा देवाउं	640
भव्वे सव्वमभव्वे	732
भयदुगरहियं पढमं	754
भूदाणुकंपवदजोग	801
भव्विदराणण्णदरं	856

म

मूलुण्हपहा अग्गी	33
मूलुत्तरपयडीणं	67
मूलुत्तर... णामादिचउव्विहं	68
मिच्छत्तहुंडसंढा	95
मरणूणम्मि णियट्टी	99
मिस्साविरदे उच्चं	107

मज्झे थोवसलागा	149	मिच्छे सासण अयदे	495
मणुओरालदुवज्जं	166	मिच्छचउक्के छक्कं	503
मिच्छस्संतिमणवयं	168	मिस्साविरदमणुस्सट्ठाणे	537
मोहे मिच्छत्तादी	202	मिच्छस्स ठाणभंगा	568
मज्झे जीवा बहुगा	244	मिस्सम्मि तिअंगाणं	589
मिच्छे मिच्छादावं	265	मूलुत्तरपयडीणं बंधो	627
मिच्छमणंतं मिस्सं	292	मिस्से अपुव्वजुगले	629
मणुवे ओघो थावर	298	मिच्छादिगोदभंगा	638
मणुसिणिएत्थीसहिदा	301	मोहस्स य बंधोदय	652
मिच्छमपुण्णं छेदो	299	मणि वचिबंधुदयंसा	718
मणुसोघं वा भोगे	302	मिच्छत्तं अविरमणं	786
मूलोघं पुंवेदे	320	मिच्छे पण मिच्छत्तं	790/3
मिस्सा विरतमणु	537	मिच्छत्ताणण्णदरं	795
मिस्साहारस्सयया	328/1,560	मिच्छो हु महारंभो	804
मिच्छे सम्मिस्साणं	412	मणवयणकायवक्को	808
मिच्छूणिगिवीससयं	427	मिच्छतिये तिचउक्के	821
मिच्छतियसोलसाणं	447	मिच्छदुगे मिस्सतिये	824
मिच्छस्स य मिच्छोत्ति य	449	मिच्छदुगयदचउक्के	833
मिस्सूणपमत्तंते	456	मिच्छादिठाणभंगा	840
मिच्छादुवसंतोत्ति य	462	मिच्छतिये मिस्सपदा	846
मिच्छं मिस्सं सगुणे	476	मिच्छे अट्ठुदयपदा	847
मिच्छदुगे मिस्सतिए	491	मिच्छे परिणामपदा	848

मिच्छादीणं दुतिदुसु	864
मिच्छाइट्ठिप्पहुदिं	866
मणवयणकायदाणग	888
मिच्छे वग्गसलाय	925
मिच्छत्तस्स य उत्ता	933

र

रिणमंगोवंगतसं	307
रागजमं तु पमत्ते	826
रूवहियडवीससया	841
रूऊणण्णोण्णब्भ	929
रूऊणद्धाणद्धे	930
रसबंधज्झवसाण	963

ल

लोहस्स सुहुमसत्तरसा	140
लद्धीणिव्वत्तीणं	240
लघुकरणं इच्छंतो	570
लोहेक्कुदओ सुहुमे	659
लिंगकसाया लेस्सा	828
लोगाणमसंखपमा	952
लोगाणमसंखसिदा	955

व

वेयणियगोदघादीणे	49
विसवेयणरत्तक्खय	57
विरियस्स य णोकम्मं	85
वण्णचउक्कमसत्थं	170
वेदतियकोहमाणं	269
वेगुव्वतेजथिरसुह	291
वेगुव्वं वा मिस्से	315
वेगुव्वछ पणसंहदि	331
वेदादाहारोत्ति य	354
वेगुव्वअट्ठरहिदे	369
वरइंदणंदिगुरुणो	396
वीसण्हं विज्झादं	423
वज्जं पुंसंजलणंति	428
विवरीयेणप्पदरा	569
विग्गहकम्मसरीरे	583
वीसं इगिचउवीसं	592
वीसदु चउवीसचऊ	597
वीसादीणं भंगा	603
वीसुत्तर छच्च सया	604
वेदगजोग्गे काले	614
वेयणिये अडभंगा	651

वेगुव्वे तम्मिस्से	720
वेदकसाये सव्वं	722
वीसादिसु बंधंसा	746
वीसुदये बंधो ण हि	747
वीसं छडणववीसं	759
वामे दुसु दुसु दुसु तिसु	837
वामे चउदस दुसु दस	851
वग्गसलायेणवहिद	926
वज्जयणं जिणभवणं	970

स

सिद्धाणंतिमभागं	4
संताणकमेणागय	13
सेवट्ठेण य गम्मइ	29
सण्णी छस्संहडणो	31
सादं तिण्णेवाऊ	41
समचउरवज्जरिसहं	42
सरिसासरिसे दव्वे	53
सयलंगेक्कंगेक्कं	88
सादिअणादी धुव	90
सम्मेव तित्थबंधो	92
सोलसपणवीसणभं	94
सत्तरसेकग्गसयं	103
सामण्णतिरियपंचि.	109
सुक्के सदरचउक्कं	121
सादिअणादीधुव... तदिओ	122
सादी अबंधबंधे	123
सेसे तित्थाहारं	125
संठाणसंहदीणं	129
सुरणिरयाऊणोघं	133
सव्वट्ठिदीणमुक्कस्सओ	134
सव्वुक्कस्सठिदीणं	135
सेसाणं पज्जत्तो	143
सण्णिअसण्णिचउक्के	146
सण्णिस्स दु हेट्ठादो	150
सत्तरस पंच तित्था	151
संजलणसुहुमचोद्दस	153
सव्वाओ दु ठिदीओ	154
सुहपयडीण विसोही	163
सुरणिरये उज्जोवो	173
सोहम्मोति य तावं	174
सम्मो वा मिच्छो वा	176
सत्थाणं धुवियाणम	179
सत्ती य लदा दारू	180

सगसगखेत्तगयस्स य	189	सरगदि दु जसादेज्जं	297
सगसगसादिविहीणे	190	साणे तेसिं छेदो	313
सयलरसरूपगंधे	191	साणे थीवेदछिदी	319
सुहदुक्खणिमित्तादो	193	सण्णाणपंचयादी	324
सेसाणं पयडीणं	194	साणे सुराउ सुरगदि	326
सव्वावरणं दव्वं अंणत	197	सेसाणं सगुणोघं	330
सव्वावरणं दव्वं विभंज	199	सोलट्ठेक्किगिछक्कं	337
संजलणभागबहुभागद्धं	203	संढित्थिछक्कसाया	339
सत्तर सुहुमसरागे	212	सोमे तिहुवणमहियो	357
सुहुमणिगोद अपज्ज	215	सव्वं तिगेग सव्वं	360
सगपज्जत्तीपुण्णे	221	सासणमिस्से देसे	361
सव्वे जीवपदेसे	228	सत्ततिगं आसाणे	372
सरिसायामेणुवरिं	231	साणे पण इगि भंगा	375
सुहुमगलद्धिजहण्णं	233	सुरणिरयाऊ तित्थं	402
सण्णिस्सुववादवरं	237	सत्तेताल धुवावि य	404
सेढियसंखेज्जदिमा	252	सुरणर तिरियोरालिय	406
सुहुमणिगोदअपज्जत्त	256	सम्मं मिच्छं मिस्सं	411
सेढियसंखेज्जदिमा जो	258	सुहुमस्स बंधघादी	419
समयट्ठिदिगो बंधो	274	सत्थगदी तसदसयं	420
सत्तरसेक्कारखचदु	276	सत्तण्हं गुणसंकम	422
सत्तरसेक्कारखतिय	282	सम्मविहीणुव्वेल्ले	424
संखाउगणरतिरिये	286	सम्मत्तूणुव्वेल्लण	426

सव्वस्सेक्कं रूवं	430	सम्मत्तं देसजमं	618
संकमणाकरणूणा	441	सुरणरसम्मे पढमो	620
संतोत्ति अट्ठसत्ता	457	सीदादि चउट्ठाणा	622
सगसंभवधुवबंधे	466	समविसमट्ठाणाणि य	625
सामण्णं अवत्तव्वो	470	सादासादेक्कदरं	633
सत्तावीसहियसयं	471	सुरणिरया णरतिरियं	639
सासण अयदपमत्ते	496	सगसगगदीणमाउं	641
सामण्णतित्थकेवलि	520	सव्वाउबंधभंगे	647
संठाणे संहडणे	532	सत्तरसं णवयतियं	656
सण्णिस्स मणुस्सस्स य	536	सगचउ पुव्ववंसा	663
सण्णीवि तहा सेसे	541	सत्तपदे बंधुदया	669
सण्णाणे चरिमपणं	547	सव्वं सयलं पढमं	670
सासणपमत्तवज्जं	557	सत्तरसादि अडादी	671
सव्वपरट्ठाणेण य	579	सत्तरसे अडचदुवी	681
सव्वापज्जत्ताणं	585	सत्तुदये अडवीसे	687
सामण्णसयलवियलवि	594	सत्तेव अपज्जत्ता	705
सुरणिरयविसेसणरे	596	सण्णिम्मि सव्वबंधो	709
संठाणे संहडणे	599	सत्ता बाणउतितियं	714
सण्णिम्मि मणुस्सम्मि य	601	सव्वं तिवीसछक्कं	719
सामण्णकेवलिस्स	606	सत्तं तिण्णउदिपहुदी	748
सव्वं तित्थाहारुभऊणं	610	सत्तं दुणउदिणउदी	752
सत्थत्तादाहारं	613	सत्ते बंधुदया चदु	753

सीदादि चउसु बंधा	758	हस्सरदि उच्चपुरिसे	132
सगवीसचउक्कुदये	765	हारदुहीणा एवं	303
सगवीसे तिगिणउदे	779	हारदु सम्मं मिस्सं	350
सुण्णं पमादरहिदे	790/5	हस्सरदि पुरिसगोददु	407
सुहुमे सुहुमो लोहो	790/6	हारं अधापवत्तं	431
सच्चाणुभयं वयणं	790/7	होंति अणियट्टिणो ते	912
सोलस बिसदं कमसो	798	हेट्ठिमखंडुक्कस्सं	959
सत्तरसं दसगुणिदं	854		
सिद्धेसु सुद्धभंगा	874		
सच्छंददिट्ठीहिं वियप्पियाणि	889		
संजोगमेवेति वदंति तण्णा	892		
सइउट्ठिया पसिद्धी	893		
सिद्धे विसुद्धणिलये	913		
सव्वसलायाणं	927		
सव्वासिं पयडीणं	932		
समयपबद्धपमाणं	942		
सत्तं समयपबद्धं	943		
संखेज्जसहस्साणिव	946		
सव्वुवरि मोहणीये	948		
सिद्धंतुदयतडुग्गय	967		

ह

सिरि णेमिचंदसिद्धंतचक्कवट्टिविरइयो

गोम्मटसारो (कम्मकंडं)

श्रीनेमिचन्द्रसिद्धान्तचक्रवर्तिविरचितः

गोम्मटसारः (कर्मकाण्डम्)

संस्कृतच्छाया-सहितः

(with Sanskrit randring

the **Gommaṭasāra – karmakāṉda** of Nemicandra)

पणमिय सिरसा णेमिं गुणरयणविभूसणं महावीरं।

सम्मत्तरयणणिलयं पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं॥1॥

(प्रणम्य शिरसा नेमिं गुणरत्नविभूषणं महावीरम्।

सम्यक्त्वरत्ननिलयं प्रकृतिसमुत्कीर्तनं वक्ष्यामि॥1॥)

1- प्रकृतिसमुत्कीर्त्तनाधिकार

पयडी सील सहावो जीवंगाणं अणाइसंबंधो।

कणयोवले मलं वा ताणत्थित्तं सयं सिद्धं॥2॥

(प्रकृतिः शीलं स्वभावः जीवाङ्गयोरनादिसम्बन्धः।

कनकोपले मलं वा तयोरस्तित्वं स्वयं सिद्धम्॥2॥)

देहोदयेण सहिओ जीवो आहरदि कम्म णोकम्मं।

पडिसमयं सव्वंगं तत्तायसपिंडओव्व जलं॥3॥

(देहोदयेन सहितो जीव आहरति कर्म नोकर्म।

प्रतिसमयं सर्वाङ्गं तप्तायः पिंडमिव जलम्॥3॥)

सिद्धाणंतिमभागं अभव्वसिद्धादणंतगुणमेव।

समयपबद्धं बंधदि जोगवसादो दु विसरित्थं॥4॥

(सिद्धानन्तिमभागं अभव्यसिद्धादनन्तगुणमेव।

समयप्रबद्धं बध्नाति योगवशात्तु विसदृशम्॥4॥)

जीरदि समयपबद्धं पओगदो णेगसमयबद्धं वा।

गुणहाणीण दिवड्ढं समयपबद्धं हवे सत्तं॥5॥

(जीर्यते समयप्रबद्धं प्रयोगतः अनेकसमयबद्धं वा।

गुणहानीनां द्वयर्द्धं समयप्रबद्धं भवेत् सत्त्वम्॥5॥)

कम्मत्तणेण एक्कं दव्वं भावोत्ति होदि दुविहं तु।

पोग्गलपिंडो दव्वं तस्सत्ती भावकम्मं तु॥6॥

(कर्मत्वेन एकं द्रव्यं भाव इति भवति द्विविधं तु।

पुद्गलपिण्डो द्रव्यं तच्छक्तिः भावकर्म तु॥6॥)

तं पुण अट्ठविहं वा अडदालसयं असंखलोगं वा।

ताणं पुण घादित्ति अ-घादित्ति य होंति सण्णाओ॥7॥

(तत् पुनरष्टविधं वा अष्टचत्वारिंशच्छतमसंख्यलोकं वा।

तेषां पुनः घातीति अघातीति च भवतः संज्ञे॥7॥)

णाणस्स दंसणस्स य आवरणं वेयणीयमोहणियं।

आउगणामं गोदंतरायमिदि अट्ठ पयडीओ॥8॥

(ज्ञानस्य दर्शनस्य च आवरणं वेदनीयमोहनीयम्।

आयुष्कनाम गोत्रान्तरायमिति अष्ट प्रकृतयः॥8॥)

आवरणमोहविग्घं घादी जीवगुणघादणत्तादो।

आउगणामं गोदं वेयणियं तह अघादित्ति॥9॥

(आवरणमोहविघ्नं घाति जीवगुणघातनत्वात्।

आयुष्कनाम गोत्रं वेदनीयं तथा अघातीति॥9॥)

केवलणाणं दंसणमणंतविरियं च खयियसम्मं च।

खयियगुणे मदियादी खओवसमिए य घादी दु॥10॥

(केवलज्ञानं दर्शनमनन्तवीर्यं च क्षायिकसम्यक्त्वं च।

क्षायिकगुणान् मत्यादीन् क्षायोपशमिकांश्च घातीनि तु॥10॥)

कम्मकयमोहवड्ढियसंसारम्हि य अणादिजुत्तम्हि।

जीवस्स अवट्ठाणं करेदि आऊ हलिव्व णरं॥11॥

(कर्मकृतमोहवर्धितसंसारे च अनादियुक्ते।

जीवस्यावस्थानं करोति आयुः हलीव नरम्॥11॥)

गदिआदि जीवभेदं देहादी पोग्गलाण भेदं च।

गदियंतरपरिणमनं करेदि णामं अणेयविहं॥12॥

(गत्यादि जीवभेदं देहादि पुद्गलानां भेदं च।

गत्यन्तरपरिणमनं करोति नाम अनेकविधम्॥12॥)

संताणकमेणागयजीवायरणस्स गोदमिदि सण्णा।

उच्चं णीचं चरणं उच्चं णीचं हवे गोदं॥13॥

(संतानक्रमेणागतजीवाचरणस्य गोत्रमिति संज्ञा।

उच्चं नीचं चरणं उच्चैर्नीचैर्भवेत् गोत्रम्॥13॥)

अक्खाणं अणुभवणं वेयणियं सुहसरूवयं सादं।

दुक्खसरूवमसादं तं वेदयदीदि वेदणियं॥14॥

(अक्ष्णामनुभवनं वेदनीयं सुखस्वरूपं सातम्।

दुःखस्वरूपमसातं तद्वेदयतीति वेदनीयम्॥14॥)

अत्थं देक्खिय जाणदि पच्छा सद्दहदि सत्तभंगीहिं।

इदि दंसणं च णाणं सम्मत्तं होंति जीवगुणा॥15॥

(अर्थं दृष्ट्वा जानाति पश्चात् श्रद्दधाति सप्तभङ्गीभिः।

इति दर्शनं च ज्ञानं सम्यक्त्वं भवन्ति जीवगुणाः॥15॥)

अब्भरहिदादु पुव्वं णाणं तत्तो हि दंसणं होदि।

सम्मत्तमदो विरियं जीवाजीवगदमिदि चरिमे॥16॥

(अभ्यर्हितत्त्वात् तु पूर्वं ज्ञानं ततो हि दर्शनं भवति।

सम्यक्त्वमतो वीर्यं जीवाजीवगतमिति चरमे॥16॥)

घादीवि अघादिं वा णिस्सेसं घादणे असक्कादो।

णामतियणिमित्तादो विग्घं पडिदं अघादिचरिमम्हि॥17॥

(घात्यपि अघातीव निःशेषं घातने अशक्यात्।

नामत्रयनिमित्ताद् विघ्नं पठितमघातिचरमे॥17॥)

आउबलेण अवट्ठिदि भवस्स इदि णाममाउपुव्वं तु।

भवमस्सिय णीचुच्चं इदि गोदं णामपुव्वं तु॥18॥

(आयुर्बलेन अवस्थितिः भवस्य इति नाम आयुःपूर्वं तु।
भवमाश्रित्य नीचोच्चमिति गोत्रं नामपूर्व्वं तु॥18॥)

घादिंव वेयणीयं मोहस्स बलेण घाददे जीवं।
इदि घादीणं मज्झे मोहस्सादिम्हि पढिदं तु॥19॥
(घातिवत् वेदनीयं मोहस्य बलेन घातयति जीवम्।
इति घातीनां मध्ये मोहस्यादौ पठितं तु॥19॥)

णाणस्य दंसणस्स य आवरणं वेयणीयमोहणियं।
आउगणामं गोदंतरायमिदि पढिदमिदि सिद्धं॥20॥
(ज्ञानस्य दर्शनस्य चावरणं वेदनीयमोहनीयम्।
आयुष्कनाम गोत्रान्तरायमिति पठितमिति सिद्धम्॥20॥)

पडपडिहारसिमज्जाहलिचित्तकुलालभंडयारीणं।
जह एदेसिं भावा तहवि य कम्मा मुणेयव्वा॥21॥
(पटप्रतीहारासिमद्यहलिचित्रकुलालभाण्डागारिकाणाम्।
यथा एतेषां भावा तथैव च कर्माणि मन्तव्यानि॥21॥)

पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण तेणउदी।
तेउत्तरं सयं वा दुगपणगं उत्तरा होंति॥22॥
(पञ्च नव द्वौ अष्टाविंशतिः चत्वारः क्रमेण त्रिनवतिः।
त्र्युत्तरं शतं वा द्विकपञ्चकमुत्तरा भवन्ति॥22॥)

थीणुदयेणुट्ठविदे सोवदि कम्मं करेदि जप्पदि य।

णिद्दाणिद्दुदयेण य ण दिट्ठिमुग्घादिदुं सक्को॥23॥

(स्त्यानगृद्ध्युदयेन उत्थापिते स्वपिति कर्म करोति जल्पति च।

निद्रानिद्रोदयेन च न दृष्टिमुद्घाटयितुं शक्यः॥23॥)

पयलापयलुदयेण य वहेदि लाला चलंति अंगाइं।

णिद्दुदये गच्छंतो ठाइ पुणो वइसइ पडेई॥24॥

(प्रचलाप्रचलोदयेन च वहति लाला चलन्ति अङ्गानि।

निद्रोदये गच्छन् तिष्ठति पुनः वसति पतति॥24॥)

पयलुदयेण य जीवो ईसुम्मीलिय सुवेइ सुत्तोवि।

ईसं ईसं जाणदि मुहुं मुहुं सोवदे मंद॥25॥

(प्रचलोदयेन च जीव ईषदुन्मील्य स्वपिति सुप्तोपि।

ईषदीषज्जानाति मुहुर्मुहुः स्वपिति मन्दम्॥25॥)

जंतेण कोद्दवं वा पढमुवसमसम्मभावजंतेण।

मिच्छं दव्वं तु तिधा असंखगुणहीणदव्वकमा॥26॥

(यन्त्रेण कोद्रवं वा प्रथमोपशमसम्यक्त्वभावयन्त्रेण।

मिथ्यात्वं द्रव्यं तु त्रिधा असंख्यगुणहीनद्रव्यक्रमात्॥26॥)

तेजाकम्मेहिं तिए तेजा कम्मेण कम्मणा कम्मं।

कयसंजोगे चदुचदुचदुदुग एक्कं च पयडीओ॥27॥

(तैजसकार्म्मणाभ्यां त्रये तैजसं कार्म्मणेन कार्म्मणेन कार्म्मणं।

कृतसंयोगे चतुश्चतुश्चतुर्द्विकमेकं च प्रकृतयः॥27॥)

णलया बाहू य तहा णियंबपुट्ठी उरो य सीसो य।

अट्ठेव दु अंगाइं देहे सेसा उवंगाइं॥28॥

(नलकौ बाहू च तथा नितम्बपृष्ठे उरश्च शीर्षं च।

अष्टैव तु अङ्गानि देहे शेषाणि उपाङ्गानि॥28॥)

सेवट्टेण य गम्मइ आदीदो चदुसु कप्पजुगलोत्ति।

तत्तो दुजुगलजुगले खीलियणारायणद्धोत्ति॥29॥

(सृपाटेन च गम्यते आदितः चतुर्षु कल्पयुगल इति।

ततः द्वियुगलयुगले कीलितनाराचार्द्ध इति॥29॥)

णवगेविज्जाणुद्दिसणुत्तरवासीसु जांति ते णियमा।

तिदुगेगे संघडणे णारायणमादिगे कमसो॥30॥

(नवग्रैवेयिकानुदिशानुत्तरवासिषु यान्ति ते नियमात्।

त्रिद्विकैकेन संहननेन नाराचादिकेन क्रमशः॥30॥)

सण्णी छस्संहडणो वज्जदि मेघं तदो परं चापि।

सेवट्टादीरहिदो पण पणचदुरेगसंहडणो॥31॥

(संज्ञी षट्संहननो व्रजति मेघां ततः परं चापि।

सृपाटादिरहितः पञ्चमीं पञ्चचतुरेकसंहननः॥31॥)

अंतिमतियसंहडणस्सुदओ पुण कम्मभूमिमहिलाणं।

आदिमतिगसंहडणं णत्थित्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥32॥

(अन्तिमत्रयसंहननस्योदयः पुनः कर्मभूमिमहिलानाम्।

आदिमत्रिकसंहननं नास्तीति जिनैर्निर्दिष्टम्॥32॥)

मूलुण्हपहा अग्गी आदावो होदि उण्हसहियपहा।

आइच्चे तेरिच्छे उण्हुणपहा हु उज्जोओ॥33॥

(मूलोष्णप्रभाः अग्निः आतापो भवति उष्णसहितप्रभः।

आदित्ये तिरश्चि उष्णोनप्रभा हि उद्योतः॥33॥)

देहे अविणाभावी बंधणसंघाद इदि अबंधुदया।

वण्णचउक्केऽभिण्णे गहिदे चत्तारि बंधुदये॥34॥

(देहे अविनाभाविनौ बंधनसंघातौ इति अबन्धोदयौ।

वर्णचतुष्केऽभिन्ने ग्रहीते चतस्रः बन्धोदययोः॥34॥)

पंच णव दोण्णि छव्वीसमवि य चउरो कमेण सत्तट्ठी।

दोण्णि य पंच य भणिया एदाओ बंधपयडीओ॥35॥

(पञ्च नव द्वौ षड्विंशतिरपि च चतस्रः क्रमेण सप्तषष्टिः।

द्वौ च पञ्च च भणिता एता बन्धप्रकृतयः॥35॥)

पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण सत्तट्ठी।

दोण्णि य पंच य भणिया एदाओ उदयपयडीओ॥36॥

(पञ्च नव द्वौ अष्टाविंशतिः चतस्रः क्रमेण सप्तषष्टिः।

द्वौ च पञ्च च भणिता एता उदयप्रकृतयः॥36॥)

भेदे छादालसयं इदरे बंधे हवंति वीससयं।

भेदे सव्वे उदये बावीससयं अभेदम्हि॥37॥

(भेदे षट्चत्वारिंशच्छतमितरे बन्धे भवन्ति विंशशतम्।
भेदे सर्वे उदये द्वाविंशशतमभेदे॥37॥)

पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण तेणउदी।
दोण्णि य पंच य भणिया एदाओ सत्तपयडीओ॥38॥
(पञ्च नव द्वौ अष्टाविंशतिः चत्वारः क्रमेण त्रिनवतिः।
द्वौ च पञ्च च भणिता एताः सत्त्वप्रकृतयः॥38॥)

केवलणाणावरणं दंसणछक्कं कसायबारसयं।
मिच्छं च सव्वघादी सम्मामिच्छं अबंधम्हि॥39॥
(केवलज्ञानावरणं दर्शनषट्कं कषायद्वादशकम्।
मिथ्यात्वं च सर्वघातीनि सम्यग्मिथ्यात्वमबन्धे॥39॥)

णाणावरणचउक्कं तिदंसणं सम्मगं च संजलणं।
णव णोकसाय विग्घं छव्वीसा देसघादीओ॥40॥
(ज्ञानावरणचतुष्कं त्रिदर्शनं सम्यक्त्वं च संज्वलनम्।
नव नोकषाया विघ्नं षड्विंशतिः देशघातीनि॥40॥)

सादं तिण्णेवाऊ उच्चं णरसुरदुगं च पंचिंदी।
देहा बंधणसंघादंगोवंगाइं वण्णचओ॥41॥
समचउरवज्जरिसहं उवघादूणगुरुछक्क सग्गमणं।
तसबारसट्ठसट्ठो बादालमभेददो सत्था॥42॥ जुम्मं।
(सातं त्रीण्येवायूंषि उच्चं नरसुरद्विकं च पञ्चेन्द्रियम्।

देहा बन्धनसंघाताङ्गोपाङ्गानि वर्णचतुष्कम्॥41॥

समचतुरस्रवज्रर्षभमुपघातोनागुरुषट्कं सद्गमनम्।

त्रसद्वादशाष्टषष्टिः द्वाचत्वारिंशदभेदतः शस्ताः॥42॥ युग्मम्।)

घादी णीचमसादं णिरयाऊ णिरयतिरियदुग जादी-

संठाणसंहदीणं चदुपणपणगं च वण्णचओ॥43॥

ऽवघादमसग्गमणं थावरदसयं च अप्पसत्था हु।

बंधुदयं पडि भेदे अडणऽदि सयं दुचदुरसीदिदरे॥44॥ जुम्मं।

(घातीनि नीचमसातं निरयायुः निरयतिर्यग्द्विकं जाति-।

संस्थानसंहतीनां चतुःपञ्चपञ्चकं च वर्णचतुष्कम्॥43॥

ऽपघातमसद्गमनं स्थावरदशकं च अप्रशस्ता हि।

बन्धोदयं प्रति भेदे अष्टनवतिः शतं द्वि-

चतुरशीतिरितरे॥44॥युग्मम्।)

पढमादिया कसाया सम्मत्तं देससयलचारित्तं।

जहखादं घादंति य गुणणामा होंति सेसावि॥45॥

(प्रथमादिकाः कषायाः सम्यक्त्वं देशसकलचारित्रम्।

यथाख्यातं घातयन्ति च गुणनामानो भवन्ति शेषा अपि॥45॥)

अंतोमुहुत्त पक्खं छम्मासं संखऽसंखणंतभवं।

संजलणमादियाणं वासणकालो दु णियमेण॥46॥

(अन्तर्मुहूर्तः पक्षः षण्मासाः संख्यासंख्यानन्तभवाः।

संज्वलनाद्यानां वासनाकालः तु नियमेन॥46॥)

देहादी फासंता पण्णासा णिमिणपावजुगलं च।

थिरसुहपत्तेयदुगं अगुरुतियं पोग्गलविवाई॥47॥

(देहादयः स्पर्शान्ताः पञ्चाशत् निर्माणातापयुगलं च।

स्थिरशुभप्रत्येकद्विकमगुरुत्रयं पुद्गलविपाकिन्यः॥47॥)

आऊणि भवविवाई खेत्तविवाई य आणुपुव्वीओ।

अट्ठत्तरि अवसेसा जीवविवाई मुणेयव्वा॥48॥

(आयूंषि भवविपाकीनि क्षेत्रविपाकीनि च आनुपूर्व्याणि।

अष्टसप्ततिरवशिष्टा जीवविपाकिन्यः मन्तव्याः॥48॥)

वेदणियगोदघादीणेकावण्णं तु णामपयडीणं।

सत्तावीसं चेदे अट्ठत्तरि जीवविवाई॥49॥

(वेदनीयगोत्रघातिनामेकपञ्चाशत्तु नामप्रकृतीनाम्।

सप्तविंशतिश्चैता अष्टसप्ततिः जीवविपाकिन्यः॥49॥)

तित्थयरं उस्सासं बादरपज्जत्तसुस्सरादेज्जं।

जसतसविहायसुभगदु चउगइ पणजाइ सगवीसं॥50॥

(तीर्थकरमुच्छ्वासं बादरपर्याप्तसुस्वरादेयम्।

यशस्त्रसविहायः शुभगद्वयं चतुर्गतयः पञ्चजातयः

सप्तविंशतिः॥50॥)

गदि जादी उस्सासं विहायगदि तसतियाण जुगलं च।

सुभगादिचउज्जुगलं तित्थयरं चेदि सगवीसं॥51॥

(गतिः जातिः उच्छ्वास विहायोगतिः त्रसत्रयाणां युगलं च।

सुभगादिचतुर्युगलं तीर्थंकरं चेति सप्तविंशतिः॥51॥)

णामं ठवणा दवियं भावोत्ति चउव्विहं हवे कम्मं।

पयडी पावं कम्मं मलंति सण्णा हु णाममलं॥52॥

(नाम स्थापना द्रव्यं भाव इति चतुर्विधं भवेत् कर्म।

प्रकृतिः पापं कर्म मलमिति संज्ञा हि नाममलम्॥52॥)

सरिसासरिसे दव्वे मदिणा जीवट्ठियं खु जं कम्मं।

तं एदत्ति पदिट्ठा ठवणा तं ठावणाकम्मं॥53॥

(सदृशासदृशे द्रव्ये मत्या जीवस्थितं खलु यत्कर्म।

तदेतदिति प्रतिष्ठा स्थापना तत्स्थापनाकर्म॥53॥)

दव्वे कम्मं दुविहं आगमणोआगमंति तप्पढमं।

कम्मागमपरिजाणुगजीवो उवजोगपरिहीणो॥54॥

(द्रव्ये कर्म द्विविधमागमनोआगममिति तत्प्रथमम्।

कर्मागमपरिज्ञायकजीव उपयोगपरिहीनः॥54॥)

जाणुगसरीर भवियं तव्वदिरित्तं तु होदि जं बिदियं।

तत्थ सरीरं तिविहं तियकालगयंति दो सुगमा॥55॥

(ज्ञायकशरीरं भावि तद्व्यतिरिक्तं तु भवति यद्द्वितीयम्।

तत्र शरीरं त्रिविधं त्रयकालगतमिति द्वे सुगमे॥55॥)

भूदं तु चुदं चइदं चदंति तेधा चुदं सपाकेण।

पडिदं कदलीघादपरिच्चागेणूणयं होदि॥56॥

(भूतं तु च्युतं च्यावितं त्यक्तमिति त्रेधा च्युतं स्वपाकेन।

पतितं कदलीघातपरित्यागेनोनं भवति॥56॥)

विसवेयणरत्तक्खयभयसत्थग्गहणसंकिलेसेहिं।

उस्सासाहाराणं णिरोहदो छिज्जदे आऊ॥57॥

(विषवेदनारक्तक्षयभयशस्त्रघातसंक्लेशैः।

उच्छ्वासाहारयोः निरोधतः छिद्यते आयुः॥57॥)

कदलीघादसमेदं चागविहीणं तु चइदमिदि होदि।

घादेण अघादेण व पडिदं चागेण चत्तमिदि॥58॥

(कदलीघातसमेतं त्यागविहीनं च्यावितमिति भवति।

घातेन अघातेन वा पतितं त्यागेन त्यक्तमिति॥58॥)

भत्तपइण्णाइंगिणिपाउग्गविधीहिं चत्तमिदि तिविहं।

भत्तपइण्णा तिविहा जहण्णमज्झिमवरा य तहा॥59॥

(भक्तप्रतिज्ञाइङ्गिनीप्रायोग्यविधिभिः त्यक्तमिति त्रिविधम्।

भक्तप्रतिज्ञा त्रिविधा जघन्यमध्यमवरा च तथा॥59॥)

भत्तपइण्णाइविहि जहण्णमंतोमुहुत्तयं होदि।

बारसवरिसा जेट्ठा तम्मज्झे होदि मज्झिमया॥60॥

(भक्तप्रतिज्ञादिविधिः जघन्योऽन्तर्मुहूर्तको भवति।

द्वादशवर्षो ज्येष्ठः तन्मध्ये भवति मध्यमकः॥60॥)

अप्पोवयारवेक्खं परोवयारूणमिंगिणीमरणं।

सपरोवयारहीणं मरणं पाओवगमणमिदि॥61॥

(आत्मोपकारापेक्षं परोपकारोनमिङ्गिनीमरणम्।

स्वपरोपकारहीनं मरणं प्रायोपगमनमिति॥61॥)

भवियंति भवियकाले कम्मागमजाणगो स जो जीवो।

जाणुगसरीरभवियं एवं होदित्ति णिद्दिट्ठं॥62॥

(भविष्यति भाविकाले कर्मागमज्ञायकः स यो जीवः।

ज्ञायकशरीरभावी एवं भवतीति निर्दिष्टम्॥62॥)

तव्वदिरित्तं दुविहं कम्मं णोकम्ममिदि तहिं कम्मं।

कम्मसरूवेणागय कम्मं दव्वं हवे णियमा॥63॥

(तद्व्यतिरिक्तं द्विविधं कर्म नोकर्मेति तस्मिन् कर्म।

कर्मस्वरूपेणागतं कर्म द्रव्यं भवेत् नियमात्॥63॥)

कम्मद्दव्वादण्णं दव्वं णोकम्मदव्वमिदि होदि।

भावे कम्मं दुविहं आगमणोआगमंति हवे॥64॥

(कर्मद्रव्यादन्यद्द्रव्यं नोकर्मद्रव्यमिति भवति।

भावे कर्म द्विविधमागमनोआगममिति भवेत्॥64॥)

कम्मागमपरिजाणगजीवो कम्मागमम्हि उवजुत्तो।

भावागमकम्मोत्ति य तस्स य सण्णा हवे णियमा॥65॥

(कर्मागमपरिज्ञायकजीवः कर्मागमे उपयुक्तः।

भावागमकर्मेति च तस्य च संज्ञा भवेन्नियमात्॥65॥)

णोआगमभावो पुण कम्मफलं भुंजमाणगो जीवो।

इदि सामण्णं कम्मं चउव्विहं होदि णियमेण॥66॥

(नोआगमभावः पुनः कर्मफलं भुञ्जमानकः जीवः।

इति सामान्यं कर्म चतुर्विधं भवति नियमेन॥66॥)

मूलुत्तरपयडीणं णामादी एवमेव णवरिं तु।

सगणामेण य णामं ठवणा दवियं हवे भावो॥67॥

(मूलोत्तरप्रकृतीनां नामादय एवमेव नवरि तु।

स्वकनाम्ना च नाम स्थापना द्रव्यं भवेत् भावः॥67॥)

मूलुत्तरपयडीणं णामादि चउव्विहं हवे सुगमं।

वज्जित्ता णोकम्मं णोआगमभावकम्मं च॥68॥

(मूलोत्तरप्रकृतीनां नामादि चतुर्विधं भवेत्सुगमम्।

वर्जयित्वा नोकर्म नोआगमभावकर्म च॥68॥)

पडपडिहारसिमज्जा आहारं देह उच्चणीचंगं।

भंडारी मूलाणं णोकम्मं दवियकम्मं तु॥69॥

(पटप्रतीहारासिमद्यानि आहारं देह उच्चनीचाङ्गम्।

भण्डारी मूलानां नोकर्म द्रव्यकर्म तु॥69॥)

पडविसयपहुदि दव्वं मदिसुदवाघादकरणसंजुत्तं।

मदिसुदबोहाणं पुण णोकम्मं दवियकम्मं तु॥70॥

(पटविषयप्रभृति द्रव्यं मतिश्रुतव्याघातकरणसंयुक्तम्।

मतिश्रुतबोधयोः पुनः नोकर्म द्रव्यकर्म तु॥70॥)

ओहिमणपज्जवाणं पडिघादणिमित्तसंकिलेसयरं।

जं बज्झट्ठं तं खलु णोकम्मं केवले णत्थि॥71॥

(अवधिमनःपर्याययोः प्रतिघातनिमित्तसंक्लेशकरः।

यः बाह्यार्थः स खलु नोकर्म केवले नास्ति॥71॥)

पंचण्हं णिद्दाणं माहिसदहिपहुदि होदि णोकम्मं।

वाघादकरपडादी चक्खुअचक्खूण णोकम्मं॥72॥

(पञ्चानां निद्राणां माहिषदधिप्रभृति भवति नोकर्म।

व्याघातकरपटादि चक्षुरचक्षुषोः नोकर्म॥72॥)

ओहीकेवलदंसणणोकम्मं ताण णाणभंगो व।

सादेदरणोकम्मं इट्ठाणिट्ठण्णपाणादी॥73॥

(अवधिकेवलदर्शननोकर्म तयोः ज्ञानभङ्गो वा।

सातेतरनोकर्म इष्टानिष्टान्नपानादि॥73॥)

आयदणाणायदणं सम्मे मिच्छे य होदि णोकम्मं।

उभयं सम्मामिच्छे णोकम्मं होदि णियमेण॥74॥

(आयतनानायतनं सम्यक्त्वे मिथ्यात्वे च भवति नोकर्म।

उभयं सम्यग्मिथ्यात्वे नोकर्म भवति नियमेन॥74॥)

अणणोकम्मं मिच्छत्तायदणादी हु होदि सेसाणं।

सगसगजोग्गं सत्थं सहायपहुदी हवे णियमा॥75॥

(अननोकर्म मिथ्यात्वायतनादि हि भवति शेषाणाम्।

स्वकस्वकयोग्यं शास्त्रं सहायप्रभृति भवेत् नियमात्॥75॥)

थीपुंसंढसरीरं ताणं णोकम्म दव्वकम्मं तु।

वेलंबको सुपुत्तो हस्सरदीणं च णोकम्मं॥76॥

(स्त्रीपुंषण्ढशरीरं तेषां नोकर्म द्रव्यकर्म तु।

विडम्बकः सुपुत्रः हास्यरत्योः च नोकर्म॥76॥)

इट्ठाणिट्ठवियोग-जोगं अरदिस्स मुदसुपुत्तादी।

सोगस्स य सिंहादी णिंदिददव्वं च भयजुगले॥77॥

(इष्टानिष्टावियोगयोगः अरतेः मृतसुपुत्रादयः।

शोकस्य च सिंहादयः निन्दितद्रव्यं च भययुगले॥77॥)

णिरयायुस्स अणिट्ठाहारो सेसाणमिट्ठमण्णादी।

गदिणोकम्मं दव्वं चउग्गदीणं हवे खेत्तं॥78॥

(निरयायुषः अनिष्टाहारः शेषाणामिष्टमन्नादयः।

गतिनोकर्म द्रव्यं चतुर्गतीनां भवेत् क्षेत्रम्॥78॥)

णिरयादीण गदीणं णिरयादी खेत्तयं हवे णियमा।

जाईए णोकम्मं दव्विंदियपोग्गलं होदि॥79॥

(निरयादीनां गतीनां निरयादि क्षेत्रकं भवेत् नियमात्।

जातेः नोकर्म द्रव्येन्द्रियपुद्गलो भवति॥79॥)

एइंदियमादीणं सगसगदव्विंदियाणि णोकम्मं।

देहस्स य णोकम्मं देहुदयजयदेहखंधाणि॥80॥

(एकेन्द्रियादीनां स्वकस्वकद्रव्येन्द्रियाणि नोकर्म।

देहस्य च नोकर्म देहोदयजदेहस्कंधाः॥80॥)

ओरालियवेगुव्वियआहारयतेजकम्मणोकम्मं।

ताणुदयजचउदेहा कम्मे विस्संचयं णियमा॥81॥

(औदारिकवैगूर्विकाहारकतेजः कर्मनोकर्म।

तेषामुदयजचतुर्देहा कर्मणि विश्रसोपचयो नियमात्॥81॥)

बंधणपहुदिसमण्णियसेसाणं देहमेव णोकम्मं।

णवरि विसेसं जाणे सगखेत्तं आणुपुव्वीणं॥82॥

(बन्धनप्रभृतिसमन्वितशेषाणां देहमेव नोकर्म।

नवरि विशेषं जानीहि स्वकक्षेत्रमानुपूर्वीणाम्॥82॥)

थिरजुम्मस्स थिराथिररसरुहिरादीणि सुहजुगस्स सुहं।

असुहं देहावयवं सरपरिणदपोग्गलाणि सरे॥83॥

(स्थिरयुग्मस्य स्थिरास्थिररसरुधिरादयः शुभयुगस्य शुभः।

अशुभे देहावयवः स्वरपरिणतपुद्गलाः स्वरे॥83॥)

उच्चस्सुच्चं देहं णीचं णीचस्स होदि णोकम्मं।

दाणादिचउक्काणं विग्घगणगपुरिसपहुदी हु॥84॥

(उच्चस्योच्चं देहं नीचं नीचस्य भवति नोकर्म।

दानादिचतुर्णां विघ्नकनगपुरुषप्रभृतयो हि॥84॥)

विरियस्स य णोकम्मं रुक्खाहारादिबलहरं दव्वं।

इदि उत्तरपयडीणं णोकम्मं दव्वकम्मं तु॥85॥

(वीर्यस्य च नोकर्म रूक्षाहारादि बलहरं द्रव्यम्।

इति उत्तरप्रकृतीनां नोकर्म द्रव्यकर्म तु॥85॥)

णोआगमभावो पुण सगसगकम्मफलसंजुदो जीवो।

पोग्गलविवाइयाणं णत्थि खु णोआगमो भावो॥86॥

(नोआगमभावः पुनः स्वकस्वककर्मफलसंयुतो जीवः।

पुद्गलविपाकिनां नास्ति खलु नोआगमो भावः॥86॥)

2- बन्धोदयसत्त्वाधिकार

णमिऊण णेमिचंदं असहायपरक्कमं महावीरं।

बंधुदयसत्तजुत्तं ओघादेसे थवं वोच्छं॥87॥

(नत्वा नेमिचन्द्रमसहायपराक्रमं महावीरम्।

बन्धोदयसत्त्वयुक्तमोघादेशे स्तवं वक्ष्यामि॥87॥)

सयलंगेक्कंगेक्कंगहियार सवित्थरं ससंखेवं।

वण्णणसत्थं थयथुइधम्मकहा होइ णियमेण॥88॥

(सकलाङ्गैकाङ्गैकाङ्गमधिकारं सविस्तरं ससंक्षेपम्।

वर्णनशास्त्रं स्तवस्तुतिधर्मकथा भवति नियमेन॥88॥)

पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसबंधोत्ति चदुविहो बंधो।

उक्कस्समणुक्कस्सं जहण्णमजहण्णगंति पुधं॥89॥

(प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशबन्ध इति चतुर्विधो बन्धः।

ऽत्कृष्टोनुत्कृष्टः जघन्योऽजघन्यक इति पृथक्॥89॥)

सादिअणादी धुव अद्धुओ य बंधो दु जेट्ठमादीसु।

णाणेगं जीवं पडि ओघादेसे जहाजोग्गं॥90॥

(साद्यनादी ध्रुवः अध्रुवश्च बन्धस्तु ज्येष्ठादिषु।

नानैकं जीवं प्रति ओघादेशे यथायोग्यम्॥90॥)

ठिदिअणुभागपदेसा गुणपडिवण्णेसु जेसिमुक्कस्सा।

तेसिमणुक्कस्सो चऽव्विहोऽजहण्णेवि एमेव॥91॥

(स्थित्यनुभागप्रदेशा गुणप्रतिपन्नेषु येषामुत्कृष्टाः।

तेषामनुत्कृष्टः चतुर्विध अजघन्येपि एवमेव॥91॥)

सम्मेव तित्थबंधो आहारदुगं पमादरहिदेसु।

मिस्सूणे आऽस्स य मिच्छादिसु सेसबंधोदु॥92॥

(सम्यक्त्वे एव तीर्थबन्ध आहारद्विकं प्रमादरहितेषु।

मिश्रोने आयुषश्च मिथ्यात्वादिषु शेषबन्धस्तु॥92॥)

पढमुवसमिये सम्मे सेसतिये अविरदादिचत्तारि।

तित्थयरबंधपारंभया णरा केवलिदुगंते॥93॥

(प्रथमोपशमे सम्यक्त्वे शेषत्रये अविरतादिचत्वारः।

तीर्थकरबन्धप्रारम्भका नराः केवलिद्विकान्ते॥93॥)

सोलस पणवीस णभं दस चऽ छक्केक्क बंधवोछिण्णा।

दुग तीस चदुरपुव्वे पण सोलस जोगिणो एक्को॥94॥

(षोडश पञ्चविंशतिः नभः दश चतस्रः षडेकैकं बन्धव्युच्छिन्नाः।

द्विके त्रिशंत् चतस्रः अपूर्वे पञ्च षोडश योगिनः एका॥94॥)

मिच्छतहुंडसंढाऽसंपत्तेयक्खथावरादावं।

सुहुमतियं वियलिंदिय णिरयदुणिरयाउगं मिच्छे॥95॥

(मिथ्यात्वहुण्डषण्ढासंप्राप्तैकाक्षस्थावरातपः।

सूक्ष्मत्रयं विकलेन्द्रियं निरयद्विनिरयायुष्कं मिथ्यात्वे॥95॥)

बिदियगुणे अणथीणतिदुभगतिसंठाणसंहदिचउक्कं।

दुग्गमणित्थीणीचं तिरियदुगुज्जोवतिरियाऊ॥96॥

(द्वितीयगुणे अन-स्त्यानत्रयदुर्भगत्रयसंस्थानसंहतिचतुष्कम्।

दुर्गमनस्त्रीनीचं तिर्यग्द्विकोद्योततिर्यगायुः॥96॥)

अयदे बिदियकसाया वज्जं ओरालमणुदुमणुवाऊ।

देसे तदियकसाया णियमेणिह बंधवोच्छिण्णा॥97॥

(अयते द्वितीयकषाया वज्रमोरालमनुष्यद्विमानवायुः।

देशे तृतीयकषाया नियमेनेह बन्धव्युच्छिन्नाः॥97॥)

छट्ठे अथिरं असुहं असादमजसं च अरदिसोगं च।

अपमत्ते देवाऊणिट्ठवणं चेव अत्थित्ति॥98॥

(षष्ठे अस्थिरमशुभमसातमयशश्च अरतिशोकं च।

अप्रमत्ते देवायुर्निष्ठापनं चैव अस्तीति॥98॥)

मरणूणम्हि णियट्टीपढमे णिद्दा तहेव पयला य।

छट्ठे भागे तित्थं णिमिणं सग्गमणपंचिंदी॥99॥

तेजदुहारदुसमचउसुरवण्णागुरुचउक्कतसणवयं।

चरमे हस्सं च रदी भयं जुगुच्छा य बंधवोच्छिण्णा॥100॥ जुम्मं।

(मरणोने निवृत्तिप्रथमे निद्रा तथैव प्रचला च।

षष्ठे भागे तीर्थं निर्माणं सद्गमनपञ्चेन्द्रियम्॥99॥

तेजाद्विकाहारद्विसमचतुरस्रसुरवर्णागुरुचतुष्कत्रसनवकम्।

चरमे हास्यं च रतिः भयं जुगुप्सा च बन्धव्युच्छिन्ना॥100॥

युग्मम्।)

पुरिसं चदुसंजलणं कमेण अणियट्टिपंचभागेसु।

पढमं विग्घं दंसणचउजसउच्चं च सुहुमंते॥101॥

(पुरुषः चतुस्संज्वलनः क्रमेण अनिवृत्तिपञ्चभागेषु।

प्रथमं विघ्नः दर्शनचतुर्यशउच्चं च सूक्ष्मान्ते॥101॥)

उवसंतखीणमोहे जोगिम्हि य समयियट्ठिदी सादं।

णायव्वो पयडीणं बंधस्संतो अणंतो य॥102॥

(उपशान्तक्षीणमोहे योगिनि च समयिकस्थितिः सातम्।

ज्ञातव्यः प्रकृतीनां बन्धस्यान्त अनन्तश्च॥102॥)

सत्तरसेकग्गसयं चउसत्ततरि सगट्ठि तेवट्ठी।

बंधा णवट्ठवण्णा दुवीस सत्तारसेकोघे॥103॥

(सप्तदशैकाग्रशतं चतुः- सप्तसप्ततिः सप्तषष्टिः त्रिषष्टिः।

बन्धा नवाष्टपञ्चाशत् द्वाविंशतिः सप्तदश एकौघे॥103॥)

तिय उणवीसं छत्तियतालं तेवण्ण सत्तवण्णं च।

इगिदुगसट्ठी बिरहिय सय तियउणवीससहिय वीससयं॥104॥

(त्रयमेकोनविंशतिः षट्त्रिकचत्वारिंशत् त्रिपञ्चाशत् सप्तपञ्चाशच्च।

एकद्वाषष्टिः द्विरहितं शतं त्र्येकोनविंशतिसहितं विंशतिशतम्॥104॥)

ओघे वा आदेसे णारयमिच्छम्हि चारि वोच्छिण्णा।

उवरिम बारस सुरचउ सुराउ आहारयमबंधा॥105॥

(ओघे इव आदेशे नारकमिथ्यात्वे चतस्रो व्युच्छिन्नाः।

उपरितना द्वादश सुरचतुष्कं सुरायुराहारकमबन्धाः॥105॥)

धम्मे तित्थं बंधदि वंसामेघाण पुण्णगो चेव।

छट्ठोत्ति य मणुवाऊ चरिमे मिच्छेव तिरियाऊ॥106॥

(धर्मे तीर्थं बध्नाति वंशामेघयोः पूर्णकश्चैव।

षष्ठ इति च मानवायुः चरमे मिथ्यात्वे एव तिर्यगायुः॥106॥)

मिस्साविरदे उच्चं मणुवदुगं सत्तमे हवे बंधो।

मिच्छा सासणसम्मा मणुवदुगुच्चं ण बंधंति॥107॥

(मिश्राविरते उच्चं मनुष्यद्वयं सप्तमे भवेत् बन्धः।

मिथ्यात्विनः सासादनसम्यक्त्वा मनुष्यद्विकोच्चं न

बध्नन्ति॥107॥)

तिरिये ओघो तित्थाहारूणो अविरदे छिदी चउरो।

उवरिमछण्हं च छिदी सासणसम्मे हवे णियमा॥108॥

(तिरश्चि ओघः तीर्थाहारो न अविरते छितिः चत्वारः।

ऽपरिमषण्णां च छितिः सासादनसम्यक्त्वे भवेन्नियमात्॥108॥)

सामण्णतिरियपंचिंदियपुण्णगजोणिणीसु एमेव।

सुरणिरयाऽ अपुण्णे वेगुव्वियछक्कमवि णत्थि॥109॥

(सामान्यतिर्यक्पञ्चेन्द्रियपूर्णकयोनिनीषु एवमेव।

सुरनिरयायुरपूर्णे वैगूर्विकषट्कमपि नास्ति॥109॥)

तिरियेव णरे णवरि हु तित्थाहारं च अत्थि एमेव।

सामण्णपुण्णमणुसिणिणरे अपुण्णे अपुण्णेव॥110॥

(तिर्यगिव नरे नवरि हि तीर्थाहारं चास्ति एवमेव।

सामान्यपूर्णमानुषीनरे अपूर्णो अपूर्ण इव॥110॥)

णिरयेव होदि देवे आईसाणोत्ति सत्त वाम छिदी।

सोलस चेव अबन्धा भवणतिए णत्थि तित्थयरं॥111॥

(निरय इव भवति देवे आ ईशान इति सप्त वामे छित्तिः।

षोडश चैव अबन्धाः भवनत्रये नास्ति तीर्थकरम्॥111॥)

कप्पित्थीसु ण तित्थं सदरसहस्सारगोत्ति तिरियदुगं।

तिरियाऊ ऽज्जोवो अत्थि तदो णत्थि सदरचऊ॥112॥

(कल्पस्त्रीषु न तीर्थं शतारसहस्रारक इति तिर्यग्द्विकम्।

तिर्यगायुरुद्योतः अस्ति ततः नास्ति शतारचतुष्कम्॥112॥)

पुण्णिदरं विगिविगिले तत्थुप्पणो हु सासणो देहे।

पज्जतिं णवि पावदि इदि णरतिरियाऽगं णत्थि॥113॥

(पूर्णेतरमिवैकविकले तत्रोत्पन्नो हि सासादनो देहे।

पर्याप्तिं नापि प्राप्नोति इति नरतिर्यगायुष्कं नास्ति॥113॥)

पंचेंदियेसु ओघं एयक्खे वा वणप्फदीयंते।

मणुवदुगं मणुवाऊ उच्चं ण हि तेउवाउम्हि॥114॥

(पञ्चेन्द्रियेषु ओघः एकाक्ष इव वनस्पत्यन्ते।

मनुष्यद्वयं मनुष्यायुरुच्चं न हि तेजोवायौ॥114॥)

ण हि सासणो अपुण्णे साहारणसुहुमगे य तेउदुगे।

ओघं तस मणवयणे ओराले मणुवगइभंगो॥115॥

(न हि सासादन अपूर्णे साधारणसूक्ष्मके च तेजोद्वये।

ओघः त्रसे मनोवचने औराले मनुष्यगतिभङ्गः॥115॥)

ओराले वा मिस्से ण सुरणिरयाउहारणिरयदुगं।

मिच्छदुगे देवचओ तित्थं ण हि अविरदे अत्थि॥116॥

(ओराल इव मिश्रे न हि सुरनिरयायुराहारनिरयद्वयम्।

मिथ्यात्वद्वये देवचतुष्कं तीर्थं न हि अविरते अस्ति॥116॥)

पण्णारसमुनतीसं मिच्छदुगे अविरदे छिदी चउरो।

उवरिमपणसट्ठीवि य एक्कं सादं सजोगिम्हि॥117॥

(पञ्चदशैकोनत्रिंशत् मिथ्यात्वद्विके अविरते छित्तयःचतस्रः।

उपरिमपञ्चषष्टिरपि च एकं सातं सयोगिनि॥117॥)

देवे वा वेगुव्वे मिस्से णरतिरियआउगं णत्थि।

छट्ठगुणंवाहारे तम्मिस्से णत्थि देवाऊ॥118॥

(देव इव वैगूर्वे मिश्रे नरतिर्यगायुष्कं नास्ति।

षष्ठगुणमिवाहारे तन्मिश्रे नास्ति देवायुः॥118॥)

कम्मे उरालमिस्सं वा णाउदुगंपि णव छिदी अयदे।

वेदादाहारोत्ति य सगुणट्ठाणाणमोघं तु॥119॥

(कर्म्मणि औरालिकमिश्रमिव नायुर्द्विकमपि नव छित्तिरयते।

वेदादाहार इति च स्वगुणस्थानानामोघस्तु॥119॥)

णवरि य सव्वुवसम्मे णरसुरआऊणि णत्थि णियमेण।

मिच्छस्संतिम णवयं बारं ण हि तेउपम्मेसु॥120॥

सुक्के सदरचउक्कं वामंतिमबारसं च ण व अत्थि।

कम्मेव अणाहारे बंधस्संतो अणंतो य॥121॥ जुम्मं॥

(नवरि च सर्वोपशमे नरसुरायुषी नास्ति नियमेन।

मिथ्यात्वस्यान्तिमं नवकं द्वादश न हि तेज-पद्मयोः॥120॥

शुक्लायां शतारचतुष्कं वामान्तिमद्वादश च न वा अस्ति।

कर्म्म इव अनाहारे बन्धस्यन्त अनन्तश्च॥121॥ युग्मम्॥)

सादि अणादी धुव अद्धुवो य बंधो दु कम्मछक्कस्स।

तदियो सादियसेसो अणादिधुवसेसगो आऊ॥122॥

(सादिरनादिः ध्रुव अध्रुवश्च बंधस्तु कर्मषट्कस्य।

तृतीयः सादिकशेष अनादिध्रुवशेषक आयुः॥122॥)

सादी अबंधबंधे सेढिअणारूढगे अणादी हु।

अभव्वसिद्धम्हि धुवो भवसिद्धे अद्धुवो बंधो॥123॥

(सादिः अबन्धबन्धे श्रेण्यनारोहके अनादिर्हि।

अभव्यसिद्धे ध्रुवो भवसिद्धे अध्रुवो बन्धः॥123॥)

घादितिमिच्छकसाया भयतेजगुरुदुगणिमिणवण्णचओ।

सत्तेतालधुवाणं चदुधा सेसाणयं तु दुधा॥124॥

(घातित्रिमिथ्यात्वकषाया भयतेजोऽगुरुद्विकनिर्माणवर्णचतुष्कम्।

ससचत्वारिंशद्ध्रुवाणां चतुर्धा शेषाणां तु द्विधा॥124॥)

सेसे तित्थाहारं परघादचउक्क सव्वआऊणि।

अप्पडिवक्खा सेसा सप्पडिवक्खा हु बासट्ठी॥125॥

(शेषासु तीर्थाहारं परघातचतुष्कं सर्वायूंषि।

अप्रतिपक्षाः शेषाः सप्रतिपक्षा हि द्वाषष्टिः॥125॥)

अवरो भिण्णमुहुत्तो तित्थाहाराण सव्वआऊणं।

समओ छावट्ठीणं बंधो तम्हा दुधा सेसा॥126॥

(अवरो भिन्नमुहूर्तः तीर्थाहाराणां सर्वायुषाम्।

समयः षट्षष्ठीनां बन्धः तस्मात् द्विधा शेषाः॥126॥)

तीसं कोडाकोडी तिघादितदियेसु वीस णामदुगे।

सत्तरि मोहे सुद्धं उवही आउस्स तेतीसं॥127॥

(त्रिंशत् कोटीकोट्यः त्रिघातितृतीयेषु विंशतिर्नामद्वये।

सप्ततिर्मोहे शुद्ध उदधिः आयुषः त्रयस्त्रिंशत्॥127॥)

दुक्खतिघादीणोघं सादिच्छीमणुदुगे तदद्धं तु।

सत्तरि दंसणमोहे चरित्तमोहे य चत्तालं॥128॥

संठाणसंहदीणं चरिमस्सोघं दुहीणमादिति।

अट्ठरसकोडकोडी वियलाणं सुहुमतिण्हं च॥129॥

अरदीसोगे संढे तिरिक्खभयणिरयतेजुरालदुगे।

वेगुव्वादावदुगे णीचे तसवण्णअगुरुतिचउक्के॥130॥

इगिपंचेंदियथावरणिमिणासग्गमणअथिरछक्काणं।

वीसं कोडाकोडीसागरणामाणमुक्कस्सं॥131॥

हस्सरदिउच्चपुरिसे थिरछक्के सत्थगमणदेवदुगे।

तस्सद्धमंतकोडाकोडी आहारतित्थयरे॥132॥

सुरणिरयाऊणोघं णरतिरियाऊण तिण्णि पल्लाणि।

उक्कस्सट्ठिदिबंधो सण्णीपज्जत्तगे जोगे॥133॥ कुलयं।

(दुःखत्रिघातीनामोघः सातस्त्रीमनुष्यद्विके तदर्धं तु।

सप्ततिः दर्शनमोहे चारित्रमोहे च चत्वारिंशत्॥128॥

संस्थानसंहतीनां चरमस्योघः द्विहीनमादीति।

अष्टादशकोटीकोटिः विकलानां सूक्ष्मत्रयाणां च॥129॥

अरतिशोके षण्ढे तिर्यग्भयनिरयतेजउरालद्वये।

वैगूर्विकातपद्विके नीचे त्रसवर्णागुरुत्रिचतुष्के॥130॥

एकपञ्चेन्द्रियस्थावरनिर्माणासद्गमनास्थिरषट्कानाम्।

विंशं कोटीकोटीसागरनामानमुत्कृष्टम्॥131॥

हास्यरत्युच्चपुरुषे स्थिरषट्के शस्तगमनदेवद्विके।

तस्यार्धमन्तःकोटीकोटिः आहारतीर्थकरे॥132॥

सुरनिरयायुषोरोघः नरतिर्यगायुषोः त्रीणि पल्यानि।

उत्कृष्टस्थितिबन्धः संज्ञिपर्याप्तके योग्ये॥133॥ कुलकम्।)

सव्वट्ठिदीणमुक्कस्सओ दु उक्कस्ससंकिलेसेण।

विवरीदेण जहण्णो आउगतियवज्जियाणं तु॥134॥

(सर्वस्थितीनामुत्कृष्टकस्तु उत्कृष्टसंक्लेशेन।

विपरीतेन जघन्य आयुष्कत्रयवर्जितानां तु॥134॥)

सव्वुक्कस्सठिदीणं मिच्छाइट्ठी दु बंधगो भणिदो।

आहारं तित्थयरं देवाउं वा विमोत्तूण॥135॥

(सर्वोत्कृष्टस्थितीनां मिथ्यादृष्टिस्तु बन्धको भणितः।

आहारं तीर्थकरं देवायुषं वा विमुच्य॥135॥)

देवाउगं पमत्तो आहारयमप्पमत्तविरदो दु।

तित्थयरं च मणुस्सो अविरदसम्मो समज्जेइ॥136॥

(देवायुषं प्रमत्त आहारकमप्रमत्तविरतस्तु।

तीर्थकरं च मनुष्य अविरतसम्यक् समर्जयति॥136॥)

णरतिरिया सेसाउं वेगुव्वियछक्कवियलसुहुमतियं।

सुरणिरया ओरालियतिरियदुगुज्जोवसंपत्तं॥137॥

देवा पुण एइंदियआदावं थावरं च सेसाणं।

उक्कस्ससंकिलिट्ठा चदुगदिया ईसिमज्झिमया॥138॥ जुम्मं।

(नरतिर्यञ्चः शेषायुषं वैगूर्विकषट्कविकलसूक्ष्मत्रयम्।

सुरनिरया औदारिकतिर्यग्द्वयोद्योतासंप्राप्तम्॥137॥

देवाः पुनरेकेन्द्रियातपं स्थावरं च शेषाणाम्।

उत्कृष्टसंक्लिष्टाः चतुर्गतिका ईषन्मध्यमकाः॥138॥ युग्मम्।)

बारस य वेयणीये णामे गोदे य अट्ठ य मुहुत्ता।

भिण्णमुहुत्तं तु ठिदी जहण्णयं सेसपंचण्हं॥139॥

(द्वादश च वेदनीये नाम्नि गोत्रे च अष्ट च मुहूर्ताः।

भिन्नमुहूर्तस्तु स्थितिः जघन्या शेषपञ्चानाम्॥139॥)

लोहस्स सुहुमसत्तरसाणं ओघं दुगेकदलमासं।

कोहतिये पुरिसस्स य अट्ठ य वस्सा जहण्णठिदी॥140॥

(लोभस्य सूक्ष्मसप्तदशानामोघः द्विकैकदलमासः।

क्रोधत्रये पुरुषस्य च अष्ट च वर्षाणि जघन्यस्थितिः॥140॥)

तित्थाहाराणंतोकोडाकोडी जहण्णठिदिबंधो।

खवगे सगसगबंधच्छेदणकाले हवे णियमा॥141॥

(तीर्थाहाराणामन्तःकोटीकोटिः जघन्यस्थितिबन्धः।

क्षपके स्वकस्वकबन्धच्छेदनकाले भवेत् नियमात्॥141॥)

भिण्णमुहुत्तो णरतिरियाऊणं वासदससहस्साणि।

सुरणिरयआउगाणं जहण्णओ होदि ठिदिबंधो॥142॥

(भिन्नमुहूर्तः नरतिर्यगायुषोः वर्षदशसहस्राणि।

सुरनिरयायुषोः जघन्यकः भवति स्थितिबन्धः॥142॥)

सेसाणं पज्जत्तो बादरएइंदियो विसुद्धो य।

बंधदि सव्वजहण्णं सगसगउक्कस्सपडिभागे॥143॥

(शेषाणां पर्याप्तो बादरैकेन्द्रियो विशुद्धश्च।

बध्नाति सर्वजघन्यं स्वकस्वकोत्कृष्टप्रतिभागे॥143॥)

एयं पणकदि पण्णं सयं सहस्सं च मिच्छवरबंधो।

इगिविगलाणं अवरं पल्लासंखूणसंखूणं॥144॥

(एकं पञ्चकृतिः पञ्चाशत् शतं सहस्रं च मिथ्यात्ववरबंधः।

एकविकलानामवरः पल्यासंख्योनसंख्योनम्॥144॥)

जदि सत्तरिस्स एत्तियमेत्तं किं होदि तीसियादीणं।

इदि संपाते सेसा णं इगिविगलेसु उभयठिदी॥145॥

(यदि सप्ततेः एतावन्मात्रं किं भवति त्रिंशदादीनाम्।

इति संपाते शेषाणामेकविकलेषूभयस्थितिः॥145॥)

सण्णि असण्णिचउक्के एगे अंतोमुहुत्तमाबाहा।

जेट्ठे संखेज्जगुणा आवलिसंखं असंखभागहियं॥146॥

(संज्ञिनि असंज्ञिचतुष्के एके अन्तर्मुहूर्त आबाधा।

ज्येष्ठे संख्येयगुणा आवलिसंख्यमसंख्यभागाधिकम्॥146॥)

जेट्ठाबाहोवट्टियजेट्ठं आबाहकंडयं तेण।

आबाहवियप्पहदेणेगूणेणूणजेट्ठमवरठिदी॥147॥

(ज्येष्ठाबाधोद्वर्तितज्येष्ठमाबाधाकाण्डकं तेन।

आबाधाविकल्पहृतेन एकोनेन ऊनज्येष्ठमवरस्थितिः॥147॥)

बासूप-बासूअ-वरट्ठिदीओ सुबाअ-सूबाप-जहण्णकालो।

बीबीवरो बीबिजहण्णकालो सेसाणमेवं वयणीयमेदं॥148॥

(बासूप-बासूअ-वरस्थितिः सूबाअ-सूबाप-जघन्यकालः।

बीबीवरः बीबिजघन्यकालः शेषाणामेवं वक्तव्यमेतत्॥148॥)

मज्झे थोवसलागा हेट्ठा उवरिं च संखगुणिदकमा।

सव्वजुदी संखगुणा हेट्ठुवरिं संखगुणमसण्णित्ति॥149॥

(मध्ये स्तोकशलाका अधस्तनमुपरि च संख्यगुणितक्रमाः।

सर्वयुतिः संख्यगुणा अधस्तनोपरि संख्यगुणा असंज्ञीति॥149॥)

सण्णिस्स हु हेट्ठादो ठिदिठाणं संखगुणिदमुवरुवरिं।

ठिदिआयामोवि तहा सगठिदिठाणं व आबाहा॥150॥

(संज्ञिनः हि अधस्तनात् स्थितिस्थानं संख्यगुणितमुपर्युपरि।

स्थित्यायामोपि तथा स्वकस्थितिस्थानं व आबाधा॥150॥)

सत्तरसपंचतित्थाहाराणं सुहुमबादरापुव्वो।

छव्वेगुव्वमसण्णी जहण्णमाऊण सण्णी वा॥151॥

(सप्तदशपञ्चतीर्थाहाराणां सूक्ष्मबादरापूर्वः।

षड्वैगूर्वमसंज्ञी जघन्यमायुषां संज्ञी वा॥151॥)

अजहण्णट्ठिदिबंधो चउव्विहो सत्तमूलपयडीणं।

सेसतिये दुवियप्पो आउचउक्केवि दुवियप्पो॥152॥

(अजघन्यस्थितिबन्धः चतुर्विधः सप्तमूलप्रकृतीनाम्।

शेषत्रये द्विविकल्प आयुश्चतुष्केपि द्विविकल्पः॥152॥)

संजलणसुहुमचोद्दस-घादीणं चदुविधो दु अजहण्णो।

सेसतिया पुण दुविहा सेसाणं चदुविधावि दुधा॥153॥

(संज्वलनसूक्ष्मचतुर्दशघातिनां चतुर्विधस्तु अजघन्यः।

शेषत्रयः पुनः द्विविधाः शेषाणां चतुर्विधापि द्विधा॥153॥)

सव्वाओ दु ठिदीओ सुहासुहाणंपि होंति असुहाओ।

माणुसतिरिक्खदेवाउगं च मोत्तूण सेसाणं॥154॥

(सर्वास्तु स्थितयः शुभाशुभानामपि भवन्ति अशुभाः।

मनुष्यतिर्यग्देवायुष्कं च मुक्त्वा शेषाणाम्॥154॥)

कम्मसरूवेणागयदव्वं ण य एदि उदयरूवेण।

रूवेणुदीरणस्स व आबाहा जाव ताव हवे॥155॥

(कर्मस्वरूपेणागतद्रव्यं न च एति उदयरूपेण।

रूपेणोदीरणाया वा आबाधा यावत्तावद्भवेत्॥155॥)

उदयं पडि सत्तण्हं आबाहा कोडकोडि उवहीणं।

वाससयं तप्पडिभागेण य सेसट्ठिदीणं च॥156॥

(उदयं प्रति सप्तानामाबाधा कोटीकोटिः उदधीनाम्।

वर्षशतं तत्प्रतिभागेन च शेषस्थितीनां च॥156॥)

अंतोकोडाकोडिट्ठिदिस्स अंतोमुहुत्तमाबाहा।

संखेज्जगुणविहीणं सव्वजहण्णट्ठिदिस्स हवे॥157॥

(अन्तःकोटीकोटिस्थितेः अन्तर्मुहूर्त आबाधा।

संख्यातगुणविहीनः सर्वजघन्यस्थितेः भवेत्॥157॥)

पुव्वाणं कोडितिभा-गादासंखेपअद्ध वोत्ति हवे।

आउस्स य आबाहा ण ट्ठिदिपडिभागमाउस्स॥158॥

(पूर्वाणां कोटित्रिभागादासंक्षेपाद्धा वा इति भवेत्।

आयुषश्च आबाधा न स्थितिप्रतिभाग आयुषः॥158॥)

आवलियं आबाहा उदीरणमासिज्ज सत्तकम्माणं।

परभवियआउगस्स य उदीरणा णत्थि णियमेण॥159॥

(आवलिकमाबाधा उदीरणामाश्रित्य सप्तकर्मणाम्।

परभवीयायुष्कस्य च उदीरणा नास्ति नियमेन॥159॥)

आबाहूणियकम्मट्ठिदी णिसेगो दु सत्तकम्माणं।

आउस्स णिसेगो पुण सगट्ठिदि होदि णियमेण॥160॥

(आबाधोनितकर्मस्थितिः निषेकस्तु सप्तकर्मणाम्।

आयुषः निषेकः पुनः स्वकस्थितिः भवति नियमेन॥160॥)

आबाहं वोलाविय पढमणिसेगम्मि देय बहुगं तु।

तत्तो विसेसहीणं बिदियस्सादिमणिसेओत्ति॥161॥

(आबाधां वा अपलाप्य प्रथमनिषेके देयं बहुकं तु।

ततो विशेषहीनं द्वितीयस्यादिमनिषेक इति॥161॥)

बिदिये बिदियणिसेगे हाणी पुव्विल्लहाणिअद्धं तु।

एवं गुणहाणिं पडि हाणी अद्धद्धयं होदि॥162॥

(द्वितीये द्वितीयनिषेके हानिः पूर्वहान्यर्धं तु।

एवं गुणहानिं प्रति हानिः अर्धार्धं भवति॥162॥)

सुहपयडीण विसोही तिव्वो असुहाण संकिलेसेण।

विवरीदेण जहण्णो अणुभागो सव्वपयडीणं॥163॥

(शुभप्रकृतीनां विशुद्ध्या तीव्र अशुभानां संक्लेशेन।

विपरीतेन जघन्य अनुभागः सर्वप्रकृतीनाम्॥163॥)

बादालं तु पसत्था विसोहिगुणमुक्कडस्स तिव्वाओ।

बासीदि अप्पसत्था मिच्छुक्कडसंकिलिट्ठस्स॥164॥

(द्वाचत्वारिंशत्तु प्रशस्ता विशुद्धिगुणोत्कटस्य तीव्राः।

द्वयाशीतिः अप्रशस्ता मिथ्योत्कटसंक्लिष्टस्य॥164॥)

आदाओ उज्जोओ मणुवतिरिक्खाउगं पसत्थासु।

मिच्छस्स होंति तिव्वा सम्माइट्ठिस्स सेसाओ॥165॥

(आतप उद्योतः मानवतिर्यगायुष्कं प्रशस्तासु।

मिथ्यस्य भवन्ति तीव्राः सम्यग्दृष्टेः शेषाः॥165॥)

मणुओरालदुवज्जं विसुद्धसुरणिरयअविरदे तिव्वा।

देवाउ अप्पमत्ते खवगे अवसेसबत्तीसा॥166॥

(मनुष्यौदारिकद्विवज्रं विशुद्धसुरनिरयाविरते तीव्राः।

देवायुरप्रमत्ते क्षपके अवशेषद्वात्रिंशत्॥166॥)

उवघादहीणतीसे अपुव्वकरणस्स उच्चजससादे।

संमेलिदे हवंति हु खवगस्सऽवसेसबत्तीसा॥167॥

(उपघातहीनत्रिंशत् अपूर्वकरणस्य उच्चयशःसातम्।

संमेलिते भवन्ति हि क्षपकस्यावशेषद्वात्रिंशत्॥167॥)

मिच्छस्संतिमणवयं णरतिरियाऊणि वामणरतिरिये।

एइंदियआदावं थावरणामं च सुरमिच्छे॥168॥

(मिथ्यात्वस्यान्तिमनवकं नरतिर्यगायुषी वामनरतिरश्च।

एकेन्द्रियमातापं स्थावरनाम च सुरमिथ्ये॥168॥)

उज्जोवो तमतमगे सुरणारयमिच्छगे असंपत्तं।

तिरियदुगं सेसा पुण चदुगदिमिच्छे किलिट्ठे य॥169॥

(उद्योतः तमस्तमके सुरनारकमिथ्यके असंप्राप्तम्।

तिर्यग्द्विकं शेषाः पुनः चतुर्गतिमिथ्ये क्लिष्टे च॥169॥)

वण्णचउक्कमसत्थं उवघादो खवगघादि पणवीसं।

तीसाणमवरबंधो सगसगवोच्छेदठाणम्हि॥170॥

(वर्णचतुष्कमशस्तमुपघातः क्षपकघाति पञ्चविंशतिः।

त्रिंशतामवरबन्धः स्वकस्वकव्युच्छेदस्थाने॥170॥)

अणथीणतियं मिच्छं मिच्छे अयदे हु बिदियकोधादी।

देसे तदियकसाया संजमगुणपच्छिदे सोलं॥171॥

(अन-स्त्यानत्रयं मिथ्यात्वं मिथ्ये अयते हि द्वितीयक्रोधादयः।

देशे तृतीयकषायाः संयमगुणप्रस्थिते षोडश॥171॥)

आहारमप्पमत्ते पमत्तसुद्धे य अरदिसोगाणं।

णरतिरिये सुहुमतियं वियलं वेगुव्वछक्काओ॥172॥

(आहारमप्रमत्ते प्रमत्तशुद्धे च अरतिशोकयोः।

नरतिरश्चि सूक्ष्मत्रयं विकलं वैगूर्वषट्कायुः॥172॥)

सुरणिरये उज्जोवोरालदुगं तमतमम्हि तिरियदुगं।

णीचं च तिगदिमज्झिमपरिणामे थावरेयक्खं॥173॥

(सुरनिरये उद्योतौरालद्विकं तमस्तमसि तिर्यग्द्विकम्।

नीचं च त्रिगतिमध्यमपरिणामे स्थावरैकाक्षम्॥173॥)

सोहम्मोत्ति य तावं तित्थयरं अविरदे मणुस्सम्हि।

चदुगदिवामकिलिट्ठे पण्णरस दुवे विसोहीये॥174॥

(सौधर्म इति च आतपं तीर्थकरमविरते मनुष्ये।

चतुर्गतिवामक्लिष्टे पञ्चदश द्वे विशुद्धे॥174॥)

पहघाददुगं तेजदु तसवण्णचउक्क णिमिणपंचिंदी।

अगुरुलहुं च किलिट्ठे इत्थिणउंसं विसोहीये॥175॥

(परघातद्विकं तेजद्वि त्रसवर्णचतुष्कं निर्माणपञ्चेन्द्रियम्।

अगुरुलघु च क्लिष्टे स्त्रीनपुंसकं विशुद्धे॥175॥)

सम्मो वा मिच्छो वा अट्ठ अपरियत्तमज्झिमो य जदि।

परियत्तमाणमज्झिममिच्छाइट्ठी दु तेवीसं॥176॥

(सम्यग्वा मिथ्यो वा अष्ट अपरिवर्तमध्यमश्च यदि।

परिवर्तमानमध्यममिथ्यादृष्टिस्तु त्रयोविंशतिः॥176॥)

थिरसुहजससाददुगं उभये मिच्छेव उच्चसंठाणं।

संहदिगमणं णरसुरसुभगादेज्जाण जुम्मं च॥177॥

(स्थिरशुभयशस्सातद्विकमुभयस्मिन् मिथ्ये एव उच्चसंस्थानम्।

संहतिगमनं नरसुरसुभगादेयानां युग्मं च॥177॥)

घादीणं अजहण्णोऽणुक्कस्सो वेयणीयणामाणं।

अजहण्णमणुक्कस्सो गोदे चदुधा दुधा सेसा॥178॥

(घातीनामजघन्योऽनुत्कृष्टो वेदनीयनाम्नोः।

अजघन्य अनुत्कृष्टो गोत्रे चतुर्धा द्विधा शेषाः॥178॥)

सत्थाणं धुवियाणमणुक्कस्समसत्थगाण धुवियाणं।

अजहण्णं च य चदुधा सेसा सेसाणयं च दुधा॥179॥

(शस्तानां ध्रुवाणामनुत्कृष्ट अशस्तकानां ध्रुवाणाम्।

अजघन्यश्च च चतुर्धा शेषा शेषाणां च द्विधा॥179॥)

सत्ती य लदादारूअट्ठीसेलोवमाहु घादीणं।

दारुअणंतिमभागोत्ति देसघादी तदो सव्वं॥180॥

(शक्तिश्च लतादारुअस्थिशैलोपमा आहुः घातिनाम्।

दार्वनन्तिमभाग इति देशघाति ततः सर्वम्॥180॥)

देसोत्ति हवे सम्मं तत्तो दारूअणंतिमे मिस्सं।

सेसा अणंतभागा अट्ठिसिलाफड्ढया मिच्छे॥181॥

(देश इति भवेत् सम्यक्त्वं ततः दार्वनन्तिमे मिश्रम्।

शेषा अनन्तभागा अस्थिशिलास्पर्द्धका मिथ्यात्वे॥181॥)

आवरणदेसघादंतरायसंजलणपुरिससत्तरसं।

चदुविधभावपरिणदा तिविधा भावा हु सेसाणं॥182॥

(आवरणदेशघात्यन्तरायसंज्वलनपुरुषसप्तदश।

चतुर्विधभावपरिणताः त्रिविधा भावा हि शेषाणाम्॥182॥)

अवसेसा पयडिओ अघादिया घादियाण पडिभागा।

ता एव पुण्णपावा सेसा पावा मुणेयव्वा॥183॥

(अवशेषाः प्रकृतयः अघातिका घातिकानां प्रतिभागाः।

ता एव पुण्यपापाः शेषाः पापा मन्तव्याः॥183॥)

गुडखंडसक्करामियसरिसा सत्था हु णिंबकंजीरा।

विसहालाहलसरिसाऽसत्था हु अघादिपडिभागा॥184॥

(गुडखण्डशर्करामृतसदृशाः शस्ता हि निम्बाकाञ्जीराः।

विषहालाहलसदृशा अशस्ता हि अघातिप्रतिभागाः॥184॥)

एयक्खेत्तोगाढं सव्वपदेसेहिं कम्मणो जोग्गं।

बंधदि सगहेदूहिं य अणादियं सादियं उभयं॥185॥

(एकक्षेत्रावगाढं सर्वप्रदेशैः कर्मणो योग्यम्।

बध्नाति स्वकहेतुभिश्च अनादिकं सादिकमुभयम्॥185॥)

एयसरीरोगाहियमेयक्खेत्तं अणेयखेत्तं तु।

अवसेसलोयखेत्तं खेत्तणुसारिट्ठियं रूवी॥186॥

(एकशरीरावगाहितमेकक्षेत्रमनेकक्षेत्रं तु।

अवशेषलोकक्षेत्रं क्षेत्रानुसारिस्थितं रूपि॥186॥)

एयाणेयक्खेत्तट्ठियरूविअणंतिमं हवे जोग्गं।

अवसेसं तु अजोग्गं सादि अणादी हवे तत्थ॥187॥

(एकानेकक्षेत्रस्थितरूप्यनन्तिमं भवेत् योग्यम्।

अवशेषं तु अयोग्यं सादि अनादि भवेत् तत्र॥187॥)

जेट्ठे समयपबद्धे अतीदकाले हदेण सव्वेण।

जीवेण हदे सव्वं सादी होदित्ति णिद्दिट्ठं॥188॥

(ज्येष्ठे समयप्रबद्धे अतीतकालेन हतेन सर्वेण।

जीवेन हते सर्वं सादि भवतीति निर्दिष्टम्॥188॥)

सगसगखेत्तगयस्स य अणंतिमं जोग्गदव्वगयसादी।

सेसं अजोग्गसंगयसादी होदित्ति णिद्दिट्ठं॥189॥

(स्वकस्वकक्षेत्रगतस्य च अनन्तिमं योग्यद्रव्यगतसादि।

शेषमयोग्यसंगतसादि भवतीति निर्दिष्टम्॥189॥)

सगसगसादिविहीणे जोग्गाजोग्गे य होदि णियमेण।

जोग्गाजोग्गाणं पुण अणादिदव्वाण परिमाणं॥190॥

(स्वकस्वकसादिविहीने योग्यायोग्ये च भवति नियमेन।

योग्यायोग्यानां पुन अनादिद्रव्याणां परिमाणम्॥190॥)

सयलरसरूवगंधेहिं परिणदं चरमचदुहिं फासेहिं।

सिद्धादोऽभव्वादोऽणंतिमभागं गुणं दव्वं॥191॥

(सकलरसरूपगन्धैः परिणतं चरमचतुर्भिः स्पर्शैः।

सिद्धादभव्यादनन्तिमभागं गुणं द्रव्यम्॥191॥)

आउगभागो थोवो णामागोदे समो तदो अहियो।

घादितियेवि य तत्तो मोहे तत्तो तदो तदिये॥192॥

(आयुष्कभागः स्तोकः नामगोत्रे समः तत अधिकः।

घातित्रयेपि च ततः मोहे ततः ततः तृतीये॥192॥)

सुहुदुक्खणिमित्तादो बहुणिज्जरगोत्ति वेयणीयस्स।

सव्वेहिंतो बहुगं दव्वं होदित्ति णिद्दिट्ठं॥193॥

(सुखदुःखनिमित्तात् बहुनिर्जरक इति वेदनीयस्य।

सर्वेभ्यः बहुकं द्रव्यं भवतीति निर्दिष्टम्॥193॥)

सेसाणं पयडीणं ठिदिपडिभागेण होदि दव्वं तु।

आवलिअसंखभागो पडिभागो होदि णियमेण॥194॥

(शेषाणां प्रकृतीनां स्थितिप्रतिभागेन भवति द्रव्यं तु।

आवल्यसंख्यभागः प्रतिभागो भवति नियमेन॥194॥)

बहुभागे समभागो अट्ठण्हं होदि एक्कभागम्हि।

उत्तकमो तत्थवि बहुभागो बहुगस्स देओ दु॥195॥

(बहुभागे समभागः अष्टानां भवति एकभागे।

उक्तक्रमः तत्रापि बहुभागो बहुकस्य देयस्तु॥195॥)

उत्तरपयडीसु पुणो मोहावरणा हवंति हीणकमा।

अहियकमा पुण णामाविग्घा य ण भंजणं सेसे॥196॥

(उत्तरप्रकृतिषु पुनः मोहावरणा भवन्ति हीनक्रमाः।

अधिकक्रमाः पुनः नामविघ्नाश्च न भञ्जनं शेषे॥196॥)

सव्वावरणं दव्वं अणंतभागो दु मूलपयडीणं।

सेसा अणंतभागा देसावरणं हवे दव्वं॥197॥

(सर्वावरणं द्रव्यमनन्तभागस्तु मूलप्रकृतीनाम्।

शेषा अनन्तभागा देशावरणं भवेत् द्रव्यम्॥197॥)

देसावरणण्णोण्णब्भत्थं तु अणंतसंखमेत्तं खु।

सव्वावरणधणट्ठं पडिभागो होदि घादीणं॥198॥

(देशावरणान्योन्याभ्यस्तं तु अनन्तसंख्यामात्रं खलु।

सर्वावरणधनार्थं प्रतिभागो भवति घातिनाम्॥198॥)

सव्वावरणं दव्वं विभंजणिज्जं तु उभयपयडीसु।

देसावरणं दव्वं देसावरणेसु णेविदरे॥199॥

(सर्वावरणं द्रव्यं विभजनीयं तु उभयप्रकृतिषु।

देशावरणं द्रव्यं देशावरणेषु नैवेतरस्मिन्॥199॥)

बहुभागे समभागो बंधाणं होदि एक्कभागम्हि।

उत्तकमो तत्थवि बहुभागो बहुगस्स देओ दु॥200॥

(बहुभागे समभागो बन्धानां भवति एकभागे।

उक्तक्रमः तत्रापि बहुभागः बहुकस्य देयस्तु॥200॥)

घादितियाणं सगसगसव्वावरणीयसव्वदव्वं तु।

उत्तकमेण य देयं विवरीयं णामविग्घाणं॥201॥

(घातित्रयाणां स्वकस्वकसर्वावरणीयसर्वद्रव्यं तु।

उक्तक्रमेण च देयं विपरीतं नामविघ्नानाम्॥201॥)

मोहे मिच्छत्तादीसत्तरसण्हं तु दिज्जदे हीणं।

संजलणाणं भागेव होदि पणणोकसायाणं॥202॥

(मोहे मिथ्यात्वादिसप्तदशानां तु दीयते हीनम्।

संज्वलनानां भाग इव भवति पञ्चनोकषायाणाम्॥202॥)

संजलणभागबहुभागद्धं अकसायसंगयं दव्वं।

इगिभागसहियबहुभागद्धं संजलणपडिबद्धं॥203॥

(संज्वलनभागबहुभागार्द्धमकषायसंगतं द्रव्यम्।

एकभागसहितबहुभागार्द्धं संज्वलनप्रतिबद्धम्॥203॥)

तण्णोकसायभागो सबंधपणणोकसायपयडीसु।

हीणकमो होदि तहा तहा देसे देसावरणदव्वं॥204॥

(तन्नोकषायभागः सबन्धपञ्चनोकषायप्रकृतिषु।

हीनक्रमो भवति तथा देशे देशावरणद्रव्यम्॥204॥)

पुंबंधऽद्धा अंतोमुहुत्त इत्थिम्हि हस्सजुगले य।

अरदिदुगे संखगुणा णपुंसकऽद्धा विसेसहिया॥205॥

(पुंबन्धाद्धा अन्तर्मुहूर्तः स्त्रियां हास्ययुगले च।

अरतिद्वये संख्यगुणा नपुंसकाद्धा विशेषाधिकः॥205॥)

पणविग्घे विवरीयं सबंधपिंडिदरणामठाणेवि।

पिंडं दव्वं च पुणो सबंधसगपिंडपयडीसु॥206॥

(पञ्चविघ्ने विपरीतं सबन्धपिण्डेतरनामस्थानेपि।

पिण्डं द्रव्यं च पुनः सबन्धस्वकपिण्डप्रकृतिषु॥206॥)

छण्हंपि अणुक्कस्सो पदेसबंधो दु चदुवियप्पो दु।

सेसतिये दुवियप्पो मोहाऊणं च दुवियप्पो॥207॥

(षण्णामपि अनुत्कृष्टः प्रदेशबन्धस्तु चतुर्विकल्पस्तु।

शेषत्रये द्विविकल्पः मोहायुषोश्च द्विविकल्पः॥207॥)

तीसण्हमणुक्कस्सो उत्तरपयडीसु चउविहो बंधो।

सेसतिये दुवियप्पो सेसचउक्केवि दुवियप्पो॥208॥

(त्रिंशतामनुत्कृष्टः उत्तरप्रकृतिषु चतुर्विधो बन्धः।

शेषत्रये द्विविकल्पः शेषचतुष्केपि द्विविकल्पः॥208॥)

णाणंतरायदसयं दंसणछक्कं च मोहचोद्दसयं।

तीसण्हमणुक्कस्सो पदेसबंधो चदुवियप्पो॥209॥

(ज्ञानान्तरायदशकं दर्शनषट्कं मोहचतुर्दशकम्।

त्रिंशतामनुत्कृष्टः प्रदेशबन्धः चतुर्विकल्पः॥209॥)

उक्कडजोगो सण्णी पज्जत्तो पयडिबंधमप्पदरो।

कुणदि पदेसुक्कस्सं जहण्णये जाण विवरीयं॥210॥

(उत्कृष्टयोगः संज्ञी पर्याप्तः प्रकृतिबन्धाल्पतरः।

करोति प्रदेशोत्कृष्टं जघन्यके जानीहि विपरीतम्॥210॥)

आउक्कस्स पदेसं छक्कं मोहस्स णव दु ठाणाणि।

सेसाण तणुकसाओ बंधदि उक्कस्सजोगेण॥211॥

(आयुष्कस्य प्रदेशं षट्कं मोहस्य नव तु स्थानानि।

शेषाणां तनुकषायो बध्नाति उत्कृष्टयोगेन॥211॥)

सत्तर सुहुमसरागे पंचऽणियट्ठिम्हि देसगे तदियं।

अयदे बिदियकसायं होदि हु उक्कस्सदव्वं तु॥212॥

छण्णोकसायणिद्दापयलातित्थं च सम्मगो य जदी।

सम्मो वामो तेरं णरसुरआऊ असादं तु॥213॥

देवचउक्कं वज्जं समचउरं सत्थगमणसुभगतियं।

आहारमप्पमत्तो सेसपदेसुक्कडो मिच्छो॥214॥ विसेसयं।

(सप्तदश सूक्ष्मसरागे पञ्चानिवृत्तौ देशके तृतीयम्।

अयते द्वितीयकषायं भवति हि उत्कृष्टद्रव्यं तु॥212॥

षट्नोकषायनिद्राप्रचलातीर्थं च सम्यक् च यदि।

सम्यग्वामः त्रयोदश नरसुरायुरसातं तु॥213॥

देवचतुष्कं वज्रं समचतुरस्रं शस्तगमनसुभगत्रयम्।

आहारमप्रमत्तः शेषप्रदेशोत्कटो मिथ्यः॥214॥ विशेषकम्।)

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स पढमे जहण्णये जोगे।

सत्तण्हं तु जहण्णं आउगबंधेवि आउस्स॥215॥

(सूक्ष्मनिगोदापर्याप्तकस्य प्रथमे जघन्यके योगे।

सप्तानां तु जघन्यमायुष्कबन्धेपि आयुषः॥215॥)

घोडणजोगोऽसण्णी णिरयदुसुरणिरयआउगजहण्णं।

अपमत्तो आहारं अयदो तित्थं च देवचऊ॥216॥

(घोटमानयोगः असंज्ञी निरयद्विसुरनिरयायुष्कजघन्यम्।

अप्रमत्तः आहारमयतः तीर्थं च देवचतुः॥216॥)

चरिमअपुण्णभवत्थो तिविग्गहे पढमविग्गहम्मि ठिओ।

सुहुमणिगोदो बंधदि सेसाणं अवरबंधं तु॥217॥

(चरमापूर्णभवस्थः त्रिविग्रहे प्रथमविग्रहे स्थितः।

सूक्ष्मनिगोदो बध्नाति शेषाणामवरबन्धं तु॥217॥)

जोगट्ठाणा तिविहा उववादेयंतवड्ढिपरिणामा।

भेदा एक्केक्कंपि चोद्दसभेदा पुणो तिविहा॥218॥

(योगस्थानानि त्रिविधानि उपपादैकान्तवृद्धिपरिणामानि।

भेदात् एकैकमपि चतुर्दशभेदाः पुनः त्रिविधाः॥218॥)

उववादजोगठाणा भवादिसमयट्ठियस्स अवरवरा।

विग्गहइजुगइगमणे जीवसमासे मुणेयव्वा॥219॥

(उपपादयोगस्थानानि भवादिसमयस्थितस्यावरवराणि।

विग्रहर्जुगतिगमने जीवसमासे मन्तव्यानि॥219॥)

परिणामजोगठाणा सरीरपज्जत्तगादु चरिमोत्ति।

लद्धिअपज्जत्ताणं चरिमतिभागम्हि बोधव्वा॥220॥

(परिणामयोगस्थानानि शरीरपर्याप्तकात् तु चरम इति।

लब्ध्यपर्याप्तकानां चरमत्रिभागे बोद्धव्यानि॥220॥)

सगपज्जत्तीपुण्णे उवरिं सव्वत्थ जोगमुक्कस्सं।

सव्वत्थ होदि अवरं लद्धिअपुण्णस्स जेट्ठंपि॥221॥

(स्वकपर्याप्तिपूर्णे उपरि सर्वत्र योगोत्कृष्टम्।

सर्वत्र भवत्यवरं लब्ध्यपर्याप्तस्य ज्येष्ठमपि॥221॥)

एयंतवड्ढिठाणा उभयट्ठाणाणमंतरे होंति।

अवरवरट्ठाणाओ सगकालादिम्हि अंतम्हि॥222॥

(एकान्तवृद्धिस्थानानि उभयस्थानानामन्तरे भवन्ति।

अवरवरस्थानानि स्वककालादौ अन्ते॥222॥)

अविभागपडिच्छेदो वग्गो पुण वग्गणा य फड्ढयगं।

गुणहाणीवि य जाणे ठाणं पडि होदि णियमेण॥223॥

(अविभागप्रतिच्छेदो वर्गः पुनः वर्गणा च स्पर्धकम्।

गुणहानिरपि च जानीहि स्थानं प्रति भवति नियमेन॥223॥)

पल्लासंखेज्जदिमा गुणहाणिसला हवंति इगिठाणे।

गुणहाणिफड्ढयाओ असंखभागं तु सेढीये॥224॥

(पल्यासंख्येयिमा गुणहानिशला भवन्ति एकस्थाने।

गुणहानिस्पर्धकानि असंख्यभागं तु श्रेण्याः॥224॥)

फड्ढयगे एक्केक्के वग्गणसंखा हु तत्तियालावा।

एक्केक्कवग्गणाए असंखपदरा हु वग्गाओ॥225॥

(स्पर्धके एकैके वर्गणासंख्या हि तावदालापा।

एकैकवर्गणायामसंख्यप्रतरा हि वर्गाः॥225॥)

एक्केक्के पुण वग्गे असंखलोगा हवंति अविभागा।

अविभागस्स पमाणं जहण्णउड्ढी पदेसाणं॥226॥

(एकैके पुनः वर्गे असंख्यलोका भवन्ति अविभागाः।

अविभागस्य प्रमाणं जघन्यवृद्धिः प्रदेशानाम्॥226॥)

इगिठाणफड्ढयाओ वग्गणसंखा पदेसगुणहाणी।

सेढिअसंखेज्जदिमा असंखलोगा हु अविभागा॥227॥

(एकस्थानस्पर्धकानि वर्गणासंख्या प्रदेशगुणहानिः।

श्रेण्यसंख्यातिमा असंख्यलोका हि अविभागाः॥227॥)

सव्वे जीवपदेसे दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा।

उवरिं उत्तरहीणं गुणहाणिं पडि तदद्धकमं॥228॥

(सर्वस्मिन् जीवप्रदेशे द्वयर्धगुणहानिभाजिते प्रथमा।

उपरि उत्तरहीनं गुणहानिं प्रति तदर्द्धक्रमः॥228॥)

फड्ढयसंखाहि गुणं जहण्णवग्गं तु तत्थ तत्थादी।

बिदियादिवग्गणाणं वग्गा अविभागअहियकमा॥229॥

(स्पर्धकसंख्याभिः गुणो जघन्यवर्गस्तु तत्र तत्रादिः।

द्वितीयादिवर्गणानां वर्गा अविभागाधिकक्रमाः॥229॥)

अंगुलअसंखभागप्पमाणमेत्तऽवरफड्ढयावड्ढी।

अंतरछक्कं मुच्चा अवरट्ठाणादु उक्कस्सं॥230॥

(अङ्गुलासंख्यभागप्रमाणमात्रावरस्पर्धकवृद्धिः।

अन्तरषट्कं मुक्त्वा अवरस्थानादुत्कृष्टम्॥230॥)

सरिसायामेणुवरिं सेढिअसंखेज्जभागठाणाणि।

चडिदेक्केक्कमपुव्वं फड्ढयमिह जायदे चयदो॥231॥

(सदृशायामेनोपरि श्रेण्यसंख्येयभागस्थानानि।

चटितैकैकमपूर्वं स्पर्द्धकमिह जायते चयतः॥231॥)

एदेसिं ठाणाणं जीवसमासाण अवरवरविसयं।

चउरासीदिपदेहिं अप्पाबहुगं परूवेमो॥232॥

(एतेषां स्थानानां जीवसमासानामवरवरविषयं।

चतुरशीतिपदैः अल्पबहुकं प्ररूपयामः॥232॥)

सुहुमगलद्धिजहण्णं तण्णिव्वत्तीजहण्णयं तत्तो।

लद्धिअपुण्णुक्कस्सं बादरलद्धिस्स अवरमदो॥233॥

(सूक्ष्मकलब्धिजघन्यं तन्निर्वृत्तिजघन्यकं ततः।

लब्ध्यपूर्णोत्कृष्टं बादरलब्धेरवरमतः॥233॥)

णिव्वत्तिसुहुमजेट्ठं बादरणिव्वत्तियस्स अवरं तु।

बादरलद्धिस्स वरं बीइंदियलद्धिगजहण्णं॥234॥

(निर्वृत्तिसूक्ष्मज्येष्ठं बादरनिर्वृत्तिकस्यावरं तु।

बादरलब्धेः वरं द्वीन्द्रियलब्धिकजघन्यम्॥234॥)

बादरणिव्वत्तिवरं णिव्वत्तिबिइंदियस्स अवरमदो।

एवं बितिबितितिचतिच चउविमणो होदि चउविमणो॥235॥

(बादरनिर्वृत्तिवरं निर्वृत्तिद्वीन्द्रियस्यावरमतः।

एवं द्वित्रिद्वित्रित्रिचत्रिच चतुःविमनो भवति चतुःविमनः॥235॥)

तह य असण्णीसण्णी असण्णिसण्णिस्स सण्णिउववादं।

सुहुमेइंदियलद्धिगअवरं एयंतवड्ढिस्स॥236॥

(तथा च असंज्ञीसंज्ञी असंज्ञीसंज्ञिनः संज्ञ्युपपादम्।

सूक्ष्मैकेन्द्रियलब्धिकावरं एकान्तवृद्धेः॥236॥)

सण्णिस्सुववादवरं णिव्वत्तिगदस्स सुहुमजीवस्स।

एयंतवड्ढिअवरं लद्धिदरे थूलथूले य॥237॥

(संज्ञिन उपपादवरं निर्वृत्तिगतस्य सूक्ष्मजीवस्य।

एकान्तवृद्ध्यवरं लब्धीतरस्मिन् स्थूलस्थूले च॥237॥)

तह सुहुमसुहुमजेट्ठं तो बादरबादरे वरं होदि।

अंतरमवरं लद्धिगसुहुमिदरवरं पि परिणामे॥238॥

(तथा सूक्ष्मसूक्ष्मज्येष्ठं ततो बादरबादरे वरं भवति।

अन्तरमवरं लब्धिकसूक्ष्मेतरवरमपि परिणामे॥238॥)

अंतरमुवरीवि पुणो तत्पुण्णाणं च उवरि अंतरियं।

एयंतवड्ढिठाणा तसपणलद्धिस्स अवरवरा॥239॥

(अन्तरमुपर्यपि पुनः तत्पूर्णानां च उपर्यन्तरितम्।

एकान्तवृद्धिस्थानानि त्रसपञ्चलब्धेरवरवराः॥239॥)

लद्धीणिव्वत्तीणं परिणामेयंतवड्ढिठाणाओ।

परिणामट्ठाणाओ अंतरअंतरिय उवरुवरिं॥240॥

(लब्धिनिर्वृत्तीनां परिणामैकान्तवृद्धिस्थानानि।

परिणामस्थानानि अन्तरान्तरितान्युपर्युपरि॥240॥)

एदेसिं ठाणाओ पल्लासंखेज्जभागगुणिदकमा।

हेट्ठिमगुणहाणिसला अण्णोण्णब्भत्थमेत्तं तु॥241॥

(एतेषां स्थानानि पल्यासंख्येयभागगुणितक्रमाणि।

अधस्तनगुणहानिशला अन्योन्याभ्यस्तमात्रं तु॥241॥)

अवरुक्कस्सेण हवे उववादेयंतवड्ढिठाणाणं।

एक्कसमयं हवे पुण इदरेसिं जाव अट्ठो त्ति॥242॥

(अवरोत्कृष्टेन भवेत् उपपादैकान्तवृद्धिस्थानानाम्।

एकसमयो भवेत् पुनः इतरेषां यावदष्ट इति॥242॥)

अट्ठसमयस्स थोवा उभयदिसासुवि असंखसंगुणिदा।

चउसमयोत्ति तहेव य उवरिं तिदुसमयजोग्गाओ॥243॥

(अष्टसमयस्य स्तोका उभयदिशयोरपि असंख्यसंगुणिताः।

चतुःसमय इति तथैव च उपरि त्रिद्विसमययोग्याः॥243॥)

मज्झे जीवा बहुगा उभयत्थ विसेसहीणकमजुत्ता।

हेट्ठिमगुणहाणिसलादुवरि सलागा विसेसऽहिया॥244॥

(मध्ये जीवा बहुका उभयत्र विशेषहीनक्रमयुक्ताः।

अधस्तनगुणहानिशलाया उपरि शलाका विशेषाधिकाः॥244॥)

दव्वतियं हेट्ठुवरिमदलवारा दुगुणमुभयमण्णोण्णं।

जीवजवे चोद्दससयबावीसं होदि बत्तीसं॥245॥

चत्तारि तिण्णि कमसो पण अड अट्ठं तदो य बत्तीसं।

किंचूणतिगुणहाणिविभजिदे दव्वे दु जवमज्झं॥246॥ जुम्मं।

(द्रव्यत्रयमधउपरिमदलवारा द्विगुणमुभयमन्योन्यम्।

जीवयवे चतुर्दशशतद्वाविंशतिः भवति द्वात्रिंशत्॥245॥

चत्वारि त्रीणि क्रमशः पञ्च अष्ट अष्ट ततश्च द्वात्रिंशत्।

किञ्चिदूनत्रिगुणहानिविभजिते द्रव्ये तु यवमध्यम्॥246॥ युग्मम्।)

पुण्णतसजोगठाणं छेदाऽसंखस्सऽसंखबहुभागे।

दलमिगिभागं च दलं दव्वदुगं उभयदलवारा॥247॥

(पूर्णत्रसयोगस्थानं छेदासंख्यस्यासंख्यबहुभागे।

दलमेकभागं च दलं द्रव्यद्विकमुभयदलवाराः॥247॥)

णाणागुणहाणिसला छेदासंखेज्जभागमेत्ताओ।

गुणहाणीणद्धाणं सव्वत्थवि होदि सरिसं तु॥248॥

(नानागुणहानिशलाः छेदासंख्येयभागमात्राः।

गुणहानीनामद्धानां सर्वत्रापि भवति सदृशं तु॥248॥)

अण्णोण्णगुणिदरासी पल्लासंखेज्जभागमेत्तं तु।

हेट्ठिमरासीदो पुण उवरिल्लमसंखसंगुणिदं॥249॥

(अन्योन्यगुणितराशिः पल्यासंख्येयभागमात्रं तु।

अधस्तनराशितः पुनः उपरिममसंख्यातसंगुणितम्॥249॥)

इगिठाणफड्ढयाओ समयपबद्धं च जोगवड्ढी य।

समयपबद्धचयट्ठं एदे हु पमाणफलइच्छा॥250॥

(एकस्थानस्पर्द्धकानि समयप्रबद्धं च योगवृद्धिश्च।

समयप्रबद्धचयार्थमेते हि प्रमाणफलेच्छाः॥250॥)

बीइंदियपज्जत्तजहण्णट्ठाणादु सण्णिपुण्णस्स।

उक्कस्सट्ठाणोत्ति य जोगट्ठाणा कमे उड्ढा॥251॥

(द्वीन्द्रियपर्याप्तजघन्यस्थानात् संज्ञिपूर्णस्य।

उत्कृष्टस्थानमिति च योगस्थानानि क्रमेण वृद्धानि॥251॥)

सेढियसंखेज्जदिमा तस्स जहण्णस्स फड्ढया होंति।

अंगुलअसंखभागा ठाणं पडि फड्ढया उड्ढा॥252॥

(श्रेण्यसंख्येयिमानि तस्स जघन्यस्य स्पर्द्धकानि भवन्ति।

अङ्गुलासंख्यभागानि स्थानं प्रति स्पर्द्धकानि वृद्धानि॥252॥)

धुववड्ढीवड्ढंतो दुगुणं दुगुणं कमेण जायंते।

चरिमे पल्लच्छेदाऽसंखेज्जदिमो गुणो होदि॥253॥

(ध्रुववृद्धिवर्धमानानि द्विगुणं द्विगुणं क्रमेण जायन्ते।

चरमे पल्यच्छेदासंख्येयिमो गुणो भवति॥253॥)

आदी अंते सुद्धे वड्ढिहिदे रूवसंजुदे ठाणा।

सेढिअसंखेज्जदिमा जोगट्ठाणा णिरंतरगा॥254॥

(आदौ अन्ते शुद्धे वृद्धिहिते रूपसंयुते स्थानानि।

श्रेण्यसंख्येयिमानि योगस्थानानि निरन्तरकाणि॥254॥)

अंतरगा तदसंखेज्जदिमा सेढीअसंखभागा हु।

सांतरणिरंतराणिवि सव्वाणिवि जोगठाणाणि॥255॥

(अन्तरगाणि तदसंख्येयिमानि श्रेण्यसंख्येयभागानि हि।

सान्तरनिरन्तराण्यपि सर्वाण्यपि योगस्थानानि॥255॥)

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स पढमे जहण्णओ जोगो।

पज्जत्तसण्णिपंचिंदियस्स उक्कस्सओ होदि॥256॥

(सूक्ष्मनिगोदापर्याप्तकस्य प्रथमे जघन्यको योगः।

पर्याप्तसंज्ञिपञ्चेन्द्रियस्योत्कृष्टको भवति॥256॥)

जोगा पयडिपदेसा ठिदिअणुभागा कसायदो होंति।

अपरिणदुच्छिण्णेसु य बंधट्ठिदिकारणं णत्थि॥257॥

(योगात्प्रकृतिप्रदेशौ स्थित्यनुभागौ कषायतो भवत;।

अपरिणतोच्छिन्नेषु च बन्धः स्थितिकारणं नास्ति॥257॥)

सेढिअसंखेज्जदिमा जोगट्ठाणाणि होंति सव्वाणि।

तेहिं असंखेज्जगुणो पयडीणं संगहो सव्वो॥258॥

(श्रेण्यसंख्येयिमानि योगस्थानानि भवन्ति सर्वाणि।

तैरसंख्येयगुणः प्रकृतीनां संग्रहः सर्वः॥258॥)

तेहिं असंखेज्जगुणा ठिदिअवसेसा हवंति पयडीणं।

ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणा तत्तो असंखगुणा॥259॥

(तैरसंख्येयगुणा स्थित्यवशेषा भवन्ति प्रकृतीनाम्।

स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानानि तत असंख्यगुणानि॥259॥)

अणुभागाणं बंधज्झवसाणमसंखलोगगुणिदमदो।

एत्तो अणंतगुणिदा कम्मपदेसा मुणेयव्वा॥260॥

(अनुभागानां बन्धाध्यवसायमसंख्यलोकगुणितमतः।

एतस्मादनन्तगुणिताः कर्मप्रदेशा मन्तव्याः॥260॥)

आहारं तु पमत्ते तित्थं केवलिणि मिस्सयं मिस्से।

सम्मं वेदगसम्मे मिच्छदुगयदेव आणुदओ॥261॥

(आहारं तु प्रमत्ते तीर्थं केवलिनि मिश्रकं मिश्रे।

सम्यक् वेदकसम्ये मिथ्यद्विकायते एव आनूदयः॥261॥)

णिरयं सासणसम्मो ण गच्छदित्ति य ण तस्स णिरयाणू।

मिच्छादिसु सेसुदओ सगसगचरिमोत्ति णायव्वो॥262॥

(निरयं सासादनसम्यो न गच्छतीति च न तस्य निरयानुः।
मिथ्यादिषु शेषोदयः स्वकस्वकचरम इति ज्ञातव्यः॥262॥)

दस चउरिगि सत्तरसं अट्ठ य तह पंच चेव चउरो य।
छच्छक्कएक्कदुगदुग चोद्दस उगुतीस तेरसुदयविधि॥263॥
(दश चतुरेकं सप्तदश अष्ट च तथा पञ्च चैव चतस्रश्च।
षट् षट्कैकद्विकद्विकं चतुर्दशैकोनत्रिंशत् त्रयोदशोदयविधिः॥263॥)

पण णव इगि सत्तरसं अड पंच च चउर छक्क छच्चेव।
इगिदुग सोलस तीसं बारस उदये अजोगंता॥264॥
(पञ्च नवैकं सप्तदशाष्ट पञ्च च चतस्रः षट्कं षट् चैव।
एकं द्विकं षोडश त्रिंशत् द्वादश उदये अयोगान्ताः॥264॥)

मिच्छे मिच्छादावं सुहुमतियं सासणे अणेइंदी।
थावरवियलं मिस्से मिस्सं च य उदयवोच्छिण्णा॥265॥
(मिथ्ये मिथ्यातपं सूक्ष्मत्रयं सासादने अनैकेन्द्रियम्।
स्थावरविकलं मिश्रे मिश्रं च च उदयव्युच्छिन्नाः॥265॥)

अयदे बिदियकसाया वेगुव्वियछक्क णिरयदेवाऊ।
मणुयतिरियाणुपुव्वी दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं॥266॥
(अयते द्वितीयकषाया वैगूर्विकषट्कं निरयदेवायुः।
मनुजतिर्यगानुपूवर्व्ये दुर्भगानादेयमयशस्कम्॥266॥)

देसे तदियकसाया तिरियाउज्जोवणीचतिरियगदी।

छट्ठं आहारदुगं थीणतियं उदयवोच्छिण्णा॥267॥

(देशे तृतीयकषाया तिर्यगायुरुद्योतनीचतिर्यग्गतिः।

षष्ठे आहारद्विकं स्त्यानत्रयमुदयव्युच्छिन्नाः॥267॥)

अपमत्ते सम्मत्तं अंतिमतियसंहदी यऽपुव्वम्हि।

छच्चेव णोकसाया अणियट्ठीभागभागेसु॥268॥

(अप्रमत्ते सम्यक्त्वमन्तिमत्रयसंहतिश्चापूर्वे।

षट्चैव नोकषाया अनिवृत्तिभागभागयोः॥268॥)

वेदतिय कोहमाणं मायासंजलणमेव सुहुमंते।

सुहुमो लोहो संते वज्जंणारायणारायं॥269॥

(वेदत्रयं क्रोधमानं मायासंज्वलनमेव सूक्ष्मान्ते।

सूक्ष्मो लोभः शान्ते वज्रनाराचनाराचम्॥269॥)

खीणकसायदुचरिमे णिद्दा पयला य उदयवोच्छिण्णा।

णाणंतरायदसयं दंसणचत्तारि चरिमम्हि॥270॥

(क्षीणकषायद्विचरमे निद्रा प्रचला च उदयव्युच्छिन्नाः।

ज्ञानान्तरायदशकं दर्शनचत्वारि चरमे॥270॥)

तदियेक्कवज्जणिमिणं थिरसुहसरगदिउरालतेजदुगं।

संठाणं वण्णागुरुचउक्क पत्तेय जोगिम्हि॥271॥

(तृतीयैकवज्रनिर्माणं स्थिरशुभस्वरगतिऔरालतेजोद्विकम्।

संस्थानं वर्णागुरुचतुष्कं प्रत्येकं योगिनि॥271॥)

तदियेक्कं मणुवगदी पंचिंदियसुभगतसतिगादेज्जं।

जसतित्थं मणुवाऊ उच्चं च अजोगिचरिमम्हि॥272॥

(तृतीयैकं मानवगतिः पञ्चेन्द्रियसुभगत्रसत्रिकादेयम्।

यशस्तीर्थं मानवायुरुच्चं चायोगिचरमे॥272॥)

णट्ठा य रायदोसा इंदियणाणं च केवलिम्हि जदो।

तेण दु सादासादजसुहदुक्खं णत्थिं इंदियजं॥273॥

(नष्टौ च रागद्वेषौ इन्द्रियज्ञानं च केवलिनि यतः।

तेन तु सातासातजसुखदुःखं नास्ति इन्द्रियजम्॥273॥)

समयट्ठिदिगो बंधो सादस्सुदयप्पिगो जदो तस्स।

तेण असादस्सुदओ सादसरूवेण परिणमदि॥274॥

(समयस्थितिको बन्धः सातस्योदयात्मको यतः तस्य।

तेनासातस्योदयः सातस्वरूपेण परिणमति॥274॥)

एदेण कारणेण दु सादस्सेव दु णिरंतरो उदओ।

तेणासादणिमित्ता परीसहा जिणवरे णत्थि॥275॥

(एतेन कारणेन तु सातस्यैव तु निरन्तर उदयः।

तेनासातनिमित्ताः परीषहा जिनवरे न संति॥275॥)

सत्तरसेक्कारखचदुसहियसयं सगिगिसीदि छदुसदरी।

छावट्ठि सट्ठि णवसगवण्णास दुदालबारुदया॥276॥

(सप्तदशैकादशखचतुःसहितशतं सप्तैकाशीतिः षट्द्विसप्ततिः।

षट्षष्टिः षष्टिः नवसप्तपञ्चाशत् द्विचत्वारिंशद्द्वादशोदयाः॥276॥)

पंचेक्कारसबावीसट्ठारसपंचतीस इगिछादालं।

पण्णं छप्पण्णं बितिपणसट्ठि असीदि दुगुणपणवण्णं॥277॥

(पञ्चैकादशद्वाविंशत्यष्टादशपञ्चत्रिंशदेकषट्चत्वारिंशत्।

पञ्चाशत् षट्पञ्चाशत्

द्वित्रिपञ्चषष्ठिरशीतिःद्विगुणपञ्चपञ्चाशत्॥277॥)

उदयस्सुदीरणस्स य सामित्तादो ण विज्जदि विसेसो।

मोत्तूण तिण्णिठाणं पमत्त जोगी अजोगी य॥278॥

(उदयस्योदीरणायाश्च स्वामित्वात् न विद्यते विशेषः।

मुक्त्वा त्रिस्थानं प्रमत्तः योगी अयोगी च॥278॥)

तीसं बारस उदयुच्छेदं केवलिणमेकदं किच्चा।

सादमसादं च तहिं मणुवाउगमवणिदं किच्चा॥279॥

(त्रिंशत् द्वादश उदयोच्छेदं केवलिनोरेकत्र कृत्वा।

सातमसातं च तत्र मानवायुष्कमपनीतं कृत्वा॥279॥)

अवणिदतिप्पयडीणं पमत्तविरदे उदीरणा होदि।

णत्थित्ति अजोगिजिणे उदीरणा उदयपयडीणं॥280॥

(अपनीतत्रिप्रकृतीनां प्रमत्तविरते उदीरणा भवति।

नास्तीति अयोगिजिने उदीरणा उदयप्रकृतीनाम्॥280॥)

पण णव इगि सत्तरसं अट्ठट्ठ य चदुर छक्क छच्चेव।

इगि दुग सोलुगदालं उदीरणा होंति जोगंता॥281॥

(पञ्च नवैकं सप्तदश अष्टाष्ट च चत्वारि षट्कं षट् चैव।

एकं द्विकं षोडशैकोनचत्वारिंशत् उदीरणा भवन्ति

योग्यन्ताः॥281॥)

सत्तरसेक्कारखचदुसहियसयं सगिगिसीदि तियसदरी।

णवतिण्णिसट्ठि सगछक्कवण्ण चउवण्णमुगुदालं॥282॥

पंचेक्कारसबावीसट्ठारस पंचतीस इगिणवदालं।

तेवण्णेक्कुणसट्ठी पणछक्कडसट्ठि तेसीदी॥283॥ जुम्मं॥

(सप्तदशैकादशखचतुःसहितशतं सप्तैकाशीतिः त्रिसप्ततिः।

नवत्रिषष्टिः सप्तषट्कपञ्चाशत् चतुःपञ्चाशत्

एकोनचत्वारिंशत्॥282॥

पञ्चैकादशद्वाविंशत्यष्टादश पञ्चत्रिंशत् एकनवचत्वारिंशत्।

त्रिपञ्चाशदेकोनषष्टिः पञ्चषट्काष्टषष्टिः त्र्यशीतिः॥283॥ युग्मम्।)

गदियादिसु जोग्गाणं पयडिप्पहुदीणमोघसिद्धाणं।

सामित्तं णेदव्वं कमसो उदयं समासेज्ज॥284॥

(गत्यादिषु योग्यानां प्रकृतिप्रभृतीनामोघसिद्धानाम्।

स्वामित्वं नेतव्यं क्रमश उदयं समासाद्य॥284॥)

गदिआणुआउउदओ सपदे भूपुण्णबादरे ताओ।

उच्चुदओ णरदेवे थीणतिगुदओ णरे तिरिये॥285॥

(गत्यान्वायुरुदयः सपदे भूपूर्णबादरे आतपः।

उच्चोदयो नरदेवे स्त्यानत्रिकोदयो नरे तिरश्चि॥285॥)

संखाउगणरतिरिए इंदियपज्जत्तगादु थीणतियं।

जोग्गमुदेदुं वज्जिय आहारविगुव्वणुट्ठवगे॥286॥

(संख्यायुष्कनरतिरश्चि इन्द्रियपर्याप्तकात् स्त्यानत्रयम्।

योग्यमुदेतुं वर्जयित्वा आहारविगूर्वणोत्थापके॥286॥)

अयदापुण्णे ण हि थी संढोवि य घम्मणारयं मुच्चा।

थीसंढयदे कमसो णाणुचऊ चरिमतिण्णाणू॥287॥

(अयतापूर्णे न हि स्त्री षण्ढोपि च घर्मनारकं मुक्त्वा।

स्त्रीषण्ढायते क्रमशो नानुचत्वारि चरमत्रयानुः॥287॥)

इगिविगलथावरचऊ तिरिए अपुण्णो णरेवि संघडणं।

ओरालदु णरतिरिए वेगुव्वदु देवणेरयिए॥288॥

(एकविकलस्थावरचत्वारि तिरश्चि अपूर्णा नरेपि संहननम्।

औरालद्वि नरतिरश्चि वैक्रियिकद्वि देवनैरयिके॥288॥)

तेउतिगूणतिरिक्खेसुज्जोवो बादरेसु पुण्णेसु।

सेसाणं पयडीणं ओघं वा होदि उदओ दु॥289॥

(तेजस्त्रिकोनतिर्यक्षु उद्योतो बादरेषु पूर्णेषु।

शेषाणां प्रकृतीनामोघवत् भवति उदयस्तु॥289॥)

थीणतिथीपुरिसूणा घादी णिरयाउणीचवेयणियं।

णामे सगवचिठाणं णिरयाणू णारयेसुदया॥290॥

(स्त्यानत्रिस्त्रीपुरुषोना घातिनो निरयायुर्नीचवेदनीयम्।

नाम्नि स्वकवचःस्थानं निरयानुः नारकेषूदयाः॥290॥)

वेगुव्वतेजथिरसुहदुग दुग्गदिहुंडणिमिणपंचिंदी।

णिरयगदि दुब्भगागुरुतसवण्णचऊ य वचिठाणं॥291॥

(वैगूर्वतेजःस्थिरशुभद्विकं दुर्गतिहुण्डनिर्माणपञ्चेन्द्रियम्।

निरयगतिर्दुर्भगागुरुत्रसवर्णचत्वारि च वचःस्थानम्॥291॥)

मिच्छमणंतं मिस्सं मिच्छादितिए कमा छिदी अयदे।

बिदियकसाया दुब्भगणादेज्जदुगाऽणिरयचऊ॥292॥

(मिथ्यमनन्तं मिश्रं मिथ्यात्वादित्रये क्रमात् छित्तिरयते।

द्वितीयकषाया दुर्भगानादेयद्विकायुर्निरयचत्वारि॥292॥)

बिदियादिसु छसु पुढविसु एवं णवरि य असंजदट्ठाणे।

णत्थि णिरयाणुपुव्वी तिस्से मिच्छेव वोच्छदो॥293॥

(द्वितीयादिषु षट्सु पृथिवीषु एवं नवरि च असंयतस्थाने।

नास्ति निरयानुपूर्वी तस्मात् मिथ्ये एव व्युच्छेदः॥293॥)

तिरिये ओघो सुरणरणिरयाऊउच्च मणुदुहारदुगं।

वेगुव्वछक्कतित्थं णत्थि हु एमेव सामण्णे॥294॥

(तिरश्चि ओघः सुरनरनिरयायुरुच्चं मनुद्विआहारद्विकम्।

वैगूर्वषट्कतीर्थं नास्ति हि एवमेव सामान्ये॥294॥)

थावरदुगसाहारणतावितिगविगलूण ताणि पंचक्खे।

इत्थिअपज्जत्तूणा ते पुण्णे उदयपयडीओ॥295॥

(स्थावरद्विकसाधारणातपैकविकलोनाः ताः पञ्चाक्षे।

स्त्रयपर्याप्तोनास्ताः पूर्णे उदयप्रकृतयः॥295॥)

पुंसंढूणित्थिजुदा जोणिणिये अविरदे ण तिरियाणु।

पुण्णिदरे थी थीणति परघाददु पुण्णउज्जोवं॥296॥

सरगदिदु जसादेज्जं आदीसंठाणसंहदीपणगं।

सुभगं सम्मं मिस्सं हीणा तेऽपुण्णसंढजुदा॥297॥ जुम्मं॥

(पुंषण्ढोनस्त्रीयुता योनिमति अविरते न तिर्यगानुः।

पूर्णेतरे स्त्री स्त्यानत्रि परघातद्वि पूर्णोद्योतम्॥296॥

स्वरगतिद्वि यशआदेयमादिसंस्थानसंहतिपञ्चकम्।

सुभगं सम्यक्त्वं मिश्रं हीनाः ता अपूर्णषण्ढयुताः॥297॥ युग्मम्॥)

मणुवे ओघो थावरतिरियादावदुगएयवियलिंदि।

साहारणिदराउतियं वेगुव्वियछक्क परिहीणो ॥298॥

(मानवे ओघः स्थावरतिर्यगातपद्विकैकविकलेन्द्रियम्।

साधारणेतरायुस्त्रयं वैगूर्विकषट्कं परिहीनः॥298॥)

मिच्छमपुण्णं छेदो अणमिस्सं मिच्छगादितिसु अयदे।

बिदियकसायणराणू दुब्भगऽणादेज्जअज्जसयं॥299॥

(मिथ्यात्वमपूर्णं छेद अनमिश्रं मिथ्यकादित्रिषु अयते।

द्वितीयकषायनरानुः दुर्भगानादेयायशस्कम्॥299॥)

देसे तदियकसाया णीचं एमेव मणुससामण्णे।

पज्जत्तेवि य इत्थीवेदाऽपज्जत्तिपरिहीणो॥300॥

(देशे तृतीयकषाया नीचमेवमेव मनुष्यसामान्ये।

पर्याप्तेपि च स्त्रीवेदापर्याप्तिपरिहीना॥300॥)

मणुसिणिएत्थीसहिदा तित्थयराहारपुरिससंढूणा।

पुण्णिदरेव अपुण्णे सगाणुगदिआऽगं णेयं॥301॥

(मनुष्यिण्यां स्त्रीसहिताः तीर्थकराहारपुरुषषण्ढोनाः।

पूर्णेतर इवापूर्णे स्वकानुगत्यायुष्कं ज्ञेयम्॥301॥)

मणुसोघं वा भोगे दुब्भगचऽणीचसंढथीणतियं।

दुग्गदितित्थमपुण्णं संहदिसंठाणचरिमपणं॥302॥

हारदुहीणा एवं तिरिये मणुदुच्चगोदमणुवाऊं।

अवणिय पक्खिव णीचं तिरियदुतिरियाऽऽज्जोवं॥303॥ जुम्मं।

(मनुष्यौघ इव भोगे दुर्भगचतुर्नीचषण्ढस्त्यानत्रयम्।

दुर्गतितीर्थमपूर्णं संहतिसंस्थानचरमपञ्च॥302॥

आहारद्विहीना एवं तिरश्चि मनुद्विऽच्चगोत्रमानवायुः।

अपनीय प्रक्षिप्य नीचं तिर्यग्द्वितिर्यगायुरुद्योतम्॥303॥ युग्मम्।)

भोगं व सुरे णरचऽणराऽवज्जूण सुरचऽसुराऊं।

खिव देवे णेवित्थी इत्थिम्मि ण पुरिसवेदो य॥304॥

(भोग इव सुरे नरचतुर्नरायुर्वज्रोनित्वा सुरचतुः सुरायुः।

क्षिप्त्वा देवे नैव स्त्री स्त्रियां न पुरुषवेदश्च॥304॥)

अविरदठाणं एक्कं अणुद्दिसादिसु सुरोघमेव ह्वे।

भवणतिकप्पित्थीणं असंजदे णत्थि देवाणू॥305॥

(अविरतस्थानमेकमनुदिशादिषु सुरौघमेव भवेत्।

भवनत्रिकल्पीस्त्रीणामसंयते नास्ति देवानुः॥305॥)

तिरियअपुण्णं वेगे परघादचउक्कपुण्णसाहरणं।

एइंदियजसथीणतिथावरजुगलं च मिलिदव्वं॥306॥

रिणमंगोवंगतसं संहदिपंचक्खमेवमिह वियले।

अवणिय थावरजुगलं साहरणेयक्खमादावं॥307॥

खिव तसदुग्गदिदुस्सरमंगोवंगं सजादिसेवट्टं।

ओघं सयले साहरणिगिविगलादावथावरदुगूणं॥308॥ विसेसयं।

(तिर्यगपूर्णमिवैके परघातचतुष्कपूर्णसाधारणम्।

एकेन्द्रिययशःस्त्यानत्रिस्थावरयुगलं च मेलितव्यम्॥306॥

ऋणमङ्गोपाङ्गत्रसं संहतिपञ्चाक्षमेवमिह विकले।

अपनीय स्थावरयुगलं साधारणैकाक्षमातापम्॥307॥

क्षिप्त्वा त्रसदुर्गतिदुःस्वरमङ्गोपाङ्गं स्वजातिसृपाटिकम्।

ओघः सकले साधारणैकविकलातापस्थावरद्विकोनम्॥308॥

विशेषकम्।)

एयं वा पणकाये ण हि साहारणमिणं च आदावं।

दुसु तद्दुगमुज्जोवं कमेण चरिमम्हि आदावं॥309॥

(एकं वा पञ्चकाये न हि साधारणमिदं चातापम्।

द्वयोस्तद्विकमुद्योतः क्रमेण चरमे आतपः॥309॥)

ओघं तसे ण थावरदुगसाहरणेयतावमथ ओघं।

मणवयणसत्तगे ण हि ताविगिविगलं च थावराणुचओ॥310॥

(ओघस्त्रसे न स्थावरद्विकसाधारणैकातापमथ ओघः।

मनोवचनसप्तके न हि आतापैकविकलं च

स्थावरानुचतुष्कमू॥310॥)

अणुभयवचि वियलजुदा ओघमुराले ण हारदेवाऊ।

वेगुव्वछक्कणरतिरियाणु अपज्जत्तणिरयाऊ॥311॥

(अनुभयवचसि विकलयुता ओघ औराले नाहारदेवायुः।

वैगूर्वषट्कनरतिरियानुः अपर्याप्तनिरयायुः॥311॥)

तम्मिस्से पुण्णजुदा ण मिस्सथीणतियसरविहायदुगं।

परघादचओ अयदे णादेज्जदुदुब्भगं ण संढिच्छी॥312॥

साणे तेसिं छेदो वामे चत्तारि चोद्दसा साणे।

चउदालं वोछेदो अयदे जोगिम्हि छत्तीसं॥313॥ जुम्मं।

(तन्मिश्रे पूर्णयुता न मिश्रस्त्यानत्रयस्वरविहायोद्विकम्।

परघातचत्वार्ययतेऽनादेयद्विदुर्भगं न षण्ढस्त्री॥312॥

साने तेषां छेदो वामे चत्वारि चतुर्दश साने।

चतुश्चत्वारिंशत् व्युच्छेद अयते योगिनि षट्त्रिंशत्॥313॥ युग्मम्।)

देवोघं वेगुव्वे ण सुराणु पक्खिवेज्ज णिरयाऊ।

णिरयगदिहुंडसंढं दुग्गदि दुब्भगचओ णीचं॥314॥

(देवौघः वैगूर्वे न सुरानुः प्रक्षिप्य निरयायुः।

निरयगतिहुण्डषण्ढं दुर्गतिः दुर्भगत्वारि नीचम्॥314॥)

वेगुव्वं वा मिस्से ण मिस्स परघादसरविहायदुगं।

साणे ण हुंडसंढं दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं॥315॥

णिरयगदिआउणीचं ते खित्तयदेऽवणिज्ज थीवेदं।

छट्ठगुणं वाहारे ण थीणतियसंढथीवेदं॥316॥ जुम्मं॥

(वैगूर्वं वा मिश्रे न मिश्रं परघातस्वरविहायोद्विकम्।

साने न हुण्डषण्ढं दुर्भगानादेयमयशस्कम्॥315॥

निरयगतिआयुर्नीचं ताः क्षिपायतेऽपनीय स्त्रीवेदम्।

षष्ठगुणं वाऽहारे न स्त्यानत्रयषण्ढस्त्रीवेदम्॥316॥ युग्मम्।)

दुग्गदिदुस्सरसंहदि ओरालदु चरिमपंचसंठाणं।

ते तम्मिस्से सुस्सर परघाददुसत्थगदि हीणा॥317॥

(दुर्गतिदुःस्वरसंहतिः औरालद्वे चरमपञ्चसंस्थानम्।

ताः तन्मिश्रे सुस्वरं परघातद्विशस्तगतिः हीनाः॥317॥)

ओघं कम्मे सरगदिपत्तेयाहारुरालदुग मिस्सं।

उवघादपणविगुव्वदुथीणतिसंठाणसंहदी णत्थि॥318॥

(ओघः कर्मणि स्वरगतिप्रत्येकाहारौरालद्विकं मिश्रम्।

उपघातपञ्चवैगूर्वद्विस्त्यानत्रिसंस्थानसंहतिर्नास्ति॥318॥)

साणे थीवेदछिदी णिरयदुणिरयाउगं ण तियदसयं।

इगिवण्णं पणवीसं मिच्छादिसु चउसु वोच्छेदो॥319॥

(साने स्त्रीवेदछित्तिः निरयद्विनिरयायुष्कं न त्रिकदशकम्।

एक पञ्चाशत् पञ्चविंशतिः मिथ्यादिषु चतुर्षु व्युच्छेदः॥319॥)

मूलोघं पुंवेदे थावरचउणिरयजुगलतित्थयरं।

इगिविगलं थीसंढं तावं णिरयाउगं णत्थि॥320॥

(मूलौघः पुंवेदे स्थावरचतुर्निरययुगलतीर्थकरम्।

एकविकलं स्त्रीषण्ढमातपं निरयायुष्कं नास्ति॥320॥)

इत्थीवेदेवि तहा हारदुपुरिसूणमित्थिसंजुत्तं।

ओघं संढे ण हि सुरहारदुथीपुंसुराऽतित्थयरं॥321॥

(स्त्रीवेदेपि तथाऽऽहारद्विपुरुषोनं स्त्रीसंयुक्तम्।

ओघः षण्ढे न हि सुराहारद्विस्त्रीपुंसुरायुस्तीर्थकरम्॥321॥)

तित्थयरमाणमायालोहचऽक्कूणमोघमिह कोहे।

अणरहिदे णिगिविगलं तावऽणकोहाणुथावरचऽक्कं॥322॥

(तीर्थकरमानमायालोभचतुष्कोनमोघ इह क्रोधे।

अनरहिते नैकविकलमातापानक्रोधानुस्थावरचतुष्कम्॥322॥)

एवं माणादितिए मदिसुदअण्णाणगे दु सगुणोघं।

वेभंगेवि ण ताविगिविगलिंदी थावराणुचऊ॥323॥

(एवं मानादित्रये मतिश्रुताज्ञानके तु स्वगुणौघः।

वैभङ्गेपि नातापैकविकलेन्द्रियं स्थावरानुचत्वारि॥323॥)

सण्णाणपंचयादी दंसणमग्गणपदोत्ति सगुणोघं।

मणपज्जवपरिहारे णवरि ण संढित्थ हारदुगं॥324॥

(सद्ज्ञानपञ्चकादि दर्शनमार्गणापदमिति स्वगुणौघः।

मनःपर्ययपरिहारे नवरि न षण्ढस्त्री आहारद्वयम्॥324॥)

चक्खुम्मि ण साहारणताविगिबितिजाइ थावरं सुहुमं।

किण्हदुगे सगुणोघं मिच्छे णिरयाणुवोच्छेदो॥325॥

(चक्षुषि न साधारणातापैकद्वित्रिजातिः स्थावरं सूक्ष्मम्।

कृष्णद्विके स्वगुणौघो मिथ्ये निरयानुव्युच्छेदः॥325॥)

साणे सुराऽसुरगदिदेवतिरिक्खाणुवोछिदी एवं।

काओदे अयदगुणे णिरयतिरिक्खाणुवोछेदो॥326॥

(साने सुरायुःसुरगतिदेवतिर्यगानुव्युच्छित्तिरेवम्।

कापोते अयतगुणे निरयतिर्यगानुव्युच्छेदः॥326॥)

तेऽतिये सगुणोघं णादाविगिविगलथावरचऽक्कं।

णिरयदुतदाऽतिरियाणुगं णराणू ण मिच्छदुगे॥327॥

(तेजस्त्रये स्वगुणौघः नातापैकविकलस्थावरचतुष्कम्।

निरयद्वितदायुस्तिर्यगानुकं नरानु न मिथ्यद्विके॥327॥)

भव्विदरुवसमवेदगखइये सगुणोघमुवसमे खयिये।

ण हि सम्मुवसमे पुण णादितियाणू य हारदुगं॥328॥

(भव्येतरोपशमवेदकक्षायिके स्वगुणौघ ऽपशमे क्षायिके।

न हि सम्यगुपशमे पुनः नादित्रयानु चहारद्विकम्॥328॥)

मिस्साहारस्सययया खवगा चडमाणपढमपुव्वा य।

पढमुवसमया तमतमगुणपडिवण्णा य ण मरंति॥328-1॥

अणसंजोगे मिच्छे मुहुत्तअंतोत्ति णत्थि मरणं तु।

कदकरणिज्जं जाव दु सव्वपरट्ठाण अट्ठपदा॥328-2॥जुम्मं।

(मिश्राहाराश्रयकाः क्षपकाः चटमानप्रथमापूर्वाश्च।

प्रथमोपशमकाः तमस्तमोगुणप्रतिपन्नाश्च न मरन्ति॥328-1॥

अनसंयोगे मिथ्ये मुहूर्तान्तरिति नास्ति मरणं तु।

कृतकरणीयं यावत्तु सर्वपरस्थानानि अष्टपदानि॥328-2॥ युग्मम्।)

खाइयसम्मो देसो णर एव जदो तहिं ण तिरियाऊ।

उज्जोवं तिरियगदी तेसिं अयदम्हि वोच्छेदो॥329॥

(क्षायिकसम्यग् देशो नर एव यतस्तस्मिन् तिर्यगायुः।

उद्योतः तिर्यग्गतिस्तेषामयते व्युच्छेदः॥329॥)

सेसाणं सगुणोघं सण्णिस्सवि णत्थि तावसाहरणं।

थावरसुहुमिगिविगलं असण्णिणोवि य ण मणुदुच्चं॥330॥

वेगुव्वछ पणसंहदिसंठाण सुमगमण सुभगआठतियं।

आहारे सगुणोघं णवरि सव्वाणुपुव्वीओ॥331॥॥ जुम्मं॥

(शेषाणां स्वगुणौघः संज्ञिन अपि नास्ति आतपसाधारणम्।

स्थावरसूक्ष्मैकविकलमसंज्ञिनोपि च न मनुद्विउच्चम्॥330॥

वैगूर्वषट्पञ्चसंहतिसंस्थानं सुगमनं सुभगायुस्त्रयम्।

आहारे स्वगुणौघः नवरि न सर्वानुपूर्व्यः॥331॥ युग्मम्॥)

कम्मे व अणाहारे पयडीणं उदयमेवमादेसे।

कहियमिणं बलमाहवचंदच्चियणेमिचंदेण॥332॥

(कार्मे इवानाहारे प्रकृतीनामुदय एवमादेशे।

कथितोऽयं बलमाधवचन्द्रार्चितनेमिचन्द्रेण॥332॥)

तित्थाहारा जुगवं सव्वं तित्थं ण मिच्छगादितिए।

तस्सत्तकम्मियाणं तग्गुणठाणं ण संभवदि॥333॥

(तीर्थाहारा युगपत् सर्वं तीर्थं न मिथ्यकादित्रये।

तत्सत्त्वकर्मकाणां तद्गुणस्थानं न संभवति॥333॥)

चत्तारिवि खेत्ताइं आउगबंधेण होइ सम्मत्तं।

अणुवदमहव्वदाइं ण लहइ देवाउगं मोत्तुं॥334॥

(चतुर्णामपि क्षेत्राणामायुष्कबन्धेन भवति सम्यक्त्वम्।

अणुव्रतमहाव्रतानि न लभते देवायुष्कं मुक्त्वा॥334॥)

णिरयतिरिक्खसुराउगसत्ते ण हि देससयलवदखवगा।

अयदचउक्कं तु अणं अणियट्टीकरणचरिमम्हि॥335॥

जुगवं संजोगित्ता पुणोवि अणियट्टीकरणबहुभागं।

वोलिय कमसो मिच्छं मिस्सं सम्मं खवेदि कमे॥336॥ जुम्मं।

(निरयतिर्यक्सुरायुष्कसत्त्वे न हि देशसकलव्रतक्षपकाः।

अयतचतुष्कस्तु अनमनिवृत्तिकरणचरमे॥335॥

युगपत् विसंयोज्य पुनरपि अनिवृत्तिकरणबहुभागम्।

व्यतीत्य क्रमशो मिथ्यं मिश्रं सम्यक् क्षपयति क्रमेण॥336॥

युग्मम्।)

सोलट्ठेक्किगिछक्कं चदुसेक्कं बादरे अदो एक्कं।

खीणे सोलसऽजोगे बायत्तरि तेरूवत्तंते॥337॥

(षोडशाष्टैकैकषट्कं चतुर्ष्वेकं बादरे अत एकम्।

क्षीणे षोडशायोगे द्वासप्ततिस्त्रयोदश उपान्त्यान्त्ययोः॥337॥)

णिरयतिरिक्खदु वियलंथीणतिगुज्जोवतावएइंदी।

साहरणसुहुमथावर सोलं मज्झिमकसायट्ठं॥338॥

संढित्थि छक्कसाया पुरिसो कोहो य माण मायं च।

थूले सुहुमे लोहो उदयं वा होदि खीणम्हि॥339॥ जुम्मं।

(निरयतिर्यग्द्वि विकलस्त्यानत्रिकमुद्योतातपैकेन्द्रियम्।

साधारणसूक्ष्मस्थावरं षोडश मध्यमकषायाष्टौ॥338॥

षण्ढस्त्री षट्कषायाः पुरुषः क्रोधश्च मानं माया च।

स्थूले सूक्ष्मे लोभ उदयो वा भवति क्षीणे॥339॥ युग्मम्।)

देहादीफस्संता थिरसुहसरसुरविहायदुग दुभगं।

णिमिणाजसऽणादेज्जं पत्तेयापुण्ण अगुरुचऊ॥340॥

अणुदयतदियं णीचमजोगिदुचरिमम्मि सत्तवाच्छिण्णा।

उदयगबार णराणू तेरस चरिमम्हि वोच्छिण्णा॥341॥ जुम्मं।

(देहादिस्पर्शान्ताः स्थिरशुभस्वरसुरविहायोद्विकं दुर्भगम्।

निर्माणायशअनादेयं प्रत्येकापूर्णमगुरुचत्वारि॥340॥

अनुदयतृतीयं नीचमयोगिद्विचरिमे सत्त्वव्युच्छिन्नाः।

उदयगद्वादश नरानुः त्रयोदश चरमे व्युच्छिन्नाः॥341॥ युग्मम्।)

णभतिगिणभइगि दोद्दो दससोलट्ठगादिहीणेसु।

सत्ता ह्वंति एवं असहायपरक्कमुद्दिट्ठं॥342॥

(नभस्त्र्येकनभएकं द्वे द्वे दश दशषोडशाष्टकादिहीनेषु।

सत्ता भवन्ति एवमसहायपराक्रमोद्दिष्टम्॥342॥)

खवणं वा उवसमणे णवरि य संजलणपुरिसमज्झम्हि।

मज्झिमदोद्दो कोहादीया कमसोवसंता हु॥343॥

(क्षपणामिव उपशमने नवरि च संज्वलनपुरुषमध्ये।

मध्यमद्वौ द्वौ क्रोधादिकौ क्रमश उपशान्तौ हि॥343॥)

णिरयादिसु पयडिट्ठिदिअणुभागपदेसभेदभिण्णस्स।

सत्तस्स य सामित्तं णेदव्वमिदो जहाजोग्गं॥344॥

(निरयादिषु प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशभेदभिन्नस्य।

सत्त्वस्य च स्वामित्वं नेतव्यमितो यथायोग्यम्॥344॥)

तिरिए ण तित्थसत्तं णिरयादिसु तिय चउक्क चउ तिण्णि।

आऊणि होंति सत्ता सेसं ओघादु जाणेज्जो॥345॥

(तिरश्चि न तीर्थसत्त्वं निरयादिषु त्रीणि चतुष्कं चत्वारि त्रीणि।

आयूंषि भवन्ति सत्ताः शेषमोघात् ज्ञातव्यम्॥345॥)

ओघं वा णेरइये ण सुराऊ तित्थमित्थ तदियोत्ति।

छट्ठित्ति मणुस्साऊ तिरिए ओघं ण तित्थयरं॥346॥

(ओघ इव नैरयिके न सुरायुः तीर्थमस्ति तृतीय इति।

षष्ठ इति मनुष्यायुः तिरश्चि ओघो न तीर्थकरम्॥346॥)

एवं पंचतिरिक्खे पुण्णिदरे णत्थि णिरयदेवाऊ।

ओघं मणुसतियेसुवि अपुण्णगे पुण अपुण्णेव॥347॥

(एवं पञ्चतिरश्चि पूर्णेतरस्मिन् नास्ति निरयदेवायुः।

ओघः मनुष्यत्रयेष्वपि अपूर्णके पुनरपूर्णे इव॥347॥)

ओघं देवे ण हि णिरयाऊ सारोत्ति होदि तिरियाऊ।

भवणतियकप्पवासियइत्थीसु ण तित्थयरसत्तं॥348॥

(ओघः देवे न हि निरयायुः सार इति भवति तिर्यगायुः।

भवनत्रयकल्पवासिकस्त्रीषु न तीर्थकरसत्त्वं॥378॥)

ओघं पंचक्खतसे सेसिंदियकायगे अपुण्णं वा।

तेउदुगे ण णराऊ सव्वत्थुव्वेल्लणावि हवे॥349॥

(ओघः पञ्चाक्षत्रसे शेषेन्द्रियकायके अपूर्णं वा।

तेजोद्विके न नरायुः सर्वत्रोद्वेल्लनापि भवेत्॥349॥)

हारदु सम्मं मिस्सं सुरदुग णारयचउक्कमणुकमसो।

उच्चागोदं मणुदुगमुव्वेल्लिज्जंति जीवेहिं॥350॥

(आहारद्वि सम्यक् मिश्र सुरद्विकं नारकचतुष्कमनुक्रमशः।

उच्चैर्गोत्रं मनुद्विकमुद्वेलयन्ते जीवैः॥350॥)

चदुगदिमिच्छे चउरो इगिविगले छप्पि तिण्णि तेउदुगे।

सिय अत्थि णत्थि सत्तं सपदे उप्पणठाणेवि॥351॥

(चतुर्गतिमिथ्ये चतस्रः एकविकले षडपि तिस्रः तेजोद्विके।

स्यादस्ति नास्ति सत्त्वं स्वपदे उत्पन्नस्थानेपि॥351॥)

पुण्णेकारसजोगे साहारयमिस्सगेवि सगुणोघं।

वेग्गुव्वियमिस्सेवि य णवरि ण माणुसतिरिक्खाऊ॥352॥

(पूर्णैकादशयोगे साहारकमिश्रकेपि स्वगुणौघः।

वैगूर्विकमिश्रेपि च नवरि न मानुषतिर्यगायुः॥352॥)

ओरालमिस्सजोगे ओघं सुरणिरयआउगं णत्थि।

तम्मिस्सवामगे ण हि तित्थं कम्मेवि सगुणोघं॥353॥

(औरालमिश्रयोगे ओघः सुरनिरयायुष्कं नास्ति।

तन्मिश्रवामके न हि तीर्थं कार्मेपि स्वगुणौघः॥353॥)

वेदादाहारोत्ति य सगुणोघं णवरि संढथीखवगे।

किण्हदुगसुहतिलेस्सियवामेवि ण तित्थयरसत्तं॥354॥

(वेदादाहार इति च स्वगुणौघः नवरि षण्ढस्त्रीक्षपके।

कृष्णद्विकशुभत्रिलेश्यिकवामेपि न तीर्थकरसत्त्वम्॥354॥)

अभव्वसिद्धे णत्थि हु सत्तं तित्थयरसम्ममिस्साणं।

आहारचउक्कस्सवि असण्णिजीवे ण तित्थयरं॥355॥

(अभव्यसिद्धे नास्ति हि सत्त्वं तीर्थकरसम्यग्मिश्राणाम्।

आहारचतुष्कस्यापि असंज्ञिजीवे न तीर्थकरम्॥355॥)

कम्मेवाणाहारे पयडीणं सत्तमेवमादेसे।

कहियमिणं बलमाहवचंदच्चियणेमिचंदेण॥356॥

(कार्मे इवानाहारे प्रकृतीनां सत्त्वमेवमादेशे।

कथितमिदं बलमाधवचन्द्रार्चितनेमिचन्द्रेण॥356॥)

सो मे तिहुवणमहियो सिद्धो बुद्धो णिरंजणो णिच्चो।

दिसदु वरणाणलाहं बुहजणपरिपत्थणं परमसुद्धं॥357॥

(स मे त्रिभुवेनमहितः सिद्धो बुद्धो निरञ्जनो नित्यः।

दिशतु वरज्ञानलाभं बुधजनपरिप्रार्थनं परमशुद्धम्॥357॥)

3- सत्त्वस्थानभंगाधिकार

णमिऊण वड्ढमाणं कणयणिहं देवरायपरिपुज्जं।

पयडीण सत्तठाणं ओघे भंगे समं वोच्छं॥358॥

(नत्वा वर्द्धमानं कनकनिभं देवराजपरिपूज्यम्।

प्रकृतीनां सत्त्वस्थानमोघे भङ्गेन समं वक्ष्यामि॥358॥)

आउगबंधाबंधणभेदमकाऊण वण्णणं पढमं।

भेदेण य भंगसमं परूवणं होदि बिदियम्हि॥359॥

(आयुष्कबन्धाबन्धनमेदमकृत्वा वर्णनं प्रथमम्।

भेदेन च भङ्गसमं प्ररूपणं भवति द्वितीयस्मिन्॥359॥)

सव्वं तिगेग सव्वं चेगं छसु दोण्णि चउसु छद्दस य दुगे।

छस्सगदालं दोसु तिसट्ठी परिहीण पडि सत्तं जाणे॥360॥

(सर्वं त्रिकैकं सर्वं चैकं षट्सु द्वयं चतुर्षु षट् दश च द्विके।

षट्सप्तचत्वारिंशत् द्वयोः त्रिषष्टिः परिहीनं प्रति सत्त्वं जानीहि॥360॥)

सासणमिस्से देसे संजददुग सामगेसु णत्थी य।

तित्थाहारं तित्थं णिरयाऊ णिरयतिरियआउअणं॥361॥

(सासादनमिश्रे देशे संयतद्विके शामकेषु नास्ति च।

तीर्थाहारं तीर्थं निरयायुः निरयतिर्यगायुरनम्॥361॥)

बिगुणणव चारि अट्ठं मिच्छतिये अयदचउसु चालीसं।

तिय उवसमगे संते चउवीसा होंति सत्तेयं॥362॥

चउछक्कदि चउअट्ठं चउछक्क य होंति सत्ताठाणाणि।

आउगबंधाबंधे अजोगिअंते तदो भंगा॥363॥ जुम्मं।

(द्विगुणनव चत्वारि अष्ट मिथ्यत्रये अयतचतुर्षु चत्वारिंशत्।

त्रीणि उपशामके शान्ते चतुर्विंशतिः भवन्ति प्रत्येकम्॥362॥

चतुःषट्कृतिः चतुरष्ट चतुःषट्कं च भवन्ति सत्त्वस्थानानि।

आयुष्कवन्धाबन्धे अयोग्यन्ते ततो भंगाः॥363॥ युग्मम्।)

पण्णास बार छक्कदि वीससयं अट्ठदाल दुसु दालं।

अडवीसा बासट्ठी अडचउवीसा य अट्ठ चउ अट्ठ॥364॥

(पञ्चाशत् द्वादश षट्कृतिः विंशशतं अष्टचत्वारिंशत् द्वयोः

चत्वारिंशत्।

अष्टाविंशतिः द्वाषष्टिः अष्टचतुर्विंशतिः च अष्ट चत्वारि अष्ट॥364॥)

दुतिछस्सत्तट्ठणवेक्करसं सत्तरसमूणवीसमिगिवीसं।

हीणा सव्वे सत्ता मिच्छे बद्धाउगिदरमेगूणं॥365॥

(द्वित्रिषट्सप्ताष्टनवैकादश सप्तदशोनविंशमेकविशम।

हीना सर्वा सत्ता मिथ्ये बद्धायुष्कमितरदेकोनम्॥365॥)

तिरियाउगदेवाउगमण्णदराउगदुगं तहा तित्थं।

देवतिरियाउसहिया हारचउक्कं तु छच्चेदे॥366॥

आउदुगहारतित्थं सम्मं मिस्सं च तह य देवदुगं।

णारयछक्कं च तहा णराउउच्चं च मणुवदुगं॥367॥ जुम्मं।

(तिर्यगायुष्कदेवायुष्कमन्यतरायुष्कद्विकं तथा तीर्थम्।

देवतिर्यगायुस्सहितमाहारचतुष्कं तु षट्चैताः॥366॥

आयुद्विकाहारतीर्थं सम्यं मिश्रं च तथा च देवद्विकम्।

नारकषट्कं च तथा नरायुरुच्चं च मानवद्विकम्॥367॥ युग्मम्)

उव्वेल्लिददेवदुगे बिदियपदे चारि भंगया एवं।

सपदे पढमो बिदियं सो चेव णरेसु उप्पण्णो॥368॥

वेगुव्वअट्ठरहिदे पंचिंदियतिरियजादिसुववण्णे।

सुरछब्बंधे तदियो णरेसु तब्बंधणे तुरियो॥369॥ जुम्मं।

(उद्वेलितदेवद्विके द्वितीयपदे चत्वारो भंगा एवम्।

स्वपदे प्रथमो द्वितीयः स चैव नरेषु उत्पन्नः॥368॥

वैगूर्वाष्टरहिते पञ्चेन्द्रियतिर्यग्जातिषूपपन्ने।

सुरषड्बन्धे तृतीयो नरेषु तद्बन्धने तुरीयः॥369॥ युग्मम्।)

णारकछक्कुव्वेल्ले आउगबंधुज्झिदे दुभंगा हु।

इगिविगलेसिगिभंगो तम्मि णरे बिदियमुप्पण्णे॥370॥

(नारकषट्कोद्वेल्ये आयुर्बन्धोज्झिते द्विभंगौ हि।

एकविकलेष्वेकभंगः तस्मिन्नरे द्वितीयमुत्पन्ने॥370॥)

बिदिये तुरिये पणगे छट्ठे पंचेव सेसगे एक्कं।

बिगचउपणछस्सत्तयठाणे चत्तारि अट्ठगे दोण्णि॥371॥

(द्वितीये चतुर्थे पञ्चमे षष्ठे पञ्चैव शेषके एकः।

द्विकचतुःपञ्चषट्सप्तमस्थाने चत्वारः अष्टमे द्वौ॥371॥)

सत्ततिगं आसाणे मिस्से तिगसत्तसत्तएयारा।

परिहीण सव्वसत्तं बद्धस्सियरस्स एगूणं॥372॥

(सप्तत्रिकमासाने मिश्रे त्रिकसप्तसप्तैकादश।

परिहीनं सर्वसत्त्वं बद्धस्येतरस्यैकोनम्॥372॥)

तित्थाहारचउक्कं अण्णदराउगदुगं च सत्तेदे।

हारचउक्कं वज्जिय तिण्णि य केइं समुद्दिट्ठं॥373॥

(तीर्थाहारचतुष्कमन्यतरायुष्कद्विकं च सप्तैताः।

आहारचतुष्कं वर्जयित्वा तिस्रश्च कैश्चित् समुद्दिष्टम्॥373॥)

तित्थण्णदराउदुगं तिण्णिवि अणसहिय तह य सत्तं य।

हारचउक्के सहिया ते चेव य होंति एयारा॥374॥

(तीर्थान्यतरायुर्द्विकं तिस्र अपि अनसहिताः तथा च सत्त्वं च।

आहारचतुष्केण सहितास्ताः चैव च भवन्ति एकादश॥374॥)

साणे पण इगि भंगा बद्धस्सियरस्स चारि दो चेव।

मिस्से पणपण भंगा बद्धस्सियरस्स चउ चउ णेया॥375॥

(साने पञ्च एको भङ्गा बद्धस्येतरस्य चत्वारो द्वौ चैव।

मिश्रे पञ्चपञ्च भङ्गा बद्धस्येतरस्य चत्वारश्चत्वारो ज्ञेयाः॥375॥)

दुग छक्क सत्त अट्ठं णवरहियं तह य चउपडिं किच्चा।

णभमिगि चउ पण हीणं बद्धस्सियरस्स एगूणं॥376॥

(द्विकं षट्कं सप्त अष्ट नवरहितं तथा च चतुःपङ्क्तीः कृत्वा।

नभमेकं चतुष्कं पञ्च हीनं बद्धस्येतरस्यैकोनम्॥376॥)

तित्थाहारे सहियं तित्थूणं अह य हारचउहीणं।

तित्थाहारचउक्केणूणं इति चउपडिट्ठाणं॥377॥

(तीर्थाहारेण सहितं तीर्थोनमथ चाहारचतुर्हीनम्।

तीर्थाहारचतुष्केनोनमिति चतुःपङ्क्तिस्थानम्॥377॥)

अण्णदरआउसहिया तिरियाऊ ते च तह य अणसहिया।

मिच्छं मिस्सं सम्मं कमेण खविदे हवे ठाणा॥378॥

(अन्यतरायुः सहितं तिर्यगायुः ते च तथा च अनसहिते।

मिथ्यं मिश्रं सम्यक्त्वं क्रमेण क्षपिते भवेत् स्थानम्॥378॥)

आदिमपंचट्ठाणे दुगदुगभंगा हवंति बद्धस्स।

इयरस्सवि णादव्वा तिगतिगइगि तिण्णितिण्णेव॥379॥

(आदिमपञ्चस्थाने द्विकद्विकभङ्गौ भवतः बद्धस्य।

इतरस्यापि ज्ञातव्याः त्रिकत्रिकैकं त्रयस्त्रय एव॥379॥)

बिदियस्सवि पणठाणे पण पण तिग तिण्ण चारि बद्धस्स।

इयरस्स होंति णेया चउचउइगिचारि चत्तारि॥380॥

(द्वितीयस्यापि पञ्चस्थाने पञ्च पञ्च त्रिकं त्रयः चत्वारः बद्धस्य।

इतरस्य भवन्ति ज्ञेया चतुश्चतुरेकचत्वारः चत्वारः॥380॥)

आदिल्लदससु सरिसा भंगेण य तिदियदसयठाणाणि।

बिदियस्स चउत्थस्स य दसठाणाणि य समा होंति॥381॥

(आद्यदशसु सदृशा भंगेन च तृतीयदशकस्थानानि।

द्वितीयस्य चतुर्थस्य च दशस्थानानि च समानि भवन्ति॥381॥)

देसतियेसुवि एवं भंगा एक्केक्क देसगस्स पुणो।

पडिरासि बिदियतुरियस्सादीबिदियम्मि दो भंगा॥382॥

(देशत्रयेष्वपि एवं भङ्गा एकैकं देशकस्य पुनः।

प्रतिराशि द्वितीयचतुर्थस्यादिद्वितीयस्मिन् द्वौ भङ्गौ॥382॥)

दुगछक्कतिण्णिवग्गेणूणापुव्वस्स चउपडिं किच्चा।

णभमिगिचउपणहीणं बद्धस्सियरस्स एगूणं॥383॥

(द्विकषट्कत्रिवर्गेनोनानि अपूर्वस्य चतुःप्रतिं कृत्वा।

नभैकचतुःपञ्चहीनं बद्धस्येतरस्यैकोनम्॥383॥)

णिरयतिरियाउ दोण्णिवि पढमकसायाणि दंसणतियाणि।

हीणा एदे णेया भंगे एक्केक्कगा होंति॥384॥

(निरयतिर्यगायुषी द्वे अपि प्रथमकषाया दर्शनत्रीणि।

हीनानि एतानि ज्ञेयानि भङ्गा एकैकका भवन्ति॥384॥)

एवं तिसु उवसमगे खवगापुव्वम्मि दसहिं परिहीणं।

सव्वं चउपडि किच्चा णभमेक्कं चारि पण हीणं॥385॥

(एवं त्रिषु उपशमकेषु क्षपकापूर्वे दशभिः परिहीनम्।

सर्वं चतुःप्रतिकं कृत्वा नभमेकं चत्वारि पञ्च हीनम्॥385॥)

एदे सत्तट्ठाणा अणियट्टिस्सवि पुणोवि खविदेवि।

सोलस अट्ठेक्केक्कं छक्केक्कं एक्कमेक्क तहा॥386॥

(एतानि सत्त्वस्थानानि अनिवृत्तेरपि पुनरपि क्षपितेपि।

षोडशाष्टैकैकं षट्कैकमेकमेकं तथा॥386॥)

भंगा एक्केक्का पुण णउंसयक्खविदचउसु ठाणेसु।

बिदियतुरियेसु दो दो भंगा तित्थयरहीणेसु॥387॥

(भंगाः एकैकाः पुनः नपुन्सकक्षपितचतुर्षु स्थानेषु।

द्वितीयतुरीययोः द्वौ द्वौ भङ्गौ तीर्थकरहीनयोः॥387॥)

थीपुरिसोदयचडिदे पुव्वं संढं खवेदि थी अत्थि।

संढस्सुदये पुव्वं थी खविदं संढमत्थित्ति॥388॥

(स्त्रीपुरुषोदयचटिते पूर्वं षण्ढं क्षपयति स्त्री अस्ति।

षण्ढस्योदये पूर्वं स्त्रीक्षपितं षण्ढमस्तीति॥388॥)

अणियट्टिचरिमठाणा चत्तारिवि एक्कहीण सुहुमस्स।

ते इगिदोण्णिविहीणं खीणस्सवि होंति ठाणाणि॥389॥

(अनिवृत्तिचरमस्थानानि चत्वार्यपि एकहीनं सूक्ष्मस्य।

तानि एकद्विविहीनं क्षीणस्यापि भवन्ति स्थानानि॥389॥)

ते चोद्दसपरिणा जोगिस्स अजोगिचरिमगेवि पुणो।

बावत्तरिमडसट्ठिं दुसु दुसु हीणेसु दुगदुगा भङ्गा॥390॥

(तानि चतुर्दशपरिहीनानि योगिन अयोगिचरमकेपि पुनः।

द्वासप्ततिरष्टषष्ठिः द्वयोर्द्वयोः हीनयोः द्विकद्विकौ भङ्गाः॥390॥)

णत्थि अणं उवसमगे खवगापुव्वं खवित्तु अट्ठा य।

पच्छा सोलादीणं खवणं इदि केइं णिद्दिट्ठं॥391॥

(नास्ति अनमुपशमके क्षपकापूर्वं क्षपयित्वा अष्टौ च।

पश्चात् षोडशादीनां क्षपणमिति कैर्निर्दिष्टम्॥391॥)

अणियट्टिगुणट्ठाणे मायारहिदं च ठाणमिच्छंति।

ठाणा भंगपमाणा केई एवं परूवेंति॥392॥

(अनिवृत्तिगुणस्थाने मायारहितं च स्थानमिच्छन्ति।

स्थानानि भङ्गप्रमाणानि केचिदेवं प्ररूपयन्ति॥392॥)

अट्ठारह चउ अट्ठं मिच्छतिये उवरि चाल चउठाणे।

तिसु उवसमगे संते सोलस सोलस हवे ठाणा॥393॥

(अष्टादश चत्वारि अष्ट मिथ्यत्रये उपरि चत्वारिंशत् चतुःस्थाने।

त्रिषु उपशमके शान्ते षोडश षोडश भवंति स्थानानि॥393॥)

पण्णेकारं छक्कदि वीससयं अट्ठदाल दुसु तालं।

वीसडतिण्णं वीसं सोलट्ठ य चारि अट्ठेव॥394॥

(पञ्चाशदेकादश षट्कृतिः विंशशतमष्टचत्वारिंशत् द्वयोश्चत्वारिंशत्।

विंशाष्टत्रिंशत् विंशं षोडशाष्ट च चत्वार अष्टैव॥394॥)

एवं सत्तट्ठाणं सवित्थरं वण्णियं मए सम्मं।

जो पढइ सुणइ भावइ सो वावइ णिव्वुदिं सोक्खं॥395॥

(एवं सत्त्वस्थानं सविस्तरं वर्णितं मया सम्यक्।

यः पठति शृणोति भावयति स प्राप्नोति निर्वृतिं सौख्यम्॥395॥)

वरइंदणंदिगुरुणो पासे सोऊण सयलसिद्धंतं।

सिरिकणयणंदिगुरुणा सत्ताट्ठाणं समुद्दिट्ठं॥396॥

(वरेन्द्रनन्द्रिगुरोः पार्श्वे श्रुत्वा सकलसिद्धान्तम्।

श्रीकनकनन्दिगुरुणा सत्वस्थानं समुद्दिष्टम्॥396॥)

जह चक्केण य चक्की छक्खंडं साहियं अविग्घेण।

तह मइचक्केण मया छक्खंडं सहियं सम्मं॥397॥

(यथा चक्रेण च चक्रिणा षट्खण्डं साधितमविघ्नेन।

तथा मतिचक्रेण मया षट्खण्डं साधितं सम्यक्॥397॥)

4- त्रिचूलिकाधिकार

असहायजिणवरिंदे असहायपरक्कमे महावीरे।

पणमिय सिरसा वोच्छं तिचूलियं सुणह एयमणा॥398॥

(असहायजिनवरेन्द्रानसहायपराक्रमान् महावीरान्।

प्रणम्य शिरसा वक्ष्यामि त्रिचूलिकं शृणुतैकमनसः॥398॥)

किं बंधो उदयादो पुव्वं पुच्छा समं विणस्सदि सो।

सपरोभयोदयो वा णिरंतरो सांतरो उभयो॥399॥

(को बन्ध उदयात्पूर्वं पश्चात् समं विनश्यति सः।

स्वपरोभयोदयो वा निरन्तरः सान्तर उभयः॥399॥)

देवचउक्काहारदुगज्जसदेवाउगाण सो पच्छा।

मिच्छत्तादावाणं णराणुथावरचउक्काणं॥400॥

पण्णरकसायभयदुचउजाइपुरिसवेदाणं।

सममेक्कत्तीसाणं सेसिगिसीदाण पुव्वं तु॥401॥ जुम्मं।

(देवचतुष्काहारद्विकायशोदेवायुष्कानां स पश्चात्।

मिथ्यात्वातापानां नरानुस्थावरचतुष्कानाम्॥400॥

पञ्चदशकषायभयद्विकहास्यद्विचतुर्जातिपुरुषवेदानाम्।

सममेकत्रिंशतां शेषैकाशीतेः पूर्वं तु॥401॥ युग्मम्।)

सुरणिरयाऊ तित्थं वेगुव्वियछक्कहारमिदि जेसिं।

परउदयेण य बंधो मिच्छं सुहुमस्स घादीओ॥402॥

तेजदुगं वण्णचऊ थिरसुहजुगलगुरुणिमिणधुवउदया।

सोदयबंधा सेसा बासीदा उभयबंधाओ॥403॥ जुम्मं।

(सुरनिरयायुषी तीर्थं वैगूर्विकषट्काहारमिति यासाम्।

परोदयेन च बन्धो मिथ्यं सूक्ष्मस्य घातिन्यः॥402॥

तेजोद्विकं वर्णचत्वारि स्थिरशुभयुगलागुरुनिमार्णध्रुवोदयाः।

स्वोदयबन्धाः शेषाः द्वयशीतिरुभयबन्धाः॥403॥ युग्मम्।)

सत्तेताल धुवावि य तित्थाहाराउगा णिरंतरगा।

णिरयदुजाइचउक्कं संहदिसंठाणपणपणगं॥404॥

दुग्गमणादावदुगं थावरदसगं असादसंढित्थि।

अरदीसोगं चेदे सांतरगा होंति चोत्तीसा॥405॥ जुम्मं।

(सप्तचत्वारिंशत् ध्रुवा अपि च तीर्थहारायुष्का निरन्तरकाः।

निरयद्विजातिचतुष्कं संहतिसंस्थानपञ्चपञ्चकम्॥404॥

दुर्गमनातापद्विकं स्थावरदशकमसातषण्ढस्त्री।

अरतिः शोकं चैताः सान्तरका भवन्ति चतुस्त्रिंशत्॥405॥

युग्मम्॥)

सुरणरतिरियोरालियवेगुव्वियदुगपसत्थगदिवज्जं।

परघाददुसमचउरं पंचिंदिय तसदसं सादं॥406॥

(सुरनरतिर्यगौरालिकवैगूर्विकद्विकप्रशस्तगतिवज्रम्।

परघातद्विसमचतुरस्रं पञ्चेन्द्रियं त्रसदश सातम्॥406॥)

हस्सरदिपुरिसगोददु सप्पडिवक्खम्मि सांतरा होंति।

णट्ठे पुण पडिवक्खे णिरंतरा होंति बत्तीसा॥407॥ जुम्मं।

(हास्यरतिपुरुषगोत्रद्विकं सप्रतिपक्षे सान्तरा भवन्ति।

नष्टे पुनः प्रतिपक्षे निरन्तरा भवन्ति द्वात्रिंशत्॥407॥ युग्मम्।)

जत्थ वरणेमिचंदो महणेण विणा सुणिम्मलो जादो।

सो अभयणंदिणिम्मलसुओवही हरउ पावमलं॥408॥

(यत्र वरनेमिचन्द्रो मथनेन विना सुनिर्मलो जातः।

स अभयनन्दिनिर्मलश्रुतोदधिर्हरतु पापमलम्॥408॥)

उव्वेलणविज्झादो अधापवत्तो गुणो च सव्वो य।

संकमदि जेहिं कम्मं परिणामवसेण जीवाणं॥409॥

(उद्वेलनविध्यात अघःप्रवृत्तः गुणश्च सर्वश्च।

संक्रामति यैः कर्म परिणामवशेन जीवानाम्॥409॥)

बंधे संकामिज्जदि णोबंधे णत्थि मूलपयडीणं।

दंसणचरित्तमोहे आउचउक्के ण संकमणं॥410॥

(बन्धे संक्रामति नोबन्धे नास्ति मूलप्रकृतीनाम्।

दर्शनचरित्रमोहे आयुश्चतुष्के न संक्रमणम्॥410॥)

सम्मं मिच्छं मिस्सं सगुणट्ठाणम्मि णेव संकमदि।

सासणमिस्से णियमा दंसणतियसंकमो णत्थि॥411॥

(सम्यं मिथ्यं मिश्रं स्वगुणस्थाने नैव संक्रामति।

सासनमिश्रे नियमाद्दर्शनत्रिकसंक्रमो नास्ति॥411॥)

मिच्छे सम्मिस्साणं अधापवत्तो मुहुत्तअंतोत्ति।

उव्वेलणं तु तत्तो दुचरिमकंडोत्ति णियमेण॥412॥

(मिथ्ये सम्यग्मिश्रयोरधःप्रवृत्तः मुहूर्तान्तरिति।

उद्वेलनं तु ततो द्विचरमकाण्ड इति नियमेन॥412॥)

उव्वेलणपयडीणं गुणं तु चरिमम्हि कंडये णियमा।

चरिमे फालिम्मि पुणो सव्वं च य होदि संकमणं॥413॥

(उद्वेलनप्रकृतीनां गुणं तु चरमे काण्डके नियमात्।

चरमे फालौ पुनः सर्वं च च भवति संक्रमणम्॥413॥)

तिरियदुजाइचउक्कं आदावुज्जोवथावरं सुहुमं।

साहारणं च एदे तिरियेयारं मुणेयव्वा॥414॥

(तिर्यग्द्विजातिचतुष्कमातापोद्योतस्थावरं सूक्ष्मम्।

साधारणं चैताः तिर्यगेकादश मन्तव्याः॥414॥)

आहारदुगं सम्मं मिस्सं देवदुगणारयचउक्कं।

उच्चं मणुदुगमेदे तेरस उव्वेल्लणा पयडी॥415॥

(आहारद्विकं सम्यं मिश्रं देवद्विकनारकचतुष्कम्।

उच्चं मनुद्विकमेताः त्रयोदश उद्वेलना प्रकृतयः॥415॥)

बंधे अधापवत्तो विज्झादं सत्तमोत्ति हु अबंधे।

एत्तो गुणो अबंधे पयडीणं अप्पसत्थाणं॥416॥

(बन्धे अधःप्रवृत्तो विध्यातः सप्तम इति हि अबन्धे।

एतो गुणः अबन्धे प्रकृतीनामप्रशस्तानाम्॥416॥)

तिरियेयारुव्वेल्लणपयडी संजलणलोहसम्ममिस्सूणा।

मोहा थीणतिगं च य बावण्णे सव्वसंकमणं॥417॥

(तिर्यगेकादशोद्वेलनप्रकृतयः संज्वलनलोभसम्यग्मिश्रोनाः।

मोहाः स्त्यानत्रिकं च च द्वापञ्चाशत् सर्वसंक्रमणम्॥417॥)

उगुदालतीससत्तयवीसे एक्केक्कबारतिचउक्के।

इगिचदुदुगतिगतिगचदुपणदुगदुगतिण्णि संकमणा॥418॥

(एकोनचत्वारिंशत्त्रिंशत्सप्तकविंशे एकैकद्वादशत्रिचतुष्के।

एकचतुर्द्विकत्रिकत्रिकचतुःपञ्चद्विकद्विकत्रयः संक्रमणाः॥418॥)

सुहुमस्स बंधघादी सादं संजलणलोहपंचिंदी।

तेजदुसमवण्णचऊ अगुरुगपरघादउस्सासं॥419॥

सत्थगदी तसदसयं णिमिणुगुदाले अधापवत्तो दु।

थीणतिबारकसाया संढित्थी अरइ सोगो य॥420॥

तिरियेयारं तीसे उव्वेलणहीणचारि संकमणा।

णिद्दा पयला असुहं वण्णचउक्कं च उवघादे॥421॥

सत्तण्हं गुणसंकममधापवत्तो य दुक्खमसुहगदी।

संहदि संठाणदसं णीचापुण्णथिरछक्कं च॥422॥

वीसण्हं विज्झादं अधापवत्तो गुणो य मिच्छत्ते।

विज्झादगुणे सव्वं सम्मे विज्झादपरिहीणा॥423॥ कुलयं।

(सूक्ष्मस्य बंधघातिन्यः सातं संज्वलनलोभपञ्चेन्द्रियम्।

तेजोद्विसमवर्णचतुरगुरुकपरघातोच्छ्वासम्॥419॥

शस्तगतिः त्रसदशकं निर्माणमेकोनचत्वारिंशत्सु अधःप्रवृत्तस्तु।

स्त्यानत्रिद्वादशकषायाः षण्ढस्त्री अरतिः शोकश्च॥420॥

तिर्यगेकादश त्रिंशत्सु उद्वेलनहीनचत्वारः संक्रमणाः।

निद्राप्रचला अशुभं वर्णचतुष्कं च उपघातम्॥421॥

सप्तानां गुणसंक्रमोऽधःप्रवृत्तश्च दुःखमशुभगतिः।

संहतिसंस्थानदश नीचापूर्णमस्थिरषट्कं च॥422॥

विंशानां विध्यातः अधःप्रवृत्तो गुणश्च मिथ्यात्वे।

विध्यातगुणौ सर्वः सम्यञ्चि विध्यातपरिहीनाः॥423॥ कुलकम्।)

सम्मविहीणुव्वेल्ले पंचेव य तत्थ होंति संकमणा।

संजलणतिये पुरिसे अधापवत्तो य सव्वो य॥424॥

(सम्यग्विहीनोद्वेल्ये पञ्चैव च तत्र भवन्ति संक्रमणाः।

संज्वलनत्रये पुरुषे अधःप्रवृत्तश्च सर्वश्च॥424॥)

ओरालदुगे वज्जे तित्थे विज्झादधापवत्तो य।

हस्सरदिभयजुगुच्छे अधापवत्तो गुणो सव्वो॥425॥

(औरालद्विके वज्रे तीर्थे विध्यातोऽधःप्रवृत्तश्च।

हास्यरतिभयजुगुप्सायामधःप्रवृत्तो गुणः सर्वः॥425॥)

सम्मत्तूणुव्वेलणथीणतितीसं च दुक्खवीसं च।

वज्जोरालदुतित्थं मिच्छं विज्झादसत्तट्ठी॥426॥

(सम्यक्त्वोनोद्वेलनस्त्यानत्रित्रिंशच्च दुःखविंशश्च।

वज्रौरालद्वितीर्थं मिथ्यं विध्यातसप्तषष्टिः॥426॥)

मिच्छूणिगिवीससयं अधापवत्तस्त होंति पयडीओ।

सुहुमस्स बंधघादिप्पहुदी उगुदालुरालदुगतित्थं॥427॥

(मिथ्योनैकविंशशतमधःप्रवृत्तस्य भवन्ति प्रकृतयः।

सूक्ष्मस्य बंधघातिप्रभृतयः एकोनचत्वारिंशदौरालद्विकतीर्थम्॥427॥)

वज्जं पुंसंजलणति ऊणा गुणसंकमस्स पयडीओ।

पणहत्तरिसंखाओ पयडीणियमं विजाणाहि॥428॥ जुम्मं।

(वज्रं पुंसंज्वलनत्रिकमूना गुणसंक्रमस्य प्रकृतयः।

पञ्चसप्ततिसंख्याः प्रकृतिनियमं विजानीहि॥428॥ युग्मम्।)

ठिदिअणुभागाणं पुण बंधो सुहुमोत्ति होदि णियमेण।

बंधपदेसाणं पुण संकमणं सुहुमरागोत्ति॥429॥

(स्थित्यनुभागयोः पुनः बन्धः सूक्ष्म इति भवति नियमेन।

बन्धप्रदेशानां पुनः संक्रमणं सूक्ष्मराग इति॥429॥)

सव्वस्सेक्कं रूवं असंखभागो दु पल्लछेदाणं।

गुणसंकमो दु हारो ओकट्टुक्कट्टणं तत्तो॥430॥

हारं अधापवत्तं तत्तो जोगम्हि जो दु गुणगारो।

णाणागुणहाणिसला असंखगुणिदक्कमा होंति॥431॥

तत्तो पल्लसलायच्छेदहिया पल्लछेदणा होंति।

पल्लस्स पढममूलं गुणहाणीवि य असंखगुणिदकमा॥432॥

अण्णोण्णब्भत्थं पुण पल्लमसंखेज्जरूवगुणिदकमा।

संखेज्जरूवगुणिदं कम्मुक्कस्सट्ठिदी होदि॥433॥

अंगुलअसंखभागं विज्झादुव्वेल्लणं असंखगुणं।

अणुभागस्स य णाणागुणहाणिसला अणंताओ॥434॥

गुणहाणिअणंतगुणं तस्स दिवड्ढं णिसेयहारो य।

अहियकमाणण्णोण्णब्भत्थो रासी अणंतगुणो॥435॥ कुलयं।

(सर्वस्यैकं रूपमसंख्यभागस्तु पल्यच्छेदानाम्।

गुणसंक्रमस्तु हार अपकर्षणोत्कर्षणं ततः॥430॥

हारः अधःप्रवृत्तस्ततो योगे यस्तु गुणकारः।

नानागुणहानिशला असंख्यगुणितक्रमा भवन्ति॥431॥

ततः पल्यशलाकच्छेदाधिकाः पल्यच्छेदना भवन्ति।

पल्यस्य प्रथममूलं गुणहानिरपि च असंख्यगुणितक्रमा॥432॥

अन्योन्याभ्यस्तं पुनः पल्यमसंख्येयरूपगुणितक्रमम्।

संख्येरूपगुणिता कर्मोत्कृष्टस्थितिर्भवति॥433॥

अङ्गुलासंख्यमागं विध्यातोद्वेलनमसंख्यगुणम्।

अनुभागस्य च नानागुणहानिशला अनन्ताः॥434॥

गुणहानिरनन्तगुणा तस्या व्यर्धं निषेकहारश्च।

अधिकक्रमाणामन्योन्याभ्यस्तो राशिरनन्तगुणः॥435॥ कुलकम्।)

जस्स य पायपसायेणणंतसंसारजलहिमुत्तिण्णो।

वीरिंदणंदिवच्छो णमामि तं अभयणंदिगुरुं॥436॥

(यस्य च पादप्रसादेनानन्तसंसारजलधिमुत्तीर्णः।

वीरेन्द्रनन्दिवत्सो नमामि तमभयनन्दिगुरुम्॥436॥)

बंधुक्कट्टण करणं संकममोकट्टुदीरणा सत्तं।

उदयुवसामणिधत्ती णिकाचणा होदि पडिपयडी॥437॥

(बंधोत्कर्षणकरणं संक्रममपकर्षणोदीरणा सत्त्वम्।

उदयोपशान्तनिधत्तिः निःकाचना भवति प्रतिप्रकृति॥437॥)

कम्माणं संबंधो बंधो उक्कट्टणं हवे वड्ढी।

संकमणमणत्थगदी हाणी ओकट्टणं णाम॥438॥

(कर्मणां संबन्धो बन्ध उत्कर्षणं वृद्धिर्भवेत्।

संक्रमणमन्यत्रगतिः हानिरपकर्षणं नाम॥438॥)

अण्णत्थठियस्सुदये संथुहणमुदीरणा हु अत्थित्तं।

सत्तं सकालपत्तं उदओ होदित्ति णिद्दिट्ठो॥439॥

(अन्यत्र स्थितस्योदये संस्थापनमुदीरणा हि अस्तित्वम्।

सत्त्वं स्वकालप्राप्तमुदयो भवतीति निर्दिष्टः॥439॥)

उदये संकममुदये चउसुवि दादुं कमेण णो सक्कं।

उवसंतं च णिधत्तिं णिकाचिदं होदि जं कम्मं॥440॥

(उदये संक्रमोदययोः चतुर्ष्वपि दातुं क्रमेण नो शक्यम्।

उपशान्तं च निधत्तिः निकाचितं भवति यत् कर्म॥440॥)

संकमणाकरणूणा णवकरणा होंति सव्वआऊणं।

सेसाणं दसकरणाअपुव्वकरणोत्ति दसकरणा॥441॥

(संक्रमणाकरणोनानि नवकरणानि भवन्ति सर्वायुषाम्।

शेषाणां दशकरणान्यपूर्वकरण इति दशकरणानि॥441॥)

आदिमसत्तेव तदो सुहुमकसाओत्ति संकमेण विणा।

छच्च सजोगित्ति तदो सत्तं उदयं अजोगित्ति॥442॥

(आदिमसप्तैव ततः सूक्ष्मकषाय इति संक्रमेण विना।

षट् च सयोगीति ततः सत्त्वमुदय अयोगीति॥442॥)

णवरि विसेसं जाणे संकममवि होदि संतमोहम्मि।

मिच्छस्स य मिस्सस्स य सेसाणं णत्थि संकमणं॥443॥

(नवरि विशेषं जानीहि संक्रममपि भवति शान्तमोहे।

मिथ्यस्य च मिश्रस्य च शेषाणां नास्ति संक्रमणम्॥443॥)

बंधुक्कट्टणकरणं सगसगबंधोत्ति होदि णियमेण।

संकमणं करणं पुण सगसगजादीण बंधोत्ति॥444॥

(बन्धोत्कर्षणकरणं स्वकस्वकबन्ध इति भवति नियमेन।

संक्रमणं करणं पुनः स्वकस्वकजातीनां बन्ध इति॥444॥)

ओक्कट्टणकरणं पुण अजोगिसत्ताण जोगिचरिमोत्ति।

खीणं सुहुमंताणं खयदेसं सावलीयसमयोत्ति॥445॥

(अपकर्षणकरणं पुनरयोगिसत्त्वानां योगिचरम इति।

क्षीणं सूक्ष्मान्तानां क्षयदेशं सावलिकसमय इति॥445॥)

उवसंतोत्ति सुराऊ मिच्छत्तिय खवगसोलसाणं च।

खयदेसोत्ति य खवगे अट्ठकसायादिवीसाणं ॥446॥

(उपशान्त इति सुरायुः मिथ्यत्रयं क्षपकषोडशानां च।

क्षयदेश इति च क्षपके अष्टकषायादिविंशानाम्॥446॥)

मिच्छतियसोलसाणं उवसमसेढिम्मि संतमोहोत्ति।

अट्ठकसायादीणं उवसमियट्ठाणगोत्ति हवे॥447॥

(मिथ्यात्रयषोडशानामुपशमश्रेण्यां शान्तमोह इति।

अष्टकषायादीनामुपशमिकस्थानक इति भवेत्॥447॥)

पढमकसायाणं च विसंजोजकं वोत्ति अयददेसोत्ति।

णिरयतिरियाउगाणमुदीरणसत्तोदया सिद्धा॥448॥

(प्रथमकषायाणां च विसंयोजकं वा इति अयतदेश इति।

निरयतिर्यगायुषोरुदीरणसत्त्वोदयाः सिद्धाः॥448॥)

मिच्छस्स य मिच्छोत्ति य उदीरणा उवसमाहिमुहियस्स।

समयाहियावलित्ति य सुहुमे सुहुमस्स लोहस्स॥449॥

(मिथ्यस्य च मिथ्येति च उदीरणा उपशमाभिमुखस्य।

समयाधिकावलीति च सूक्ष्मे सूक्ष्मस्य लोभस्य॥449॥)

उदये संकममुदये चउसुवि दादुं कमेण णो सक्कं।

उवसंतं च णिधत्तिं णिकाचिदं तं अपुव्वोत्ति॥450॥

(उदये संक्रमोदययोः चतुर्ष्वपि दातुं क्रमेण नो शक्यम्।
उपशान्तं च निधत्तिः निकाचितं तत् अपूर्व इति॥450॥)

5- बंधोदयसत्त्वस्थानसमुत्कीर्तनाधिकार

णमिऊण णेमिणाहं सच्चजुहिट्ठिरणमंसियंघिजुगं।
बंधुदयसत्तजुत्तं ठाणसमुक्तित्तणं वोच्छं॥451॥
(नत्वा नेमिनाथं सत्ययुधिष्ठिरनमस्कृताङ्घ्रियुगम्।
बन्धोदयसत्त्वयुक्तं स्थानसमुत्कीर्तनं वक्ष्ये॥451॥)

छसु सगविहमट्ठविहं कम्मं बंधंति तिसु य सत्तविहं।
छव्विहमेकट्ठाणे तिसु एक्कमबंधगो एक्को॥452॥
(षट्सु सप्तविधमष्टविधं कर्म बध्नन्ति त्रिषु च सप्तविधम्।
षड्विधमेकस्थाने त्रिषु एकमबन्धकमेकम्॥452॥)

चत्तारि तिण्णि तिय चउ पयडिट्ठाणाणि मूलपयडीणं।
भुजगारप्पदराणि य अवट्ठिदाणिवि कमे होंति॥453॥
(चत्वारि त्रीणि त्रीणि चत्वारि प्रकृतिस्थानानि मूलप्रकृतीनाम्।
भुजाकाराल्पतराणि च अवस्थितान्यपि क्रमेण भवन्ति॥453॥)

अट्ठुदओ सुहुमोत्ति य मोहेण विणा हु संतखीणेसु।
घादिदराण चउक्कस्सुदओ केवलिदुगे णियमा॥454॥
(अष्टोदयः सूक्ष्म इति च मोहेन विना हि शान्तक्षीणयोः।
घातीतराणां चतुष्कस्योदयः केवलिद्विके नियमात्॥454॥)

घादीणं छदुमट्ठा उदीरगा रागिणो हि मोहस्स।

तदियाऊण पमत्ता जोगंता होंति दोण्हंपि॥455॥

(घातिनां छद्मस्था उदीरका रागिणो हि मोहस्य।

तृतीयायुषोः प्रमत्ता योग्यन्ता भवन्ति द्वयोरपि॥455॥)

मिस्सूणपमत्तंते आउस्सद्धा हु सुहुमखीणाणं।

आवलिसिट्ठे कमसो सग पण दो चेवुदीरणा होंति॥456॥

(मिश्रोनप्रमत्तान्ते आयुष अद्धा हि सूक्ष्मक्षीणयोः।

आवलिशिष्टे क्रमशः सप्त पञ्च द्वौ चैवोदीरणा भवन्ति॥456॥)

संतोत्ति अट्ठ सत्ता खीणे सत्तेव होंति सत्ताणि।

जोगिम्मि अजोगिम्मि य चत्तारि हवंति सत्ताणि॥457॥

(शान्त इति अष्ट सत्ताः क्षीणे सप्तैव भवन्ति सत्त्वानि।

योगिनि अयोगिनि च चत्वारि भवन्ति सत्त्वानि ॥457॥)

तिण्णि दस अट्ठ ठाणाणि दंसणावरणमोहणामाणं।

एत्थेव य भुजगारा सेसेसेयं हवे ठाणं॥458॥

(त्रीणि दश अष्ट स्थानानि दर्शनावरणमोहनाम्नाम्।

अत्रैव च भुजाकाराः शेषेष्वेकं भवेत् स्थानम्॥458॥)

णव छक्क चदुक्कं च य बिदियावरणस्स बंधठाणाणि।

भुजगारप्पदराणि य अवट्ठिदाणिवि य जाणाहि॥459॥

(नव षट्कं चतुष्कं च च द्वितीयावरणस्य बन्धस्थानानि।

भुजाकाराल्पतराणि च अवस्थितान्यपि च जानीहि॥459॥)

णव सासणोत्ति बंधो छच्चेव अपुव्वपढमभागोत्ति।

चत्तारि होंति तत्तो सुहुमकसायस्स चरिमोत्ति॥460॥

(नव सासन इति बन्धः षट्चैव अपूर्वप्रथमभाग इति।

चतस्रो भवन्ति ततः सूक्ष्मकषायस्य चरम इति॥460॥)

खीणोत्ति चारि उदया पंचसु णिद्दासु दोसु णिद्दासु।

एक्के उदयं पत्ते खीणदुचरिमोत्ति पंचुदया॥461॥

(क्षीण इति चतस्र उदयाः पञ्चसु निद्रासु द्वयोर्निद्रयोः।

एकस्यामुदयं प्राप्तायां क्षीणद्विचरम इति पञ्चोदयाः॥461॥)

मिच्छादुवसंतोत्ति य अणियट्टीखवगपढमभागोत्ति।

णवसत्ता खीणस्स दुचरिमोत्ति य छच्चदूवरिमे॥462॥

(मिथ्यात्वादुपशान्त इति च अनिवृत्तिक्षपकप्रथमभाग इति।

नवसत्ता क्षीणस्य द्विचरम इति च षट्चतुरुपरिमे॥462॥)

बावीसमेक्कवीसं सत्तारस तेरसेव णव पंच।

चदुतियदुगं च एक्कं बंधट्ठाणाणि मोहस्स॥463॥

(द्वाविंशतिरेकविंशतिः सप्तदश त्रयोदशैव नव पञ्च।

चतुस्त्रिकद्विकं चैकं बन्धस्थानानि मोहस्य॥463॥)

बावीसमेक्कवीसं उत्तर सत्तार तेर तिसु णवयं।

थूले पणचदुतियदुगमेक्कं मोहस्स ठाणणि॥464॥

(द्वाविंशतिरेकविंशतिः सप्तदश सप्तदश त्रयोदश त्रिषु नवकम्।

स्थूले पञ्चचतुष्कत्रिकद्विकमेकं मोहस्य स्थानानि॥464॥)

उगुवीसं अट्ठारस चोद्दस चोद्दस य दस य तिसु छक्कं।

थूले चदुतिदुगेक्कं मोहस्स य होंति धुवबंधा॥465॥

(एकोनविंशतिरष्टादश चतुर्दश चतुर्दश च दश च त्रिषु षट्कम्।

स्थूले चतुस्त्रिद्विकैकं मोहस्य च भवन्ति ध्रुवबन्धाः॥465॥)

सगसंभवधुवबंधे वेदेक्के दोजुगाणमेक्के य।

ठाणो वेदजुगाणं भंगहदे होंति तब्भंगा॥466॥

(स्वकसंभवध्रुवबन्धे वेदे एका द्वियुगयोरेका च।

स्थानं वेदयुगानां भङ्गहते भवन्ति तद्भङ्गाः॥466॥)

छब्बावीसे चदु इगिवीसे दो द्दो हवंति छट्ठोत्ति।

एक्केक्कमदो भंगो बंधट्ठाणेसु मोहस्स॥467॥

(षट् द्वाविंशतौ चत्वार एकविंशतौ द्वौ द्वौ भवन्ति षष्ठ इति।

एकैकोतो भङ्गो बन्धस्थानेषु मोहस्य॥467॥)

दस वीसं एक्कारस तेत्तीसं मोहबंधठाणाणि।

भुजगारप्पदराणि य अवट्ठिदाणिवि य सामण्णे॥468॥

(दशसु विंशतिरेकादश त्रयस्त्रिंशत् मोहबन्धस्थानानि।

भुजाकाराल्पतराणि च अवस्थितान्यपि च सामान्ये॥468॥)

अप्पं बंधंतो बहुबंधे बहुगादु अप्पबंधेवि।

उभयत्थ समे बंधे भुजगारादी कमे होंति॥469॥

(अल्पं बध्नतो बहुबन्धे बहुकादल्पबन्धेपि।

ऽभयत्र समे बन्धे भुजाकारादयः क्रमेण भवन्ति॥469॥)

सामण्णअवत्तव्वो ओदरमाणम्मि एक्कयं मरणे।

एक्कं च होदि एत्थवि दो चेव अवट्ठिदा भंगा॥470॥

सामान्यावक्तव्य अवतरमाने एको मरणे।

एकश्च भवति अत्रापि द्वौ चैव अवस्थितौ भङ्गौ॥470॥

सत्तावीसहियसयं पणदालं पंचहत्तरिहियसयं।

भुजागारप्पदराणि य अवट्ठिदाणिवि विसेसेण॥471॥

(सप्तविंशाधिकशतं पञ्चचत्वारिंशत् पञ्चसप्तत्यधिकशतम्।

भुजाकाराल्पतराणि च अवस्थितान्यपि विशेषेण॥471॥)

णभ चउवीसं बारस बीसं चउरट्ठवीस दो द्दो य।

थूले पणगादीणं तियतिय मिच्छादिभुजगारा॥472॥

(नभश्चतुर्विंशं द्वादश विंशं चतुरष्टविंशं द्वौ द्वौ च।

स्थूले पञ्चकादीनां त्रयस्त्रयो मिथ्यादिभुजाकाराः॥472॥)

अप्पदरा पुण तीसं णभ णभ छद्दोण्णि दोण्णि णभ एक्कं।

थूले पणगादीणं एक्केकं अंतिमे सुण्णं॥473॥

(अल्पतराः पुनः त्रिंशत् नभो नभः षट् द्वौ द्वौ नभ एकः।

स्थूले पञ्चकादीनामेकैकः अन्तिमे शून्यम्॥473॥)

भेदेण अवत्तव्वा ओदरमाणम्मि एक्कयं मरणे।

दो चेव होंति एत्थवि तिण्णेव अवट्ठिदा भंगा॥474॥

(भेदेन अवक्तव्या अवतरति एकको मरणे।

द्वौ चैव भवत अत्रापि त्रय एव अवस्थिता भङ्गाः॥474॥)

दस णव अट्ठ य सत्त य छप्पण चत्तारि दोण्णि एक्कं च।

उदयट्ठाणा मोहे णव चेव य होंति णियमेण॥475॥

(दश नवाष्ट च सप्त च षट् पञ्च चत्वारि द्वे एकं च।

उदयस्थानानि मोहे नव चैव च भवन्ति नियमेन॥475॥)

मिच्छं मिस्सं सगुणे वेदगसम्मेव होदि सम्मत्तं।

एक्का कसायजादी वेददुजुगलाणमेक्कं च॥476॥

(मिथ्यं मिश्रं स्वगुणे वेदकसम्ये एव भवति सम्यक्त्वम्।

एका कषायजातिः वेदद्वियुगलयोरेकं च॥476॥)

भयसहियं च दुगुच्छासहियं दोहिंवि जुदं च ठाणाणि।

मिच्छादिअपुव्वंते चत्तारि हंवति णियमेण॥477॥

(भयसहितं च जुगुप्सासहितं द्वाभ्यामपि युतं च स्थानानि।

मिथ्याद्यपूर्वान्ते चत्वारि भवन्ति नियमेन॥477॥)

अणसंजोजिदसम्मे मिच्छं पत्ते ण आवलित्ति अणं।

उवसमखइये सम्मं ण हि तत्थवि चारि ठाणाणि॥478॥

(अनसंयोजितसम्ये मिथ्यं प्राप्ते न आवलीति अनम्।

उपशमक्षायिके सम्यं हि तत्रापि चत्वारि स्थानानि॥478॥)

पुव्विल्लेसुवि मिलिदे अड चउ चत्तारि चदुसु अट्ठेव।

चत्तारि दोण्णि एक्कं ठाणा मिच्छादिसुहुमंते ॥479॥

(पूर्व्येष्वपि मिलितेषु अष्ट चत्वारि चत्वारि चतुर्षु अष्टैव।

चत्वारि द्वे एकं स्थानानि मिथ्यादिसूक्ष्मान्ते॥479॥)

दसणवणवादि चउतियतिट्ठाण णवट्ठसगसगादि चऊ।

ठाणा छादि तियं च य चदुवीसगदा अपुव्वोत्ति॥480॥

(दशनवनवादि चतुस्त्रिकत्रिस्थानं नवाष्टसप्तसप्तादि चतुष्कम्।

स्थानानि षडादि त्रिकं च च चतुर्विंशगता अपूर्व इति॥480॥)

एक्क य छक्केयारं एयारेयारसेव णव तिण्णि।

एदे चउवीसगदा चदुवीसेयार दुगठाणे॥481॥

(एकं च षट्कमेकादश एकादशैकादशैव नव त्रीणि।

एतानि चतुर्विंशतिगतानि चतुर्विंशैकादश द्विकस्थाने॥481॥)

उदयट्ठाणं दोण्हं पणबंधे होदि दोण्हमेकस्स।

चदुविहबंधट्ठाणे सेसेसेयं हवे ठाणं॥482॥

(उदयस्थानं द्वयोः पञ्चबन्धे भवति द्वयोरेकस्य।

चतुर्विधबन्धस्थाने शेषेष्वेकं भवेत् स्थानम्॥482॥)

अणियट्टिकरणपढमा संढित्थीणं च सरिस उदयद्धा।

तत्तोमुहुत्तअंते कमसो पुरिसादिउदयद्धा॥483॥

(अनिवृत्तिकरणप्रथमात् षण्ढस्त्रियोः च सदृश उदयाद्धा।

ततो मुहूर्तान्तः क्रमशः पुरुषाद्युदयाद्धा॥483॥)

पुरिसोदएण चडिदे बंधुदयाणं च जुगवदुच्छित्ती।

सेसोदयेण चडिदे उदयदुचरिमम्हि पुरिसबंधछिदी॥484॥

(पुरुषोदयेन चटिते बन्धोदययोश्च युगपदुच्छित्तिः।

शेषोदयेन चटिते उदयद्विचरमे पुरुषबन्धच्छित्तिः॥484॥)

पणबंधगम्मि बारस भंगा दो चेव उदयपयडीओ।

दोउदये चदुबंधे बारेव हवंति भंगा हु॥485॥

(पञ्चबन्धके द्वादश भङ्गा द्वे चैव उदयप्रकृती।

द्वयुदये चतुर्बन्धे द्वादशैव भवन्ति भङ्गा हि॥485॥)

कोहस्स य माणस्स य मायालोहाणियट्टिभागम्हि।

चदुतिदुगेक्कंभंगा सुहुमे एक्को हवे भंगो॥486॥

(क्रोधस्य च मानस्य च मायालोभानिवृत्तिभागे।

चतुस्त्रिद्विकैकभङ्गाः सूक्ष्मे एको भवेत् भङ्गः॥486॥)

बारससयतेसीदीठाणवियप्पेहिं मोहिदा जीवा।

पणसीदिसदसगेहिं पयडिवियप्पेहिं ओघम्मि॥487॥

(द्वादशशतत्र्यशीतिस्थानविकल्पैर्मोहिता जीवाः।

पञ्चाशीतिशतसप्तभिः प्रकृतिविकल्पैरोघे॥487॥)

एक्क य छक्केयारं दससगचदुरेक्कयं अपुणरुत्ता।

एदे चदुवीसगदा बार दुगे पंच एक्कम्मि॥488॥

(एकं च षट्कैकादश दशसप्तचतुरेकमपुनरुक्तानि।

एतानि चतुर्विंशगतानि द्वादश द्विके पञ्च एकस्मिन्॥488॥)

णवसयसत्ततरिहिं ठाणवियप्पेहिं मोहिदा जीवा।

इगिदालूणत्तरिसयपयडिवियप्पेहिं णायव्वा॥489॥

(नवशतसप्तसप्ततिभिः स्थानविकल्पैः मोहिता जीवाः।

एकचत्वारिंशदेकोनसप्ततिशतप्रकृतिविकल्पैः ज्ञातव्याः॥489॥)

उदयट्ठाणं पयडिं सगसगउवजोगजोगआदीहिं।

गुणयित्ता मेलविदे पदसंखा पयडिसंखा य॥490॥

(उदयस्थानं प्रकृतिं स्वकस्वकोपयोगयोगादिभिः।

गुणयित्वा मेलपिते पदसंख्या प्रकृतिसंख्या च॥490॥)

मिच्छदुगे मिस्सतिये पमत्तसत्ते जिणे य सिद्धे य।

पण छस्सत्त दुगं च य उवजोगा होंति दो चेव॥491॥

(मिथ्यद्विके मिश्रत्रये प्रमत्तसप्तके जिने च सिद्धे च।

पञ्च षट् सप्त द्विकं च च उपयोगा भवन्ति द्वौ चैव॥499॥)

णवणउदिसगसयाहियसत्तसहस्सप्पमाणमुदयस्स।

ठाणवियप्पे जाणसु उवजोगे मोहणीयस्स॥492॥

(नवनवतिसप्तशताधिकसप्तसहस्रप्रमाणमुदयस्य।

स्थानविकल्पा जानीहि उपयोगे मोहनीयस्य॥492॥)

एकावण्णसहस्सं तेसीदिसमण्णियं वियाणाहि।

पयडीणं परिमाणं उवजोगे मोहणीयस्स॥493॥

(एकपञ्चाशत्सहस्रं त्र्यशीतिसमन्वितं विजानीहि।

प्रकृतीनां परिमाणं उपयोगे मोहनीयस्य॥493॥)

तिसु तेरं दस मिस्से णव सत्तसु छट्ठयम्मि एक्कारा।

जोगिम्मि सत्त जोगा अजोगिठाणं हवे सुण्णं॥494॥

(त्रिषु त्रयोदश दश मिश्रे नव सप्तसु षष्ठे एकादश।

योगिनि सप्त योगा अयोगिस्थानं भवेत् शून्यम्॥494॥)

मिच्छे सासण अयदे पमत्तविरदे अपुण्णजोगगदं।

पुण्णगदं च य सेसे पुण्णगदे मेलिदं होदि॥495॥

(मिथ्ये सासने अयते प्रमत्तविरते अपूर्णयोगगतम्।

पूर्णगतं च च शेषे पूर्णगते मिलितं भवति॥495॥)

सासणअयदपमत्ते वेगुव्वियमिस्स तं च कम्मयियं।

ओरालमिस्स हारे अडसोलडवग्ग अट्ठवीससयं॥496॥

(सासनायतप्रमत्ते वैगूर्विकमिश्रं तच्च कार्मणम्।

औरालमिश्रमाहारे अष्टषोडशाष्टवर्ग अष्टविंशशतम्॥496॥)

णत्थि णउंसयवेदो इत्थीवेदो णउंसइत्थिदुगे।

पुव्वुत्तपुण्णजोगगचदुसुट्ठाणेसु जाणेज्जो॥497॥

(नास्ति नपुंसकवेदः स्त्रीवेदो नपुंसकस्त्रीद्विकम्।

पूर्वोक्तापूर्णयोगगचतुर्षु स्थानेषु ज्ञातव्यम् ॥497॥)

तेवण्णणवसयाहियबारसहस्सप्पमाणमुदयस्स।

ठाणवियप्पे जाणसु जोगं पडि मोहणीयस्स॥498॥

(त्रिपञ्चाशन्नवशताधिकद्वादशसहस्रप्रमाणमुदयस्य।

स्थानविकल्पान् जानीहि योगं प्रति मोहनीयस्य॥498॥)

बिदिये बिगिपणगयदे खदुणवएक्कं खअट्ठचउरो य।

छट्ठे चउसुण्णसगं पयडिवियप्पा अपुण्णम्हि॥499॥

(द्वितीये द्व्येकपञ्चकमयते खद्विनवैकं खाष्टचत्वारश्च।

षष्ठे चतुःशून्यसप्त प्रकृतिविकल्पा अपूर्णे॥499॥)

पणदालछस्सयाहियअट्ठासीदीसहस्समुदयस्स।

पयडीणं परिसंखा जोगं पडि मोहणीयस्स॥500॥

(पञ्चचत्वारिंशत्षट्शताधिकाष्टाशीतिसहस्रमुदयस्य।

प्रकृतीनां परिसंख्या योगं प्रति मोहनीयस्य॥500॥)

तेरससयाणि सत्तरिसत्तेव य मेलिदे हंवतित्ति।

ठाणवियप्पे जाणसु संजमलंबेण मोहस्स॥501॥

(त्रयोदशशतानि सप्ततिसप्तैव च मिलिते भवन्तीति।

स्थानविकल्पा जानीहि संयमालम्बेन मोहस्य॥501॥)

तेवण्णतिसदसहियं सत्तसहस्सप्पमाणमुदयस्स।

पयडिवियप्पे जाणसु संजमलंबेण मोहस्स॥502॥

(त्रिपञ्चाशत्त्रिशतसहितं सप्तसहस्रप्रमाणमुदयस्य।

प्रकृतिविकल्पान् जानीहि संयमालम्बेन मोहस्य॥502॥)

मिच्छचउक्के छक्कं देसतिये तिण्णि होंति सुहलेस्सा।

जोगित्ति सुक्कलेस्सा अजोगिठाणं अलेस्सं तु॥503॥

(मिथ्यचतुष्के षट्कं देशत्रये तिस्रो भवन्ति शुभलेश्याः।

योगीति शुक्ललेश्या अयोगिस्थानमलेश्यं तु॥503॥)

पंचसहस्सा बेसयसत्ताणउदी हवंति उदयस्स।

ठाणवियप्पे जाणसु लेस्सं पडि मोहणीयस्स॥504॥

(पञ्चसहस्राणि द्विशतसप्तनवतिः भवन्ति उदयस्य।

स्थानविकल्पा जानीहि लेश्यां प्रति मोहनीयस्य॥504॥)

अट्ठत्तीससहस्सा बेण्णिसया होंति सत्ततीसा य।

पयडीणं परिमाणं लेस्सं पडि मोहणीयस्स॥505॥

(अष्टत्रिंशत्सहस्राणि द्विशतानि भवन्ति सप्तत्रिंशच्च।

प्रकृतीनां परिमाणं लेश्यां प्रति मोहनीयस्य॥505॥)

अट्ठत्तरीहिं सहिया तेरसयसया हवंति उदयस्स।

ठाणवियप्पे जाणसु सम्मत्तगुणेण मोहस्स॥506॥

(अष्टसप्ततिभिः सहितानि त्रयोदशकशतानि भवन्ति उदयस्य।

स्थानविकल्पा जानीहि सम्यक्त्वगुणेन मोहस्य॥506॥)

अट्ठेव सहस्साइं छव्वीसा तह य होंति णादव्वा।

पयडीणं परिमाणं सम्मत्तगुणेण मोहस्स॥507॥

(अष्टैव सहस्राणि षड्विंशतिस्तथा च भवन्ति ज्ञातव्याः।

प्रकृतीनां परिमाणं सम्यक्त्वगुणेन मोहस्य॥507॥)

अट्ठ य सत्त य छक्क य चदुतिदुगेगाधिगाणि वीसाणि।

तेरस बारेयारं पणादि एगूणयं सत्तं॥508॥

(अष्ट च सप्त च षट्कं च चतुस्त्रिद्विकैकमधिकानि विंशतिः।

त्रयोदशद्वादशैकादश पञ्चादि एकोनकं सत्त्वम्॥508॥)

तिण्णेगे एगेगं दो मिस्से चदुसु पण णियट्टीए।

तिण्णि य थूलेयारं सुहुमे चत्तारि तिण्णि उवसंते॥509॥

(त्रीण्येकस्मिन्नेकस्मिन्नेकं द्वे मिश्रे चतुर्षु पञ्च निवृत्तौ।

त्रीणि च स्थूले एकादश सूक्ष्मे चत्वारि त्रीण्युपशान्ते॥509॥)

पढमतियं च य पढमं पढमं चउवीसयं च मिस्सम्हि।

पढमं चउवीसचऊ अविरददेसे पमत्तिदरे॥510॥

(प्रथमत्रयं च च प्रथमं प्रथमं चतुर्विंशकं च मिश्रे।

प्रथमं चतुर्विंशचतुष्कं अविरतदेशे प्रमत्तेतरे॥510॥)

अडचउरेक्कावीसं उवसमसेढिम्हि खवगसेढिम्हि।

एक्कावीसं सत्ता अट्ठकसायाणियट्टिंति॥511॥

(अष्टचतुरेकविंशतिः उपशमश्रेण्यां क्षपकश्रेण्याम्।

एकविंशतिः सत्ता अष्टकषायानिवृत्तिरिति॥511॥)

तेरस बारेयारं तेरस बारं च तेरसं कमसो।

पुरिसित्थिसंढवेदोदयेण गदपणगबंधम्हि॥512॥

(त्रयोदश द्वादशैकादश त्रयोदश द्वादश च त्रयोदश क्रमशः।

पुरुषस्त्रीषण्ढवेदोदयेन गतपञ्चकबन्धे॥512॥)

पुरिसोदयेण चडिदे अंतिमखंडंतिमोत्ति पुरिसुदओ।

तप्पणिधिम्मिदराणं अवगदवेदोदयं होदि॥513॥

(पुरुषोदयेन चटिते अन्तिमखण्डान्तिम पुरुषोदयः।

तत्प्रणिधौ इतरयोरपगतवेदोदयो भवति॥513॥)

तट्ठाणे एक्कारस सत्ता तिण्होदयेण चडिदाणं।

सत्तण्हं समग छिदी पुरिसे छण्हं च णवगमत्थित्ति॥514॥

(तत्स्थाने एकादश सत्ताः त्रिकोदयेन चटितानाम्।

सप्तानां समकं छित्तिः पुरुषे षण्णां च नवकमस्तीति॥514॥)

इदि चदुबंधक्खवगे तेरस बारस एगार चउसत्ता।

तिदुइगिबंघे तिदुइगि णवगुच्छिट्ठाणमविवक्खा॥515॥

(इति चतुर्बन्धक्षपके त्रयोदश द्वादशैकादश चतुःसत्ता।

त्रिद्विकैकबन्धे त्रिद्विकैकं नवकोच्छिष्टयोरविवक्षा॥515॥)

तिण्णेव दु बावीसे इगिवीसे अट्ठावीस कम्मंसा।

सत्तरतेरेणवबंधगेसु पंचेव ठाणाणि॥516॥

पंचविधचदुविधेसु य छ सत्त सेसेसु जाण चत्तारि।

उच्छिट्ठावलिणवकं अविवेक्खिय संत्तंठाणाणि॥517॥ जुम्मं।

(त्रय एव तु द्वाविंशतौ एकविंशतौ अष्टविंशतिः कर्मांशाः।

सप्तदशत्रयोदशनवबन्धकेषु पञ्चैव स्थानानि॥516॥)

पञ्चविधचतुर्विधेषु च षट् सप्त शेषेषु जानीहि चत्वारि।

ऽच्छिष्टावलिनवकमविवक्ष्य सत्त्वस्थानानि॥517॥ युग्मम।)

दसणवपण्णरसाइं बंधोदयसत्तपयडिठाणाणि।

भणिदाणि मोहणिज्जे एत्तो णामं परं वोच्छं॥518॥

(दशनवपञ्चदश बन्धोदयसत्त्वप्रकृतिस्थानानि।

भणितानि मोहनीये इतो नाम परं वक्ष्यामि॥518॥)

णिरया पुण्णा पण्हं बादरसुहुमा तहेव पत्तेया।

वियलाऽसण्णी सण्णी मणुवा पुण्णा अपुण्णा य॥519॥

सामण्णतित्थकेवलि ऽहयसमुग्घादगा य आहारा।

देवावि य पज्जत्ता इदि जीवपदा हु इगिदाला॥520॥ जुम्मं।

(निरयाः पूर्णाः पञ्च बादरसूक्ष्माः तथैव प्रत्येकाः।

विकला असंज्ञिनः संज्ञिनो मनुष्याः पूर्णा अपूर्णाश्च॥519॥

सामान्यतीर्थकेवलिन ऽभयसमुद्घातगाश्च आहाराः।

देवा अपि च पर्याप्ता इति जीवपदा हि एकचत्वारिंशत्॥520॥

युग्मम्।)

तेवीसं पणवीसं छव्वीसं अट्ठवीसमुगतीसं।

तीसेक्कतीसमेवं एक्को बंधो दुसेढिम्हि॥521॥

(त्रयोविंशतिः पञ्चविंशतिः षड्विंशतिरष्टविंशमेकोनत्रिंशत्।

त्रिंशदेकत्रिंशदेवमेको बन्धो द्विश्रेण्याम्॥521॥)

ठाणमपुण्णेण जुदं पुण्णेण य ऽवरि पुण्णगेणेव।

तावदुगाणण्णदरेणण्णदरेणमरणिरयाणं॥522॥

णिरयेण विणा तिण्हं एक्कदरेणेवमेव सुरगइणा।

वंधंति विणा गइणा जीवा तज्जोगपरिणामा॥523॥ जुम्मं।

(स्थानमपूर्णेन युतं पूर्णेन चोपरि पूर्णकेनैव।

आतापद्विकयोरन्यतरेणान्यतरेणामरनिरययोः॥522॥)

निरयेन विना त्रयाणामेकतरेणैवमेव सुरगतिना।

बध्नन्ति विना गतिना जीवा तद्योग्यपरिणामाः॥523॥ युग्मम्।)

भूबादरपज्जत्तेणादावं बंधजोग्गमुज्जोवं।

तेउतिगूणतिरिक्खपसत्थाणं एयदरगेण॥524॥

(भूबादरपर्याप्तेनातापो बन्धयोग्य उद्योतः।

तेजस्त्रिकोनतिर्यक्प्रशस्तानामेकतरकेण॥524॥)

णरगइणामरगइणा तित्थं देवेण हारमुभयं च।

संजदबंधट्ठाणं इदराहि गईहि णत्थित्ति॥525॥

(नरगतिनामरगतिना तीर्थं देवेनाहारमुभयं च।

संयतबन्धस्थानमितराभिर्गतिभिः नास्तीति॥525॥)

णामस्स णव धुवाणि य सरूणतसजुम्मगाणमेक्कदरं।

गइजाइदेहसंठाणाणूणेक्कं च सामण्णा॥526॥

तसबंधेण हि संहदिअंगोवंगाणमेक्कदरगं तु।

तप्पुण्णेण य सरगमणाणं पुण एगदरगं तु॥527॥

पुण्णेण समं सव्वेणुस्सासो णियमदो दु परघादो।

जोगट्ठाणे तावं उज्जोवं तित्थमाहारं॥528॥ विसेसयं।

(नाम्नो नव ध्रुवाश्च स्वरोनत्रसयुग्मकानामेकतरं।

गतिजातिदेहसंस्थानानूनामेका च सामान्याः॥526॥

त्रसबन्धेन हि संहत्याङ्गोपाङ्गानामेकतरकं तु।

तत्पूर्णेन च स्वरगमनानां पुनः एकतरकं तु॥527॥

पूर्णेन समं सर्वेणोच्छ्वासो नियमतस्तु परघातः।

योगस्थाने आतप उद्योत तीर्थमाहारम्॥528॥ विशेषकम्।)

तित्थेणाहारदुगं एक्कसराहेण बंधमेदीदि।

पक्खित्ते ठाणाणं पयडीणं होदि परिसंखा॥529॥

तीर्थेनाहारद्विकमेकसराहेण बन्धमेतीति।

प्रक्षिप्ते स्थानानां प्रकृतीनां भवति परिसंख्या॥529॥

एयक्खअपज्जत्तं इगिपज्जत्त बितिचपणरापज्जत्तं।

एइंदियपज्जत्तं सुरणिरयगईहिं संजुत्तं॥530॥

पज्जत्तगबितिचप मणुसदेवगदिसंजुदाणि दोण्णि पुणो।

सुरगइजुदमगइजुदं बंधट्ठाणाणि णामस्स॥531॥ जुम्मं।

(एकाक्षापर्याप्तमेकपर्याप्तं द्वित्रिचपनरापर्याप्तम्।

एकेन्द्रियपर्याप्तं सुरनिरयगतिभ्यां संयुक्तम्॥530॥

पर्याप्तकद्वित्रिचपं मानुषदेवगतिसंयुते द्वे पुनः।

सुरगतियुतमगतियुतं बंधस्थानानि नाम्नः॥531॥ युग्मम्।)

संठाणे संहडणे विहायजुम्मे य चरिमछज्जुम्मे।

अविरुद्धेक्कदरादो बंधट्ठाणेसु भंगा हु॥532॥

(संस्थाने संहनने विहायोयुग्मे च चरमषड्युग्मे।

अविरुद्धे एकतमात् बन्धस्थानेषु भङ्गा हि॥532॥)

तत्थासत्थो णारयसव्वापुण्णेण होदि बंधो दु।

एक्कदराभावादो तत्थेक्को चेव भंगो दु॥533॥

(तत्राशस्तो नारकसर्वापूर्णेन भवति बन्धस्तु।

एकतराभावात् तत्रैकश्चैव भङ्गस्तु॥533॥)

तत्थासत्थं एदि हु साहारणथूलसव्वसुहुमाणं।

पज्जत्तेण य थिरसुहजुम्मेक्कदरं तु चदुभंगा॥534॥

(तत्राशस्ता एति हि साधारणस्थूलसर्वसूक्ष्मानाम्।

पर्याप्तेन च स्थिरशुभयुग्मैकतरं तु चतुर्भङ्गाः॥534॥)

पुढवीआऊतेऊवाऊपत्तेयवियलसण्णीणं।

सत्थेण असत्थं थिरसुहजसजुम्मट्ठभंगा हु॥535॥

(पृथिव्यप्तेजोवायुप्रत्येकविकलासंज्ञिनाम्।

शस्तेनाशस्तं स्थिरशुभयशोयुग्ममष्टभङ्गा हि॥535॥)

सण्णिस्स मणुस्सस्स य ओघेक्कदरं तु मिच्छभंगा हु।

छादालसयं अट्ठ य बिदिये बत्तीससयभंगा॥536॥

(संज्ञिनो मनुष्यस्य च ओघेकतरं तु मिथ्यभङ्गा हि।

षट्चत्वारिंशच्छतमष्ट च द्वितीये द्वात्रिंशच्छतभङ्गाः॥536॥)

मिस्साविरदमणुस्सट्ठाणे मिच्छादिदेवजुदठाणे।

सत्थं तु पमत्तंते थिरसुहजसजुम्मगट्ठभंगा हु॥537॥

(मिश्राविरतमनुष्यस्थाने मिथ्यादिदेवयुतस्थाने।

शस्तं तु प्रमत्तान्ते स्थिरशुभयशोयुग्मकाष्टभङ्गा हि॥537॥)

णेरयियाणं गमणं सण्णीपज्जत्तकम्मतिरियणरे।

चरिमचऊतित्थूणे तेरिच्छे चेव सत्तमिया॥538॥

(नैरयिकानां गमनं संज्ञिपर्याप्तकर्मतिर्यग्नरे।

चरमचतुष्काः तीर्थोने तिरश्चि चैव सप्तमिकाः॥538॥)

तत्थतणऽविरदसम्मो मिस्सो मणुवदुगमुच्चयं णियमा।

बंधदि गुणपडिवण्णा मरंति मिच्छेव तत्थ भवा॥539॥

(तत्रतनोऽविरतसम्यक् मिश्रो मानवद्विकमुच्चकं नियमात्।

बध्नाति गुणप्रतिपन्ना मरन्ति मिथ्ये एव तत्र भवाः॥539॥)

तेऊदुगं तेरिच्छे सेसेगअपुण्णवियलगा य तहा।

तित्थूणणरेवि तहाऽसण्णी घम्मे य देवदुगे॥540॥

(तेजोद्विकं तिरश्चि शेषैकापूर्णविकलकाश्च तथा।

तीर्थोननरेपि तथा असंज्ञी घर्मे च देवद्विके॥540॥)

सण्णीवि तहा सेसे णिरये भोगेवि अच्चुदंतेवि।

मणुवा जंति चऊग्गदिपरियंतं सिद्धिठाणं च॥541॥

(संज्ञी अपि तथा शेषे निरये भोगेपि अच्युतान्तेपि।

मानवा यान्ति चतुर्गतिपर्यन्तं सिद्धिस्थानं च॥541॥)

आहारगा दु देवे देवाणं सण्णिकम्मतिरियणरे।

पत्तेयपुढविआऊबादरपज्जत्तगे गमणं॥542॥

भवणतियाणं एवं तित्थूणणरेसु चेव उप्पत्ती।

ईसाणंताणेगे सदरदुगंताण सण्णीसु॥543॥ जुम्मं।

(आहारकास्तु देवे देवानां संज्ञिकर्मतिर्यग्नरे।

प्रत्येकपृथिव्यब्बादरपर्याप्तके गमनम्॥542॥

भवनत्रिकाणामेवं तीर्थोननरेषु चैवोत्पत्तिः।

ईशानान्तयोरेकस्मिन् शतारद्विकान्तानां संज्ञिषु॥543॥ युग्मम्।)

णामस्स बंधठाणा णिरयादिसु णवयवीस तीसमदो।

आदिमछक्कं सव्वं पणछण्णववीस तीसं च॥544॥

(नाम्नः बन्धस्थानानि निरयादिषु नवकविंशं त्रिंशदतः।

आदिमषट्कं सर्वं पञ्चषट्नवविंशं त्रिंशच्च॥544॥)

पंचक्खतसे सव्वं अडवीसूणादिछक्कयं सेसे।

चउमणवयणोराले सड देवं वा विगुव्वदुगे॥545॥

(पञ्चाक्षत्रसे सर्वमष्टविंशोनादिषट्कं शेषे।

चतुर्मनोवचनौराले सर्वं देवं वा वैगूर्वद्विके॥545॥)

अडवीसदु हारदुगे सेसदुजोगेसु छक्कमादिल्लं।

वेदकसाये सव्वं पढमिल्लं छक्कमण्णाणे॥546॥

(अष्टविंशद्विकमाहारद्विके शेषद्वियोगयोः षट्कमादिमम्।

वेदकषाये सर्वं प्राथमिकं षट्कमज्ञाने॥546॥)

सण्णाणे चरिमपणं केवलजहखादसंजमे सुण्णं।

सुदमिव संजमतिदए परिहारे णत्थि चरिमपदं॥547॥

(सद्ज्ञाने चरमपञ्च केवलयथाख्यातसंयमे शून्यम्।

श्रुतमिव संयमत्रितये परिहारे नास्ति चरमपदम्॥547॥)

अंतिमठाणं सुहुमे देसाविरदीसु हारकम्मं वा।

चक्खूजुगले सव्वं सगसगणाणं व ओहिदुगे॥548॥

(अन्तिमस्थानं सूक्ष्मे देशाविरत्योः आहारकर्म्म वा।

चक्षुर्युगले सर्वं स्वकस्वकज्ञानं वा अवधिद्विके॥548॥)

कम्मं वा किण्हतिये पणुवीसाछक्कमट्ठवीसचऊ।

कमसो तेऊजुगले सुक्काए ओहिणाणं वा॥549॥

(कर्म वा कृष्णत्रये पञ्चविंशतिषट्कमष्टाविंशचतुष्कम्।

क्रमशः तेजोयुगले शुक्लायामवधिज्ञानं वा॥549॥)

भव्वे सव्वमभव्वे किण्हं वा उवसमम्मि खइए य।

सुक्कं वा पम्मं वा वेदगसम्मत्तठाणाणि॥550॥

(भव्वे सर्वमभव्ये कृष्णा वा उपशमे क्षायिके च।

शुक्लं वा पद्मं वा वेदकसम्यक्त्वस्थानानि॥550॥)

अडवीसतिय दु साणे मिस्से मिच्छे दु किण्हलेस्सं वा।

सण्णीआहारिदरे सव्वं तेवीसछक्कं तु॥551॥

(अष्टविंशत्रयं तु साने मिश्रे मिथ्ये तु कृष्णलेश्या वा।

संज्ञिआहारेतरयोः सर्वं त्रयोविंशषट्कं तु॥551॥)

णिरयादिजुदट्ठाणे भंगेणप्पप्पणम्मि ठाणम्मि।

ठविदूण मिच्छभंगे सासणभंगा हु अत्थित्ति॥552॥

अविरदभंगे मिस्सयदेसपमत्ताण सव्वभंगा हु।

अत्थित्ति ते दु अवणिय मिच्छाविरदापमादेसु॥553॥ जुम्मं।

(निरयादियुतस्थाने भङ्गेनात्मात्मनि स्थाने।

स्थापयित्वा मिथ्यभङ्गे सासनभङ्गा हि अस्तीति॥552॥

(अविरतभङ्गे मिश्रकदेशप्रमत्तानां सर्वभङ्गा हि।

अस्तीति तांस्तु अपनीय मिथ्याविरताप्रमादेषु॥553॥ युग्मम्।)

भुजगारा अप्पदरा अवट्ठिदावि य सभंगसंजुत्ता।

सव्वपरट्ठाणेण य णेदव्वा ठाणबंधम्मि॥554॥

(भुजाकारा अल्पतरा अवस्थिता अपि च स्वभङ्गसंयुक्ताः।

सर्वपरस्थानेन च नेतव्याः स्थानबन्धे॥554॥)

अप्पपरोभयठाणे बंधट्ठाणाण जो दु बंधस्स।

सट्ठाण परट्ठाणं सव्वपरट्ठाणमिदि सण्णा॥555॥

(आत्मपरोभयस्थानानि बन्धस्थानानां यत्तु बन्धस्य।

स्वस्थानं परस्थानं सर्वपरस्थानमिति संज्ञा॥555॥)

चदुरेक्कदुपण पंच य छत्तिगठाणाणि अप्पमत्तंता।

तिसु उवसमगे संते त्ति य तियतिय दोण्णि गच्छंति॥556॥

(चतुरेकद्विपञ्च पञ्च च षट्त्रिकस्थानानि अप्रमत्तान्ताः।

त्रिषु उपशामके शान्ते इति च त्रिकत्रिकं द्वे गच्छन्ति॥556॥)

सासणपमत्तवज्जं अपमत्तंतं समल्लियइ मिच्छो।

मिच्छत्तं बिदियगुणो मिस्सो पढमं चउत्थं च॥557॥

अविरदसम्मो देसो पमत्तपरिहीणमप्पमत्तंतं।

छट्ठाणाणि पमत्तो छट्ठगुणं अप्पमत्तो दु॥558॥ जुम्मं।

(सासनप्रमत्तवर्ज्यमप्रमत्तान्तं समाश्रयति मिथ्यः।

मिथ्यात्वं द्वितीयगुणो मिश्रः प्रथमं चतुर्थं च॥557॥

अविरतसम्यो देशः प्रमत्तपरिहीनमप्रमत्तान्तम्।

षट् स्थानानि प्रमत्तः षष्ठगुणमप्रमत्तास्तु॥558॥ युग्मम्।)

उवसामगा दु सेढिं आरोहंति य पडंति य कमेण।

उवसामगेसु मरिदो देवतमत्तं समल्लियई॥559॥

(उपशामकास्तु श्रेणिमारोहयन्ति च पतन्ति च क्रमेण।

उपशामकेषु मृतो देवतमत्वं समाश्रयति॥559॥)

मिस्सा आहारस्स य खवगा चडमाणपढमपुव्वा य।

पढमुवसम्मा तमतमगुणपडिवण्णा य ण मरंति॥560॥

(मिश्राहाराश्रयकाः क्षपकाः चटमानप्रथमापूर्वाश्च।

प्रथमोपशमकाः तमस्तमोगुणप्रतिपन्नाश्च न मरन्ति॥560॥)

अणसंजोजिदमिच्छे मुहुत्तअंतं तु णत्थि मरणं तु।

किदकरणिज्जं जाव दु सव्वपरट्ठाण अट्ठपदा॥561॥

(अनसंयोगे मिथ्ये मुहूर्तान्तरिति नास्ति मरणं तु।

कृतकरणीयं यावत्तु सर्वपरस्थानानि अष्टपदानि॥561॥)

देवेसु देवमणुवे सुरणरतिरिये चउग्गईसुंपि।

कदकरणिज्जुप्पत्ती कमसो अंतोमुहुत्तेण॥562॥

(देवेषु देवमनुष्ये सुरनरतिरश्चि चतुर्गतिष्वपि।

कृतकरणीयोत्पत्तिः क्रमश अन्तर्मुहूर्तेन॥562॥)

तिविहो दु ठाणबंधो भुजगारप्पदरवट्ठिदो पढमो।

अप्पं बंधंतो बहुबंधे बिदियो दु विवरीयो॥563॥

तदियो सणामसिद्धो सव्वे अविरुद्धठाणबंधभवा।

ताणुप्पत्तिं कमसो भंगेण समं तु वोच्छामि॥564॥ जुम्मं।

(त्रिविधस्तु स्थानबन्धो भुजाकाराल्पतरावस्थितः प्रथमः।

अल्पं बध्नन् बहुबन्धे द्वितीयस्तु विपरीतः॥563॥

तृतीयः स्वनामसिद्धः सर्वे अविरुद्धस्थानबन्धभवाः।

तेषामुत्पत्तिं क्रमशो भङ्गेन समं तु वक्ष्यामि॥564॥ युग्मम्॥)

भूबादरतेवीसं बंधंतो सव्वमेव पणुवीसं।

बंधदि मिच्छाइट्ठी एवं सेसाणमाणेज्जो॥565॥

(भूबादरत्रयोविंश बध्नन् सर्वमेव पञ्चविंशतिः।

बध्नाति मिथ्यादृष्टिः एवं शेषाणामानेयः॥565॥)

तेवीसट्ठाणादो मिच्छत्तीसोत्ति बंधगो मिच्छो।

णवरि हु अट्ठावीसं पंचिंदियपुण्णगो चेव॥566॥

(त्रयोविंशतिस्थानात् मिथ्यात्वत्रिंशदिति बन्धको मिथ्यः।

नवरि हि अष्टाविंशं पञ्चेन्द्रियपूर्णकश्चैव॥566॥)

भोगे सुरट्ठवीसं सम्मो मिच्छो य मिच्छगअपुण्णे।

तिरिउगतीसं तीसं णरउगुतीसं च बंधदि हु॥567॥

(भोगे सुराष्टविंशं सम्यो मिथ्यश्च मिथ्यकापूर्णे।

तिर्यगेकोनत्रिंशत् त्रिंशत् नरैकोनत्रिंशत् च बध्नाति हि॥567॥)

मिच्छस्स ठाणभंगा एयारं सदरि दुगुणसोल णवं।

अडदालं बाणउदी सदाण छादाल चत्तधियं॥568॥

(मिथ्यस्य स्थानभङ्गा एकादश सप्ततिः द्विगुणषोडश नव।

अष्टचत्वारिंशत् द्वानवतिः शतानाम् षट्चत्वारिंशत्

चत्वारिंशदधिकम्॥568॥)

विवरीयेणप्पदरा होंति हु तेरासिएण भंगा हु।

पुव्वपरट्ठाणाणं भंगा इच्छा फलं कमसो॥569॥

(विपरीतेनाल्पतरा भवन्ति हि त्रैराशिकेन भङ्गा हि।

पूर्वापरस्थानानां भङ्गा इच्छा फलं क्रमशः॥569॥)

लघुकरणं इच्छंतो एयारादीहिं उवरिमं जोग्गं।

संगुणिदे भुजगारा उवरीदो होंति अप्पदरा॥570॥

(लघुकरणमिच्छतः एकादशादिभिरुपरिमं योग्यम्।

संगुणिते भुजाकारा उपरितो भवन्ति अल्पतराः॥570॥)

भुजगारप्पदराणं भंगसमासो समो हु मिच्छस्स।

पणतीसं चउणउदी सट्ठी चोदालमंककमे॥571॥

(भुजाकाराल्पतरयोः भङ्गसमासो समो हि मिथ्यस्य।

पञ्चत्रिंशत् चतुर्नवतिः षष्टिः चतुश्चत्वारिंशदङ्ककमेण॥571॥)

देवट्ठवीस णरदेवुगुतीस मणुस्सतीस बंधयदे।

तिछणवणवदुगभंगा तित्थविहीणा हु पुणरुत्ता॥572॥

(देवाष्टविंशं नरदेवैकोनत्रिंशत् मनुष्यत्रिंशत् बन्धोऽयते।

त्रिषट्नवनवद्विकभङ्गाः तीर्थविहीना हि पुनरुक्ताः॥572॥)

देवट्ठवीसबंधे देवुगुतीसम्मि भंग चउसट्ठी।

देवुगुतीसे बंधे मणुवत्तीसेवि चउसट्ठी॥573॥

(देवाष्टविंशबन्धे देवैकोनत्रिंशति भङ्गाः चतुष्षष्टिः।

देवैकोनत्रिंशति बन्धे मानवत्रिंशत्यपि चतुष्षष्टिः॥573॥)

तित्थयरसत्तणारयमिच्छो णरऊणतीसबंधो जो।

सम्ममि तीसबंधो तियछक्कडछक्कचउभंगा॥574॥

(तीर्थकरसत्त्वनारकमिथ्यो नरैकोनत्रिंशबन्धो यः।

सम्यञ्चि त्रिंशबन्धः त्रिकषट्काष्टषट्कचतुर्भङ्गाः॥574॥)

बावत्तरि अप्पदरा देवुगुतीसा दु णिरयअडवीसं।

बंधंत मिच्छभंगेणवगयतित्था हु पुणरुत्ता॥575॥

(द्वासप्ततिः अल्पतरा देवैकोनत्रिंशत्तु निरयाष्टविंशतिः।

बध्नन् मिथ्यभङ्गेनापगततीर्था हि पुनरुक्ताः॥575॥)

देवजुदेक्कट्ठाणे णरतीसे अप्पमत्तभुजयारा।

पणदालिगिहारुभये भंगा पुणरुत्तगा होंति॥576॥

(देवयुतैकस्थाने नरत्रिंशति अप्रमत्तभुजाकाराः।

पञ्चचत्वारिंशदेकाहारोभयेषु भंगाः पुनरुक्तका भवन्ति॥576॥)

इगि अड अट्ठिगि अट्ठिगिभेदड अट्ठड दुणव य वीस तीसेक्के।

अडिगिगि अडिगिगि बिहि उणखिगि इगिइगितीस देवचउ

कमसो॥577॥

(एकमष्ट अष्टैकमष्टैकभेदमष्टाष्टाष्ट द्विनव च विंशतिः त्रिंशदेकान्।

अष्टैकमेकमष्टैकैकं द्वाभ्यामेकोनखैकैकैकत्रिंशत् देवचतुष्कं

क्रमशः॥577॥)

इगिविहिगिगि खखतीसे दस णव णवडधियवीसमट्ठविहं।

देवचउक्केक्केक्के अपमत्तप्पदरछत्तीसा॥578॥

(एकविधिकमेकखखत्रिंशत् दशनव नवाष्टाधिकविंशमष्टविधम्।

देवचतुष्कमेकैकेन अप्रमत्ताल्पतरषट्त्रिंशत्॥578॥)

सव्वपरट्ठाणेण य अयदपमत्तिदरसव्वभंगा हु।

मिच्छस्सभंगमज्झे मिलिदे सव्वे हवे भंगा॥579॥

(सर्वपरस्थानेन च अयतप्रमत्तेतरसर्वभंगा हि।

मिथ्यस्स भङ्गमध्ये मिलिते सर्वे भवन्ति भङ्गाः॥579॥)

भुजगारा अप्पदरा हवंति पुव्ववरठाणसंताणे।

पयडिसमोऽसंताणोऽपुणरुत्तेत्ति य समुद्दिट्ठो॥580॥

(भुजाकारा अल्पतरा भवन्ति पूर्वापरस्थानसंताने।

प्रकृतिसमः असंतानोऽपुनरुक्त इति च समुद्दिष्टः॥580॥)

भुजगारे अप्पदरेऽवत्तव्वे ठाइदूण समबंधो।

होदि अवट्ठिदबंधो तब्भंगा तस्स भंगा हु॥581॥

(भुजाकारानल्पतरानवक्तव्यान् स्थापयित्वा समबन्धः।

भवति अवस्थितबन्धः तद्भङ्गाः तस्य भङ्गा हि॥581॥)

पडिय मरियेक्कमेक्कूणतीस तीसं च बंधगुवसंते।

बंधो दु अवत्तव्वो अवट्ठिदो बिदियसमयादी॥582॥

(पतित्वा मृत्वा एकमेकोनत्रिंशत् त्रिंशच्च बन्धकोपशान्ते।

बन्धस्तु अवक्तव्य अवस्थितो द्वितीयसमयादिः॥582॥)

विग्गहकम्मसरीरे सरीरमिस्से सरीरपज्जत्ते।

आणावचिपज्जत्ते कमेण पंचोदये काला ॥583॥

(विग्रहकार्मशरीरे शरीरमिश्रे शरीरपर्याप्ते।

आनवचःपर्याप्ते क्रमेण पञ्च उदये कालाः॥583॥)

एक्कं व दो व तिण्णि व समया अंतोमुहुत्तयं तिसुवि।

हेट्ठिमकालूणाओ चरिमस्स य उदयकालो दु॥584॥

(एको व द्वौ वा त्रयो वा समया अन्तर्मुहूर्तकः त्रिष्वपि।

अधस्तनकालोनः चरमस्य च उदयकालस्तु॥584॥)

सव्वापज्जत्ताणं दोण्णिवि काला चउक्कमेयक्खे।

पंचवि होंति तसाणं आहारस्सुवरिमचउक्कं॥585॥

(सर्वापर्याप्तानां द्वावपि कालौ चतुष्कमेकाक्षे।

पञ्चापि भवन्ति त्रसानामाहारस्योपरिमचतुष्कम्॥585॥)

कम्मोरालियमिस्सं ओरालुस्सासभास इति कमसो।

काला हु समुग्घादे उवसंहरमाणगे पंच॥586॥

(कर्मौरालिकमिश्रमौरालोच्छ्वासभाषेति क्रमशः।

काला हि समुद्घाते उपसंहरमाणके पञ्च॥586॥)

ओरालं दंडदुगे कवाडजुगले य तस्स मिस्सं तु।

पदरे य लोगपूरे कम्मे व य होदि णायव्वो॥587॥

(औरालं दण्डद्विके कपाटयुगले च तस्य मिश्रं तु।

प्रतरे च लोकपूरे कर्म्मणि वा च भवति ज्ञातव्यः॥587॥)

णामधुवोदयबारस गइजाईणं च तसतिजुम्माणं।

सुभगादेज्जजसाणं जुम्मेक्कं विग्गहे वाणु॥588॥

(नामध्रुवोदयद्वादश गतिजातीनां च त्रसत्रियुग्मानाम्।

सुभगादेययशसां युग्मैकं विग्रहे वानुः॥588॥)

मिस्सम्मि तिअंगाणं संठाणाणं च एगदरगं तु।

पत्तेयदुगाणेक्को उवघादो होदि उदयगदो॥589॥

(मिश्रे त्र्यङ्गानां संस्थानानां च एकतरकं तु।

प्रत्येकद्विकयोरेकः उपघातो भवति उदयगतः॥589॥)

तसमिस्से ताणि पुणो अंगोवंगाणमेगदरगं तु।

छण्हं संहडणाणं एगदरो उदयगो होदि॥590॥

परघादमंगपुण्णे आदावदुगं विहायमविरुद्धे।

सासवची तप्पुण्णे कमेण तित्थं च केवलिणि॥591॥ जुम्मं।

(त्रसमिश्रे तानि पुनः अङ्गोपाङ्गानामेकतरकं तु।

षण्णां संहननानामेकतरमुदयकं भवति॥590॥

परघातमङ्गपूर्णे आतापद्विकं विहायोऽविरुद्धे।

श्वासवचसी तत्पूर्णे क्रमेण तीर्थं च केवलिनि॥591॥ युग्मम्।)

वीसं इगिचउवीसं तत्तो इगितीसओत्ति एयधियं।

उदयट्ठाणा एवं णव अट्ठ य होंति णामस्स॥592॥

(विशमेकचतुर्विंशं तत एकत्रिंशदिति एकाधिकम्।

उदयस्थानान्येवं नवाष्ट च भवन्ति नाम्नः॥592॥)

चदुगदिया एइंदी विसेसमणुदेवणिरयएइंदी।

इगिबितिचपसामण्णा विसेससुरणारगेइंदी॥593॥

सामण्णसयलवियलविसेसमणुस्ससुरणारया दोण्हं।

सयलवियलसामण्णा सजोगपंचक्खवियलया सामी॥594॥ जुम्मं।

(चतुर्गतिका एकेन्द्रिया विशेषमनुदेवनिरयैकैन्द्रियाः।

एकद्वित्रिचपसामान्या विशेषसुरनारकैकेन्द्रियाः॥593॥

सामान्यसकलविकलविशेषमनुष्यसुरनारका द्वयोः।

सकलविकलसामान्याः सयोगपञ्चाक्षविकलकाः स्वामिनः॥594॥

युग्मम्।)

एगे इगिवीसपणं इगिछव्वीसट्ठवीसतिण्णि णरे।

सयले वियलेवि तहा इगितीसं चावि वचिठाणे॥595॥

सुरणिरयविसेसणरे इगिपणसगवीसतिण्णि समुघादे।

मणुसं वा इगिवीसे वीसं रूवाहियं तित्थं॥596॥

वीसदु चउवीसचऊ पणछव्वीसादिपंचयं दोसु।

उगुतीसति पणकाले गयजोगे होंति णव अट्ठं॥597॥ विसेसयं।

(एकस्मिन्नेकविंशतिपञ्च एकषड्विंशाष्टविंशत्रीणि नरे।

सकलेविकलेपि तथा एकत्रिंशत् चापि वचःस्थाने॥595॥

सुरनिरयविशेषनरे एकपञ्चससविंशत्रीणि समुद्घाते।

मनुष्यं वा एकविंशे विंशं रूपाधिकं तीर्थम्॥596॥

विंशद्विकं चतुर्विंशचतुष्कं पञ्चषड्विंशादिपञ्चकं द्वयोः।

एकोनत्रिंशन्त्रिकं पञ्चकालेषु गतयोगे भवन्ति नवाष्ट॥597॥

विशेषकम्।)

गयजोगस्स य बारे तदियाउगगोद इदि विहीणेसु।

णामस्स य णव उदया अट्ठेव य तित्थहीणेसु॥598॥

(गतयोगस्य च द्वादश तृतीयायुष्कगोत्रमिति विहीनेषु।

नाम्नश्च नव उदया अष्टैव च तीर्थहीनेषु॥598॥)

संठाणे संहडणे विहायजुम्मे य चरिमचदुजुम्मे।

अविरुद्धेक्कदरादो उदयट्ठाणेसु भंगा हु॥599॥

(संस्थाने संहनने विहायोयुग्मे च चरमचतुर्युग्मे।

अविरुद्धैकतरस्मात् उदयस्थानेषु भङ्गा हि॥599॥)

तत्थासत्था णारयसाहारणसुहुमगे अपुण्णे य।

सेसेगविगलऽसण्णीजुदठाणे जसजुगे भंगा॥600॥

(तत्राशस्ता नारकसाधारणसूक्ष्मके अपूर्णे च।

शेषैकविकलासंज्ञियुतस्थाने यशोयुग्मे भंगा॥600॥)

सण्णिम्मि मणुस्सम्मि य ओघेक्कदरं तु केवले वज्जं।

सुभगादेज्जजसाणि य तित्थजुदे सत्थमेदीदि॥601॥

(संज्ञिनि मनुष्ये च ओघैकतरं तु केवले वज्रम्।

सुभगादेययशांसि च तीर्थयुते शस्तमेतीति॥601॥)

देवाहारे सत्थं कालवियप्पेसु भंगमाणेज्जो।

वोच्छण्णं जाणित्ता गुणपडिवण्णेसु सव्वेसु॥602॥

(देवाहारे शस्तं कालविकल्पेषु भङ्ग आनेयः।

व्युच्छिन्नं ज्ञात्वा गुणप्रतिपन्नेषु सर्वेषु॥602॥)

वीसादीणं भंगा इगिदालपदेसु संभवा कमसो।

एक्कं सट्ठी चेव य सत्तावीसं च उगुवीसं॥603॥

वीसुत्तरछच्चसया बारस पण्णत्तरीहि संजुत्ता।

एक्कारससयसंखा सत्तरससयाहिया सट्ठी॥604॥

ऊणत्तीससयाहियएक्कावीसा तदोवि एकट्ठी।

एक्कारससयसहिया एक्केक्क विसरिसगा भंगा॥605॥ विसेसयं।

(विंशादीनां भङ्गा एकचत्वारिंशत्पदेषु संभवाः क्रमशः।

एकः षष्टिः चैव च सप्तविंशं च एकोनविंशम्॥606॥)

विंशोत्तरषट् च शतानि द्वादश पञ्चसप्ततिभिः संयुक्ताः।

एकादशशतसंख्या सप्तदशशताधिकाः षष्ठिः॥604॥

एकोनत्रिंशच्छताधिकैकविंशं ततोपि एकषष्ठिः।

एकादशशतसहिता एकैकं विसद्दशका भङ्गाः॥605॥ विशेषकम्।)

सामण्णकेवलिस्स समुग्घादगदस्स तस्स वचि भंगा।

तित्थस्सवि सगभंगा समेदि तत्थेक्कमवणिज्जो॥606॥

(सामान्यकेवलिनः समुद्घातगतस्य तस्य वचसि भङ्गाः।

तीर्थस्यापि स्वकभङ्गाः समा इति तत्रैकोपनेयः॥606॥)

णारयसण्णिमणुस्ससुराणं उवरिमगुणाण भंगा जे।

पुणरुत्ता इदि अवणिय भणिया मिच्छस्स भंगेसु॥607॥

(नारकसंज्ञिमनुष्यसुराणामुपरितनगुणानां भङ्गा ये।

पुनरुक्ता इति अपनीय भणिता मिथ्यस्य भङ्गेषु॥607॥)

अडवण्णा सत्तसया सत्तसहस्सा य होंति पिंडेण।

उदयट्ठाणे भंगा असहायपरक्कमुद्दिट्ठा॥608॥

(अष्टपञ्चाशत् सप्तशतानि सप्तसहस्राणि च भवन्ति पिण्डेन।

उदयस्थाने भङ्गा असहायपराक्रमोद्दिष्टाः॥608॥)

तिदुइगिणउदी णउदी अडचउदोअहियसीदि सीदी य।

ऊणासीदट्ठत्तरि सत्तत्तरि दस य णव सत्ता॥609॥

(त्रिद्वयेकनवतिः नवतिः अष्टचतुर्द्वयधिकाशीतिरशीतिश्च।

एकोनाशीत्यष्टसप्तती सप्त सप्ततिः दश च नव सत्त्वानि॥609॥)

सव्वं तित्थाहारुभऊणं सुरणिरयणरदुचारिदुगे।

उव्वेल्लिदे हृदे चउ तेरे जोगिस्स दसणवयं॥610॥

.

(सर्वं तीर्थाहारोभयोनं सुरनिरयनरद्विचतुर्द्विके।

उद्वेलिते हृते चतुष्कं त्रयोदश योगिनः दशनवकम्॥610॥)

गयजोगस्स दु तेरे तदियाउगगोदइदि विहीणेसु।

दस णामस्स य सत्ता णव चेव य तित्थहीणेसु॥611॥

(गतयोगस्य तु त्रयोदशसु तृतीयायुष्कगोत्रेतिविहीनेषु।

दश नाम्नश्च सत्ता णव चैव च तीर्थहीनेषु॥611॥)

गुणसंजादप्पयडिं मिच्छे बंधुदयगंधहीणम्मि।

सेसुव्वेल्लणपयडिं णियमेणुव्वेल्लदे जीवो॥612॥

(गुणसंजातप्रकृतिं मिथ्ये बन्धोदयगन्धहीने।

शेषोद्वेलनप्रकृतिं नियमेनोद्वेल्लयति जीवः॥612॥)

सत्थत्तादाहारं पुव्वं उव्वेल्लदे तदो सम्मं।

सम्मामिच्छं तु तदो एगो विगलो य सगलो य॥613॥

(शस्तत्वादाहारं पूर्वमुद्वेल्लयति ततः सम्यक्॥

सम्यग्मिथ्यं तु तत एको विकलश्च सकलश्च॥613॥)

वेदगजोग्गे काले आहारं उवसमस्स सम्मत्तं।

सम्मामिच्छं चेगे वियले वेगुव्वछक्कं तु॥614॥

(वेदकयोग्ये काले आहारमुपशमस्य सम्यक्त्वम्।

सम्यग्मिथ्यं चैकस्मिन् विकले वैगूर्वषट्कं तु॥624॥)

उदधिपुधत्तं तु तसे पल्लासंखूणमेगमेयक्खे।

जाव य सम्मं मिस्सं वेदगजोग्गो य उवसमस्स तदो॥615॥

(उदधिपृथक्त्वं तु त्रसे पल्यासंख्योनमेकमेकाक्षे।

यावच्च सम्यं मिश्रं वेदकयोग्यश्च उपशमस्य ततः॥615॥)

तेउदुगे मणुवदुगं उच्चं उव्वेल्लदे जहण्णिदरं।

पल्लासंखेज्जदिमं उव्वेल्लणकालपरिमाणं॥616॥

(तेजोद्विके मनुष्यद्विकमुच्चमुद्वेल्यते जघन्येतरत्।

पल्यासंख्येयिममुद्वेलनकालपरिमाणम्॥616॥)

पल्लासंखेज्जदिमं ठिदिमुव्वेल्लदि मुहुत्तअंतेण।

संखेज्जसायरठिदिं पल्लासंखेज्जकालेण॥617॥

(पल्यासंख्येयिमां स्थितिमुद्वेलयति मुहूर्तान्तरेण।

संख्येयसागरस्थितिं पल्यासंख्येयकालेन॥617॥)

सम्मत्तं देसजमं अणसंजोजणविहिं च उक्कस्सं।

पल्लासंखेज्जदिमं वारं पडिवज्जदे जीवो॥618॥

(सम्यक्त्वं देशयममनसंयोजनविधिं च उत्कृष्टम्।

पल्यासंख्येयं वारं प्रतिपद्यते जीवः॥618॥)

चत्तारि वारमुवसमसेढिं समरुहदि खविदकम्मंसो।

बत्तीसं वाराइं संजममुवलहिय णिव्वादि॥619॥

(चतुरो वारानुपशमश्रेणिं समारोहति क्षपितकर्मांशः।

द्वात्रिंशद्वारान् संयममुपलभ्य निर्वाति॥619॥)

तित्थाहाराणुभयं सव्वं तित्थं ण मिच्छगादितिये।

तस्सत्तकम्मियाणं तग्गुणठाणं ण संभवई॥620॥

(तीर्थाहारोभयं सर्वं तीर्थं न मिथ्यकादित्रये।

तत्सत्वकर्मकाणां तद्गुणस्थानं न संभवति॥620॥)

सुरणरसम्मे पढमो सासणहीणेसु होदि बाणउदी।

सुरसम्मे णरणारयसम्मे मिच्छे य इगिणउदी॥620॥

(सुरनरसम्ये प्रथमं सासनहीनेषु भवति द्वानवतिः।

सुरसम्ये नरनारकसम्ये मिथ्ये च एकनवतिः॥620॥)

णउदी चदुग्गदिम्मि य तेरसखवगोत्ति तिरियणरमिच्छे।

अडचउसीदी सत्ता तिरिक्खमिच्छम्मि बासीदी॥621॥

(नवतिः चतुर्गतौ च त्रयोदशक्षपक इति तिर्यग्नरमिथ्ये।

अष्टचतुरशीतिः सत्ता तिर्यङ्मिथ्ये व्यशीतिः॥621॥)

सीदादिचउट्ठाणा तेरसखवगादु अणुवसमगेसु।

गयजोगस्स दुचरिमं जाव य चरिमम्हि दसणवयं॥622॥

(अशीत्यादिचतुःस्थानानि त्रयोदशक्षपकादनुपशामकेषु।

गतयोगस्य द्विचरमं यावच्च चरमे दशनवकम्॥622॥)

णिरये वा इगिणउदी णउदी भूआदिसव्वतिरियेसु।

बाणउदी णउदी अडचउबासीदी य होंति सत्ताणि॥623॥

(निरये द्वयेकनवतिः नवतिः भ्वादिसर्वतिर्यक्षु।

द्वानवतिः नवतिः अष्ठचतुर्द्वयशीतिश्च भवन्ति सत्त्वानि॥623॥)

बासीदिं वज्जित्ता बारसठाणाणि होंति मणुवेसु।

सीदादिचउट्ठाणा छट्ठाणा केवलिदुगेसु॥624॥

(व्यशीतिं वर्जयित्वा द्वादशस्थानानि भवन्ति मानवेषु।

अशीत्यादिचतुःस्थानानि षट्स्थानानि केवलिद्विकयोः॥624॥)

समविसमट्ठाणाणि च कमेण तित्थिदरकेवलीसु हवे।

तिदुणवदी आहारे देवे आदिमचउक्कं तु॥625॥

(समविषमस्थानानि च क्रमेण तीर्थेतरकेवलिनोः भवेयुः।

त्रिद्विनवतिः आहारे देवे आदिमचतुष्कं तु॥625॥)

बाणउदिणउदिसत्ता भवणतियाणं च भोगभूमीणं।

हेट्ठिमपुढविचउक्कभवाणं च य सासणे णउदी॥626॥

(द्वानवतिनवतिसत्ता भवनत्रिकाणां य भोगभूमीनाम्।

अधस्तनपृथिवीचतुष्कभवानां च च सासने नवतिः॥626॥)

मूलुत्तरपयडीणं बंधोदयसत्तठाणभंगा हु।

भणिदा हु तिसंजोगे एत्तो भंगे परूवेमो॥627॥

(मूलोत्तरप्रकृतीनां बन्धोदयसत्त्वस्थानभङ्गा हि।

भणिता हि त्रिसंयोगे इतो भङ्गान् प्ररूपयामः॥627॥)

अट्ठविहसत्तछब्बंधगेसु अट्ठेव उदयकम्मंसा।

एयविहे तिवियप्पो एयवियप्पो अबंधम्मि॥628॥

(अष्टविधसप्तषड्बन्धकेषु अष्टैव उदयकर्मांशाः।

एकविधे त्रिविकल्प एकविकल्प अबन्धे॥628॥)

मिस्से अपुव्वजुगले बिदियं अपमत्तओत्ति पढमदुगं।

सुहुमादिसु तदियादी बंधोदयसत्तभंगेसु॥629॥

(मिश्रे अपूर्वयुगले द्वितीयमप्रमत्त इति प्रथमद्विकम्।

सूक्ष्मादिषु तृतीयादिः बन्धोदयसत्त्वभङ्गेषु॥629॥)

बंधोदयकम्मंसा णाणावरणंतरायिए पंच।

बंधोपरमेवि तहा उदयंसा होंति पंचेव॥630॥

(बन्धोदयकर्मांशा ज्ञानावरणान्तराययोः पञ्च।

बन्धोपरमेपि तणा उदयांशा भवन्ति पञ्चैव॥630॥)

बिदियावरणे णवबंधगेसु चदुपंचउदय णवसत्ता।

छब्बंधगेसु एवं तह चदुबंधे छडंसा य॥631॥

उवरदबंधे चदुपंचउदय णव छच्च सत्त चदु जुगलं।

तदियं गोदं आउं विभज्ज मोहं परं वोच्छं॥632॥ जुम्मं।

(द्वितीयावरणे नवबन्धकेषु चतुःपञ्चोदयः नवसत्ता।

षट्बन्धकेषु एवं तथा चतुर्बन्धे षडंशाश्च॥631॥

उपरतबन्धे चतुःपञ्चोदयः णव षट् च सत्त्वं चतुष्कं युगलम्।

तृतीयं गोत्रमायुर्विभज्य मोहं परं वक्ष्ये॥632॥ युग्मम्।)

सादासादेक्कदरं बंधुदया होंति संभवट्ठाणे।

दोसत्तं जोगित्ति य चरिमे उदयागदं सत्तं॥633॥

छट्ठोत्ति चारि भंगा दो भंगा होंति जाव जोगिजिणे।

चउभंगाऽजोगिजिणे ठाणं पडि वेयणीयस्स॥634॥ जुम्मं।

(सातासातैकतरं बन्धोदयौ भवतः संभवस्थाने।

द्विसत्त्वं योगीति च चरमे उदयागतं सत्त्वम्॥633॥

षष्ठ इति चत्वारो भङ्गा द्वौ भङगौ भवतो यावत् योगिजिनम्।

चतुर्भङ्गा अयोगिजिने स्थानं प्रति वेदनीयस्य॥634॥ युग्मम्।)

णीचुच्चाणेगदरं बंधुदया होंति संभवट्ठाणे।

दोसत्ताजोगित्ति य चरिमे उच्चं हवे सत्तं॥635॥

(नीचोच्चयोरेकतरं बंधोदयौ भवतः संभवस्थाने।

द्विसत्त्वमयोगीति च चरमे उच्चं भवेत् सत्त्वम्॥635॥)

उच्चुव्वेल्लिदतेऊ वाउम्मि य णीचमेव सत्तं तु।

सेसिगिवियले सयले णीचं च दुगं च सत्तं तु॥636॥

(उच्चोद्वेलिततेजसि वायौ च नीचमेव सत्त्वं तु।

शेषैकविकले सकले नीचं च द्विकं च सत्त्वं तु॥636॥)

उच्चुव्वेल्लिदतेऊ वाऊ सेसे य वियलसयलेसु।

उप्पण्णपढमकाले णीचं एयं हवे सत्तं॥637॥

(उच्चोद्वेलिततेजसि वायौ शेषे च विकलसकलेषु।

उत्पन्नप्रथमकाले नीचमेकं भवेत् सत्त्वम्।)

मिच्छादिगोदभंगा पण चदु तिसु दोण्णि अट्ठठाणेसु।

एक्केक्का जोगिजिणे दो भंगा होंति णियमेण॥638॥

(मिथ्यादौ गोत्रभङ्गाः पञ्च चत्वारः त्रिषु द्वौ अष्टस्थानेषु।

एकैकः अयोगिजिने द्वौ भङ्गौ भवन्ति नियमेन॥638॥)

सुरणिरया णरतिरियं छम्मासवसिट्ठगे सगाउस्स।

णरतिरिया सव्वाउं तिभागसेसम्मि उक्कस्सं॥639॥

भोगभुमा देवाउं छम्मासवसिट्ठगे य बंधंति।

इगिविगला णरतिरियं तेउदुगा सत्तगा तिरियं॥640॥ जुम्मं।

(सुरनिरयाः नरतिर्यञ्चं षण्मासावशिष्टके स्वकायुषः।

नरतिर्यञ्चः सर्वायूंषि त्रिभागशेषे उत्कृष्टम्॥639॥

भोगभूमा देवायुः षण्मासावशिष्टके च बध्नन्ति।

एकविकला नरतिर्यञ्चं तेजोद्विकौ सप्तकाः तिर्यञ्चम्॥640॥

युग्मम्।)

सगसगगदीणमाउं उदेदि बंधे उदिण्णगेण समं।

दो सत्ता हु अबंधे एक्कं उदयागदं सत्तं॥641॥

(स्वकस्वकगतीनामायुरुदेति बन्धे उदीर्णकेन समम्।

द्वे सत्त्वे हि अबन्धे एकमुदयागतं सत्त्वम्॥641॥)

एक्के एक्कं आऊ एक्कभवे बंधमेदि जोग्गपदे।

अडवारं वा तत्थवि तिभागसेसे व सव्वत्थ॥642॥

(एकस्मिन्नेकमायुरेकभवे बन्धमेति योग्यपदे।

अष्टवारं वा तत्रापि त्रिभागशेषे एव सर्वत्र॥642॥)

इगिवारं वज्जित्ता वड्ढी हाणी अवट्ठिदी होदि।

ओवट्ठणघादो पुण परिणामवसेण जीवाणं॥643॥

(एकवारं वर्जयित्वा वृद्धिः हानिः अवस्थितिः भवति।

अपवर्तनघातः पुनः परिणामवशेन जीवानाम्॥643॥)

एवमबंधे बंधे उवरदबंधेवि होंति भंगा हु।

एक्कस्सेक्कम्भि भवे एक्काउं पडि तये णियमा॥644॥

(एवमबन्धे बन्धे उपरतबन्धेपि भवन्ति भङ्गा हि।

एकस्यैकस्मिन् भवे एकायुः प्रति त्रयो नियमात्॥644॥)

एक्काउस्स तिभंगा संभवआऊहिं ताडिदे णाणा।

जीवे इगिभवभंगा रूऊणगुणूणमसरित्थे॥645॥

(एकायुषः त्रिभङ्गा संभवायुर्भिस्ताडिने नाना।

जीवेषु एकभवभङ्गा रूपोनगुणोनमसदृशे॥645॥)

पण णव णव पण भंगा आउचउक्केसु होंति मिच्छम्मि।

णिरयाउबंधभंगेणूणा ते चेव बिदियगुणे॥646॥

(पञ्च नव नव पञ्च भङ्गा आयुश्चतुष्केषु भवन्ति मिथ्ये।

निरयायुर्बन्धभङ्गेनोनास्ते चैव द्वितीयगुणे॥646॥)

सव्वाउबंधभंगेणूणा मिस्सम्मि अयदसुरणिरये।

णरतिरिये तिरियाऊ तिण्णाउगबंधभंगूणा॥647॥

(सर्वायुर्बन्धभङ्गेनोना मिश्रे अयतसुरनिरये।

नरतिरश्चि तिर्यगायुः त्रिकायुष्कबन्धभङ्गोनाः॥647॥)

देस णरे तिरिये तियतियभंगा होंति छट्ठसत्तमगे।

तियभंगा उवसमगे दो दो खवगेसु एक्केक्को॥648॥

(देशे नरे तिरश्चि त्रिकत्रिकभङ्गा भवन्ति षष्ठसप्तमके।

त्रिकभङ्गा उपशमके द्वौ द्वौ क्षपकेषु एकैकः॥648॥)

अडछव्वीसं सोलस वीसं छत्तिगतिगं च चदुसु दुगं।

असरिसभंगा तत्तो अजोगिअंतेसु एक्केक्को॥649॥

(अष्टषड्विंशतिः षोडश विंशतिः षड् त्रिकत्रिकं च चतुर्षु द्विकम्।

असदृशभंगाः तत अयोग्यन्तेषु एकैकः॥649॥)

बादालं पणुवीसं सोलसअहियं सयं च वेयणिये।

गोदे आठम्मि हवे मिच्छादिअजोगिणो भंगा॥650॥

(द्वाचत्वारिंशत् पञ्चविंशतिः षोडशाधिकं शतं च वेदनीये।

गोत्रे आयुषि भवेयुः मिथ्याद्ययोगिनो भंगाः॥650॥)

वेयणिये अडभंगा गोदे सत्तेव होंति भंगा हु।

पण णव णव पण भंगा आठचठक्केसु विसरित्था॥651॥

(वेदनीये अष्ट भंगा गोत्रे सप्तैव भवन्ति भङ्गा हि।

पञ्च नव नव पञ्च भङ्गा आयुश्चतुष्केषु विसदृशाः॥651॥)

मोहस्स य बंधोदयसत्तट्ठाणाण सव्वभंगा हु।

पत्तेउत्तं व हवे तियसंजोगेवि सव्वत्थ॥652॥

(मोहस्य च बन्धोदयसत्त्वस्थानानां सर्वभङ्गा हि।

प्रत्येकोक्तं व भवन्ति त्रिकसंयोगेपि सर्वत्र॥652॥)

अट्ठसु एक्को बंधो उदया चदु ति दुसु चउसु चत्तारि।

तिण्णि य कमसो सत्तं तिण्णेगदु चउसु पणग तियं॥653॥

अणियट्टीबंधतियं पणदुगएक्कारसुहुमउदयंसा।

इगि चत्तारि च संते सत्तं तिण्णेव मोहस्स॥654॥ जुम्मं।

(अष्टसु एको बन्ध उदयाः चत्वारः त्रयः द्वयोः चतुर्षु चत्वारः।

त्रीणि च क्रमशः सत्त्वं त्र्येकद्विकं चतुर्षु पञ्चकं त्रिकम्॥653॥

अनिवृत्तिबन्धत्रिकं पञ्चद्विकैकादश सूक्ष्मोदयांशाः।

एकः चत्वारश्च शान्ते सत्त्वं त्रीण्येव मोहस्य॥654॥ युग्मम्।)

बावीसं दसयचऊ अडवीसतियं च मिच्छबंधादी।

इगिवीसं णवयतियं अट्ठावीसे च बिदियगुणे॥655॥

(द्वाविंशतिः दशकचतुष्कमष्टाविंशतित्रिकं च मिथ्ये बन्धादिः।

एकविंशतिः नवकत्रिकमष्टाविंशतिश्च द्वितीयगुणे॥655॥)

सत्तरसं णवयतियं अडचउवीसं पुणोवि सत्तरसं।

णवचउ अडचउवीस य तिवीसतियमंसयं चउसु॥656॥

(सप्तदश नवकत्रयमष्टचतुर्विंशं पुनरपि सप्तदश।

नवचतुष्कमष्टचतुर्विंशं च त्रयोविंशत्रयमंशकं चतुर्षु॥656॥)

तेरट्ठचऊ देसे पमदिदरे णव सगादिचत्तारि।

तो णवगं छादितियं अडचउरिगिवीसयं च बंधतियं॥657॥

(त्रयोदश अष्टचतुष्कं देशे प्रमत्तेतरयोः नव सप्तकादिचत्वारि।

अतो नवकं षडादित्रयमष्टचतुरेकविंशकं च बंधत्रयम्॥657॥)

पंचादिपंचबंधो णवमगुणे दोण्णि एक्कमुदयो दु।

अट्ठचदुरेक्कवीसं तेरादीअट्ठयं सत्तं॥658॥

(पञ्चादिपञ्चबन्धो नवमगुणे द्वौ एक उदयस्तु।

अष्टचतुरेकविंशं त्रयोदशाद्यष्टकं सत्त्वम्॥658॥)

लोहेक्कुदओ सुहुमे अडचउरिगिवीसमेक्कयं सत्तं।

अडचउरिगिवीसंसा संते मोहस्स गुणठाणे॥659॥

(लोभैकोदयः सूक्ष्मे अष्टचतुरेकविंशमेकं सत्त्वम्।

अष्टचतुरेकविंशांशाः शान्ते मोहस्य गुणस्थाने॥659॥)

बंधपदे उदयंसा उदयट्ठाणेवि बंध सत्तं च।

सत्ते बंधुदयपदं इगिअधिकरणे दुगाधेज्जं॥660॥

(बन्धपदे उदयांशा उदयस्थानेपि बन्धः सत्वं च।

सत्त्वे बन्धोदयपदमेकाधिकरणे द्विकाधेयम्॥660॥)

बावीसयादिबंधसुदयंसा चदुतितिगिचउपंच।

तिसु इगि छद्दो अट्ठ य एक्कं पंचेव तिट्ठाणे॥661॥

(द्वाविंशकादिबन्धेषूदयांशाः चतुस्त्रित्रिकैकचतुःपञ्च।

त्रिष्वेकः षट् द्वौ अष्ट च एकः पञ्चैव त्रिस्थाने॥661॥)

दसअचऊ पढमतियं णवतियमडवीसयं णवादिचऊ।

अडचदुतिदुइगिवीसं अडचदु पुव्वं व सत्तं तु॥662॥

(दशकचतुष्कं प्रथमत्रिकं नवत्रिकमष्टाविंशकं नवादिचतुष्कम्।

अष्टचतुस्त्रिद्वयेकविंशमष्टचतुष्कं पूर्वं व सत्त्वं तु॥662॥)

सगचउ पुव्वं वंसा दुगमडचउरेक्कवीस तेरतियं।

दुगमेक्कं च य सत्तं पुव्वं वा अत्थि पणगदुगं॥663॥

(सप्तचतुष्कं पूर्वं वांशा द्विकमष्टचतुरेकविंशं त्रयोदशत्रयम्।

द्विकमेकं च च सत्त्वं पूर्वं वा अस्ति पञ्चकद्विकम्॥663॥)

तिसु एक्केक्कं उदओ अडचउरिगिवीससत्तसंजुत्तं।

चदुतिदयं तिदयदुगं दो एक्कं मोहणीयस्स॥664॥

(त्रिषु एकैक उदय अष्टचतुरेकविंशसत्त्वसंयुक्तम्।

चतुस्त्रितयं त्रितयद्विकं द्वे एकं मोहनीयस्य॥664॥)

दसयादिसु बंधंसा इगितिय तियछक्क चारिसत्तं च।

पणपण तियपण दुगपण इगितिग दुगछच्चऊणवयं॥665॥

(दशकादिषु बन्धांशा एकत्रिकं त्रिकषट्कं चतुःसप्त च।

पञ्चपञ्च त्रिकपञ्च द्विकपञ्च एकत्रिकं द्विकषट् तुर्नवकम्॥665॥)

पढमं पढमतिचउपणसत्तरतिग चदुसु बंधयं कमसो।

पढमतिछस्सगमडचउतिदुइगिवीसंसयं दोसु॥666॥

(प्रथमं प्रथमत्रिचतुःपञ्चसप्तदशत्रिकं चतुर्षु बन्धकं क्रमशः।

प्रथमत्रिषट्सप्त अष्टचतुस्त्रिद्विकैकविंशांशकं द्वयोः॥666॥)

तेरदु पुव्वं वंसा णवमडचउरेक्कवीससत्तमदो।

पणदुगमडचउरेक्कावीसं तेरसतियं सत्तं॥667॥

(त्रयोदशद्विकं पूर्वं वांशा नवममष्टचतुरेकविंशसत्त्वमतः।

पञ्चद्विकमष्टचतुरेकविंशं त्रयोदशत्रिकं सत्त्वम्॥667॥)

चरिमे चदुतिदुगेक्कं अट्ठयचदुरेक्कसंजुदं वीसं।

एक्कारादीसव्वं कमेण ते मोहणीयस्स॥668॥

(चरमे चतुस्त्रिद्विकैकमष्टकचतुरेकसंयुतं विंशम्।

एकादशादिसर्वं क्रमेण तानि मोहनीयस्य॥668॥)

सत्तपदे बंधुदया दसणव इगिति दुसु अडड तिपण दुसु।

अडसग दुगि दुसु बिबिगिगि दुगि तिसु इगिसुण्णमेक्कं च॥669॥

(सत्त्वपदे बन्धोदया दशनव एकत्रिकं द्वयोः अष्टाष्ट त्रिपञ्च द्वयोः।

अष्टसप्त व्येकं द्वयोः द्विद्विकमेकैकं व्येकं त्रिषु एकशून्यमेकं

च॥669॥)

सव्वं सयलं पढमं दसतिय दुसु सत्तरादियं सव्वं।

णवयप्पहुदीसयलं सत्तरति णवादिपण दुपदे॥670॥

सत्तरसादि अडादीसव्वं पण चारि दोण्णि दुसु तत्तो।

पंचचउक्क दुगेक्कं चदुरिगि चदुतिण्णि एक्कं च॥671॥

तत्तो तियदुगमेक्कं दुप्पयडीएक्कमेक्कठाणं च।

इगिणभबंधो चरिमे एउदओ मोहणीयस्स॥672॥ विसेसयं।

(सर्वं सकलं प्रथमं दशत्रिकं द्वयोः सप्तदशादिकं सर्वम्।

नवकप्रभृति सकलं सप्तदशत्रिकं नवादिपञ्च द्विपदे॥670॥

सप्तदशादि अष्टादि सर्वं पञ्च चत्वारि द्वे द्वयोः ततः।

पञ्चचतुष्कं द्विकैकं चतुरेकं चतुस्त्रीणि एकं च॥671॥

ततः त्रिकद्विकमेकं द्विप्रकृत्येकमेकस्थानं च।

एकनभोबन्धो चरमे एकोदयो मोहनीयस्य॥672॥ विशेषकम्।)

बंधुदये सत्तपदं बंधंसे णेयमुदयठाणं च।

उदयंसे बंधपदं दुट्ठाणाधारमेक्कमाधेज्जं॥673॥

(बन्धोदये सत्त्वपदं बन्धांशे ज्ञेयमुदयस्थानं च।

उदयांशे बन्धपदं द्विस्थानाधारमेकमाधेयम्॥673॥)

बावीसेण णिरुद्धे दसचउरुदये दसादिठाणतिये।

अट्ठावीसति सत्तं सत्तुदये अट्ठवीसेव॥674॥

(द्वाविंशेन निरुद्धे दशचतुष्कोदये दशादिस्थानत्रये।

अष्टविंशत्रिकं सत्त्वं सप्तोदये अष्टविंशमेव॥674॥)

इगिवीसेण णिरुद्धे णवयतिये सत्तमट्ठवीसेव।

सत्तरसे णवचदुरे अडचउतिदुगेक्कवीसंसा॥675॥

(एकविंशेन निरुद्धे नवकत्रये सत्त्वमष्टविंशमेव।

सप्तदशे नवचतुष्के अष्टचतुस्त्रिद्विकैकविंशांशाः॥675॥)

इगिवीसं ण हि पढमे चरिमे तिदुवीसयं ण तेरणवे।

अडचउसगचउरुदये सत्तं सत्तरसयं व हवे॥676॥

(एकविंशं नहि प्रथमे चरमे त्रिद्विविंशकं न त्रयोदशनवके।

अष्टचतुःसप्तचतुरुदये सत्त्वं सप्तदशकं व भवेत्॥676॥)

णवरि य अपुव्वणवगे छादितियुदयेवि णत्थि तिदुवीसा।

पणबंधे दोऽदये अडचऽरिगिवीसतेरसादितियं॥677॥

(नवरि च अपूर्वनवके षडादित्रिकोदयेपि नास्ति त्रिद्विविंशम्।

पञ्चबन्धे द्विकोदये अष्टचतुरेकविंशत्रयोदशादित्रयम्॥677॥)

चदुबंधे दोऽदये सत्तं पुव्वं व तेण एक्कुदये।

अडचऽरेक्कावीसा एयारतिगं च सत्ताणि॥678॥

(चतुर्बन्धे द्विकोदये सत्त्वं पूर्वं व तेन एकोदये।

अष्टचतुरेकविंशानि एकादशत्रिकं च सत्त्वानि॥678॥)

तिदुइगिबंधेक्कुदये चदुतियठाणेण तिदुगठाणेण।

दुगिठाणेण य सहिदा अडचऽरिगिवीसया सत्ता॥679॥

(त्रिद्विकैकबन्धे एकोदये चतुस्त्रिकस्थानेन त्रिद्विकस्थानेन।

द्विकैकस्थानेन च सहितानि अष्टचतुरेकविंशकानि सत्त्वानि॥679॥)

बावीसे अडवीसे दसचऽरुदओ अणे ण सगवीसे।

छव्वीसे दसयतियं इगिअडवीसे दु णवयतियं॥680॥

(द्वाविंशतौ अष्टविंशतौ दशचतुष्कोदय अने न सप्तविंशतौ।

षड्विंशतौ दशकत्रयमेकाष्टविंशतौ तु नवकत्रयम्॥680॥)

सत्तरसे अडचदुवीसे णवयचदुरुदयमिगिवीसे।

णो पढमुदओ एवं तिदुवीसे णंतिमस्सुदओ॥681॥

(सप्तदश अष्टचतुर्विंशे नवकचतुष्कोदय एकविंशे।

नो प्रथमोदय एवं त्रिद्विविंशे नान्तिमस्योदयः॥681॥)

तेरणवे पुव्वंसे अडादिचउ सगचउण्हमुदयाणं।

सत्तरसं व वियारो पणगुवसंते सगेसु दो उदया॥682॥

(त्रयोदशनवमे पूर्वांशे अष्टादिचतुष्कं सप्तचतुष्कमुदयानाम्।

सप्तदशं व विचारः पञ्चकोपशान्ते स्वकेषु द्वौ उदयौ॥682॥)

तेणेवं तेरतिये चदुबंधे पुव्वसत्तगेसु तहा।

तेणुवसंतंसेयारतिए एक्को हवे उदओ॥683॥

(तेनैवं त्रयोदशत्रये चतुर्बन्धे पूर्वसत्त्वकेषु तथा।

तेनोपशान्तांशे एकादशत्रये एको भवेत् उदयः॥683॥)

तिदुइगिबंधे अडचउरिगिवीसे चदुतिएण ति दुगेण।

दुगिसत्तेण य सहिदे कमेण एक्को हवे उदओ॥684॥

(त्रिद्वयेकबन्धे अष्टचतुरेकविंशे चतुस्त्रिकेण त्रिद्विकेन।

द्वयेकसत्त्वेन च सहिते क्रमेण एको भवेत् उदयः॥684॥)

दसगुदये अडवीसतिसत्ते बावीसबंध णवअट्ठे।

अडवीसे बावीसतिचउबंधो सत्तवीसदुगे॥685॥

(दशकोदये अष्टविंशत्रिसत्त्वे द्वाविंशबन्धः नवाष्टके।

अष्टविंशतौ द्वाविंशतित्रिचतुर्बन्धः सप्तविंशद्विके॥685॥)

बावीसबंध चदुतिदुवीसंसे सत्तरसयददुगबंधो।

अट्ठुदये इगिवीसे सत्तरबंधं विसेसं तु॥686॥ जुम्मं।

(द्वाविंशबन्धः चतुस्त्रिद्विविंशांशे सप्तदशायतद्विकबन्धः।

अष्टोदये एकविंशे सप्तदशबन्धा विशेषस्तु॥686॥ युग्मम्।)

सत्तुदये अडवीसे बन्धो बावीसपंचयं तेण।

चउवीसतिगे अयदतिबंधो इगिवीसगयददुगबंधो॥687॥

(सप्तोदये अष्टविंशे बन्धो द्वाविंशपञ्चकं तेन।

चतुर्विंशत्रिके अयतत्रिबन्धः एकविंशके अयतद्विकबन्धः॥687॥)

छप्पणउदये उवसंतंसे अयदतिगदेसदुगबंधो।

तेण तिदोवीसंसे देसदुणवबंधयं होदि॥688॥

(षट्पञ्चोदये उपशान्तांशे अयतत्रिकदेशद्विकबन्धः।

तेन त्रिद्विविंशांशे देशद्विनवबन्धकं भवति॥688॥)

चउरुदयुवसंतंसे णवबंधो दोण्णिउदयपुव्वंसे।

तेरसतियसत्तेवि य पण चउ ठाणाणि बंधस्स॥689॥

(चतुरुदयोपशान्तांशे नवबन्धो द्विकोदयपूर्वांशे।

त्रयोदशत्रयसत्त्वेपि च पञ्चचतुःस्थानानि बन्धस्य॥689॥)

एक्कुदयुवसंतंसे बंधो चदुरादिचारि तेणेव।

एयारदु चदुबंधो चदुरंसे चदुतियं बंधो॥690॥

(एकोदयोपशान्तांशे बन्धः चतुरादिचत्वारः तेनैव।

एकादशद्विके चतुर्बन्धः चतुरंशे चतुस्त्रिको बन्धः॥690॥)

तेण तिये तिदुबंधो दुगसत्ते दोण्णि एक्कयं बंधो।

एक्कंसे इगिबंधो गयणं वा मोहणीयस्स॥691॥

(तेन त्रये त्रिद्विबन्धो द्विकसत्त्वे द्वौ एको बन्धः।

एकांशे एकबन्धो गगनं वा मोहनीयस्य॥691॥)

णामस्स य बंधोदयसत्तट्ठाणाण सव्वभंगा हु।

पत्तेउत्तं व हवे तियसंजोगेवि सव्वत्थ॥692॥

(नाम्नश्च बन्धोदयसत्त्वस्थानानां सर्वभङ्गा हि।

प्रत्येकोक्तं च भवेयुः त्रिकसंयोगिपि सर्वत्र ॥692॥)

छण्णवछत्तियसगइगि दुगतिगदुग तिण्णिअट्ठचत्तारि।

दुगदुगचदु दुगपणचदु चदुरेयचदू पणेयचदु॥693॥

एगेगमट्ठ एगेगमट्ठ छदुमट्ठ केवलिजिणाणं।

एगचदुरेगचदुरो दोचदु दोछक्क बंधउदयंसा॥694॥ जुम्मं।

(षट्नवषट् त्रिकसप्तैकं द्विकत्रिकद्विकं त्रिकाष्टचत्वारि।

द्विकद्विकचतुष्कं द्विकपञ्चचतुष्कं चतुरेकचतुष्कं

पञ्चैकचतुष्कम्॥693॥

एकैकाष्ट एकैकाष्ट छद्मस्थ केवलिजिनानाम्।

एकचतुष्कमेकचतुष्कं द्विचतुष्कं द्विषट्कं बन्धोदयांशाः॥694॥

युग्मम्।)

णामस्स य बंधोदयसत्ताणि गुणं पडुच्च उत्ताणि।

पत्तेयादो सव्वं भणिदव्वं अत्थजुत्तीए॥695॥

(नाम्नश्च बन्धोदयसत्त्वानि गुणं प्रतीत्य उक्तानि।

प्रत्येकात् सर्वं भणितव्यमर्थयुक्त्या॥695॥)

तेवीसादी बंधा इगिवीसादीणि उदयठाणाणि।

बाणउदादी सत्तं बंधा पुण अट्ठवीसतियं॥696॥

इगिवीसादीएक्कत्तीसंता सत्तअट्ठवीसूणा।

उदया सत्तं णउदी बंधा पुण अट्ठवीसदुगं॥697॥

एगुणतीसत्तिदयं उदयं बाणउदिणउदियं सत्तं।

अयदे बंधट्ठाणं अट्ठावीसत्तियं होदि॥698॥

उदया चउवीसूणा इगिवीसप्पहुदिएक्कतीसंता।

सत्तं पढमचउक्कं अपुव्वकरणोत्ति णायव्वं॥699॥ कलावयं।

(त्रयोविंशादयो बन्धा एकविंशादीनि उदयस्थानानि।

द्वानवत्यादि सत्त्वं बन्धाः पुनः अष्टविंशत्रयम्॥696॥

एकविंशाद्येकत्रिंशदन्ता सप्ताष्टविंशोनाः।

उदयाः सत्त्वं नवतिः बन्धाः पुनः अष्टविंशद्विकम्॥697॥

एकोनत्रिंशत्त्रितयं उदयः द्वानवतिनवतिकं सत्त्वम्।

अयते बन्धस्थानमष्टाविंशत्रयं भवति॥698॥

उदयाः चतुर्विंशोना एकविंशप्रभृत्येकत्रिंशदन्ताः।

सत्त्वं प्रथमचतुष्कमपूर्वकरण इति ज्ञातव्यम्॥699॥ कलापकम्।)

अडवीसदुगं बंधो देसे पमदे य तीसदुगमुदओ।

पणवीससत्तवीसप्पहुदीचत्तारि ठाणाणि॥700॥

(अष्टविंशद्विकं बन्धो देशे प्रमत्ते च त्रिंशद्विकमुदयः।

पञ्चविंशससविंशप्रभृतिचत्वारि स्थानानि॥700॥)

अपमत्ते य अपुव्वे अडवीसादीण बंधमुदओ दु।

तीसमणियट्ठिसुहुमे जसकित्ती एक्कयं बंधो॥701॥

उदओ तीसं सत्तं पढमचउक्कं च सीदिचउ संते।

खीणे उदओ तीसं पढमचऊ सीदिचउ सत्तं॥702॥ जुम्मं।

(अप्रमत्ते च अपूर्वे अष्टाविंशादीनां बन्ध उदयस्तु।

त्रिंशदनिवृत्तिसूक्ष्मयोः यशस्कीर्तिरेका बन्धः॥701॥

उदयः त्रिंशत् सत्त्वं प्रथमचतुष्कं च अशीतिचतुष्कं शान्ते।

क्षीणे उदयः त्रिंशत् प्रथमचतुष्कमशीतिचतुष्कं सत्त्वम्॥702॥

युग्मम्।)

जोगिम्मि अजोगिम्मि य तीसिगितीसं णवट्ठयं उदओ।

सीदादिचऊछक्कं कमसो सत्तं समुद्दिट्ठं॥703॥

(योगिनि अयोगिनी च त्रिंशदेकत्रिंशत् नवाष्टकमुदयः।

अशीत्यादिचतुःषट्कं क्रमशः सत्त्वं समुद्दिष्टम्॥703॥)

पणदोपणगं पणचदुपणगं बंधुदयसत्त पणगं च।

पणछक्कपणगछछक्कपणगमट्ठट्ठमेयारं॥704॥

सत्तेव अपज्जत्ता सामी सुहुमो य बादरो चेव।

वियलिंदिया य तिविहा होन्ति असण्णी कमा सण्णी॥705॥

जुम्मं।

(पञ्चद्विपञ्चकं पञ्चचतुःपञ्चकं बन्धोदयसत्त्वं पञ्चकं च।

पञ्चषट्पञ्चकं षट्षट्पञ्चकमष्टाष्टैकादश॥704॥

ससैव अपर्याप्ताः स्वामिनः सूक्ष्मश्च बादरश्चैव।

विकलेन्द्रियाश्च त्रिविधा भवन्ति असंज्ञिनः क्रमात् संज्ञिनः॥705॥

युग्मम्।)

बंधा तियपणछण्णववीसत्तीसं अपुण्णगे उदओ।

इगिचउवीसं इगिछव्वीसं थावरतसे कमसो॥706॥

बाणउदीणउदिचऊ सत्तं एमेव बंधयं अंसा।

सुहुमिदरे वियलतिये उदया इगिवीसयादिचउपणयं॥707॥

इगिछक्कडणववीसत्तीसिगितीसं च वियलठाणं वा।

बंधतियं सण्णिदरे भेदो बंधदि हु अडवीसं॥708॥ विसेसयं।

(बन्धाः त्रिकपञ्चषण्णवविंशत्रिंशदपूर्णके उदयः।

एकचतुर्विंशं एकषड्विंशं स्थावरत्रसे क्रमशः॥706॥

द्वानवतिनवतिचतुष्कं सत्त्वं एवमेव बन्धकः अंशाः।

सूक्ष्मेतरयोः विकलत्रये उदया एकविंशकादिचतुःपञ्चकम्॥707॥

एकषट्काष्टनवविंशत्रिंशदेकत्रिंशच्च विकलस्थानं वा।

बन्धत्रयं संज्ञीतरस्मिन् भेदो बध्नाति हि अष्टविंशम्॥708॥

विशेषकम्।)

सण्णिम्मि सव्वबंधो इगिवीसप्पहुदिएक्कतीसंता।

चउवीसूणा उदओ दसणवपरिहीणसव्वयं सत्तं॥709॥

(संज्ञिनि सर्वबन्ध एकविंशप्रभृत्येकत्रिंशदन्ताः।

चतुर्विंशोना उदयो दशनवपरिहीनसर्वकं सत्त्वम्॥709॥)

दोछक्कट्ठचउक्कं णिरयादिसु णामबंधठाणाणि।

पणणवएगारपणयं तिपंचबारसचउक्कं च॥710॥

(द्विषट्काष्टचतुष्कं निरयादिषु नामबन्धस्थानानि।

पञ्चनवैकादशपञ्चकं त्रिपञ्चद्वादशचतुष्कं च॥710॥)

एगे वियले सयले पण पण अड पंच छक्केगार पणं।

पणतेरं बंधादी सेसादेसेवि इदि णेयं॥711॥

(एके विकले सकले पञ्च पञ्चाष्ट पञ्च षट्कैकादश पञ्च।

पञ्चत्रयोदश बन्धादीनि शेषादेशेपि इति ज्ञेयम्॥711॥)

णिरयादिणामबंधा उगुतीसं तीसमादिमं छक्कं।

सव्वं पणछक्कुत्तरवीसुगुतीसंदुगं होदि॥712॥

(निरयादिनामबन्धा एकोनत्रिंशत् त्रिंशदादिमं षट्कम्।

सर्वं पञ्चषट्कोत्तरविंशैकोनत्रिंशद्विकं भवति॥712॥)

उदया इगिपणसगअडणववीसं एक्कवीसपहुदिणवं।

चउवीसहीणसव्वं इगिपणसगअट्ठणववीसं॥713॥

(उदया एकपञ्चसप्ताष्टनवविंशमेकविंशप्रभृतिनव।

चतुर्विंशहीनं सर्वमेकपञ्चसप्ताष्टनवविंशम्॥713॥)

सत्ता बाणउदितियं बाणउदीणउदिअट्ठसीदितियं।

बासीदिहीणसव्वं तेणउदिचउक्कयं होदि॥714॥

(सत्ता द्वानवतित्रयं द्वानवतिनवत्यष्टाशीतित्रयम्।

द्वय्शीतिहीनसर्वं त्रिनवतिचतुष्कं भवति॥714॥)

इगिविगल बंधठाणं अडवीसूणं तिवीसछक्कं तु।

सयलं सयले उदया एगे इगिवीसपंचयं वियले॥715॥

इगिछक्कडणववीसं तीसदु चउवीसहीणसव्वुदया।

णउदिचऊ बाणउदी एगे वियले य सव्वयं सयले॥716॥ जुम्मं।

(एकविकले बन्धस्थानमष्टविंशोनं त्रयोविंशषट्कं तु।

सकलं सकले उदया एकस्मिन्नेकविंशपञ्चकं विकले॥715॥

एकषट्काष्टनवविंशं त्रिंशद्विकं चतुर्विंशहीनं सर्वमुदयाः।

नवतिचतुष्कं द्वानवतिः एकस्मिन् विकले च सर्वं सकले॥716॥

युग्मम्।)

पुढवीयादीपंचसु तसे कमा बंधउदयसत्ताणि।

एयं वा सयलं वा तेउदुगे णत्थि सगवीसं॥717॥

(पृथिव्यादिपञ्चसु त्रसे क्रमात् बन्धोदयसत्त्वानि।

एकं वा सकलं वा तेजोद्विके नास्ति सप्तविंशम्॥717॥)

मणिवचि बंधुदयंसा सव्वं णवबीसतीसइगितीसं।

दसणवदुसीदिवज्जिदसव्वं ओरालतम्मिस्से॥718॥

सव्वं तिवीसछक्कं पणुवीसादेक्कतीसपेरंतं।

चउछक्कसत्तवीसं दुसु सव्वं दसयणवहीणं॥719॥ जुम्मं।

(मनोवचसोः बन्धोदयांशाः सर्वं नवविंशत्रिंशदेकत्रिंशत्।

दशनवद्वयशीतिवर्जितसर्वमौरालतन्मिश्रे॥718॥

सर्वं त्रयोविंशषट्कं पञ्चविंशादेकत्रिंशत्पर्यन्तम्।

चतुःषट्कसप्तविंशं द्वयोः सर्वं दशकनवहीनम्॥719॥ युग्मम्।)

वेगुव्वे तम्मिस्से बंधंसा सुरगदीव उदयो दु।

सगवीसतियं पणजुदवीसं आहारतम्मिस्से॥720॥

बंधतियं अडवीसदु वेगुव्वं वा तिणउदिबाणउदी।

कम्मे वीसदुगुदओ ओरालियमिस्सयं व बंधंसा॥721॥ जुम्मं।

(वैगूर्वे तन्मिश्रे बन्धांशाः सुरगतिरिव उदयस्तु।

सप्तविंशत्रयं पंचयुतविंशमाहारतन्मिश्रे॥720॥

बन्धत्रयमष्टविंशद्विकं वैगूर्वं वा त्रिनवतिद्वानवती।

कर्मणि विंशद्विकोदय औरालिकमिश्रकं व बन्धांशाः॥721॥युग्मम्।)

वेदकसाये सव्वं इगिवीसणवं तिणउदिएक्कारं।

थीपुरिसे चउवीसं सीदडसदरी ण थीसंढे॥722॥

(वेदकषाये सर्वमेकविंशनवं त्रिनवत्येकादश।

स्त्रीपुरुषे चतुर्विंशमशीत्यष्टसप्तती न स्त्रीषण्ढे॥722॥)

अण्णाणदुगे बंधो आदीछ णउंसयं व उदयो दु।

सत्त्वं दुणउदिछक्कं विभंगबंधा हु कुमदिं व॥723॥

उदया उणतीसतियं सत्ता णिरयं व मदिसुदोहीए।

अडवीसपंच बंधा उदया पुरिसं व अट्ठेव॥724॥

पढमचऊ सीदिचऊ सत्तं मणपज्जवम्हि बंधंसा।

ओहिं व तीसमुदयं ण हि बंधो केवले णाणे॥725॥

उदओ सव्वं चउपणवीसूणं सीदिछक्कयं सत्तं।

सुदमिव सामयियदुगे उदओ पणुवीससत्तवीसचऊ॥726॥ कलावयं।

(अज्ञानद्विके बन्ध आदिषट् नपुंसकं व उदयस्तु।

सत्त्वं द्विनवतिषट्कं विभङ्गबन्धा हि कुमतिर्व॥723॥

उदया एकोनत्रिंशत्त्रयं सत्ता निरयं व मतिश्रुतावधिषु।

अष्टविंशपञ्चबन्धा उदया पुरुषो व अष्टैव॥724॥

प्रथमचतुष्कमशीतिचतुष्कं सत्त्वं मनःपर्यये बन्धांशाः।

अवधिरिव त्रिंशदुदयो न हि बन्धः केवले ज्ञाने॥725॥

उदयः सर्वं चतुःपञ्चविंशोनमशीतिषट्कं सत्त्वम्।

श्रुतमिव सामायिकद्विके उदयः पञ्चविंशसप्तविंशचतुष्कम्॥726॥

कलापकम्।)

परिहारे बंधतियं अडवीसचऊ य तीसमादिचऊ।

सुहुमे एक्को बंधो मणं व उदयंसठाणाणि॥727॥

(परिहारे बन्धत्रयमष्टविंशचतुष्कं च त्रिंशमादिचतुष्कम्।

सूक्ष्मे एको बन्धो मनो व उदयांशस्थानानि॥727॥)

जहखादे बंधतियं केवलयं वा तिणउदिचउ अत्थि।

देसे अडवीसदुगं तीसदु तेणउदिचारि बंधतियं॥728॥

(यथाख्याते बन्धत्रयं वा केवलं त्रिनवतिचतुष्कमस्ति।

देशे अष्टविंशद्विकं त्रिंशद्विकं त्रिनवतिचत्वारि बन्धत्रयम्॥728॥)

अविरमणे बंधुदया कुमदिं व तिणउदिसत्तयं सत्तं।

पुरिसं वा चक्खिदरे अत्थि अचक्खुम्मि चउवीसं॥729॥

(अविरमणे बन्धोदयाः कुमतिर्व त्रिनवतिसप्तकं सत्त्वम्।

पुरुषो वा चक्षुरितरयोरस्ति अचक्षुषि चतुर्विंशम्॥729॥)

ओहिदुगे बंधतियं तण्णाणं वा किलिट्ठलेस्सतिये।

अविरमणं वा सुहजुगलुदओ पुंवेदयं व हवे॥730॥

अडवीसचऊ बंधा पणछव्वीसं च अत्थि तेउम्मि।

पढमचउक्कं सत्तं सुक्के ओहिं व वीसयं चुदओ॥731॥ जुम्मं॥

(अवधिद्विके बन्धत्रयं तज्ज्ञानं वा क्लिष्टलेश्यत्रये।

अविरमणं वा शुभयुगलोदयः पुंवेदको व भवेत्॥730॥

अष्टविंशचत्वारो बन्धाः पञ्चषड्विंशं चास्ति तेजसि।

प्रथमचतुष्कं सत्त्वं शुक्लायामवधिर्व विंशकं चोदयः॥731॥

युग्मम्।)

भव्वे सव्वमभव्वे बंधुदया अविरदव्व सत्तं तु।

णउदिचउ हारबंधणदुगहीणं सुदमिवुवसमे बंधो॥732॥

उदया इगिपणवीसं णववीसतियं च पढमचउ सत्तं।

उवसम इव बंधंसा वेदगसम्मे ण इगिबंधो॥733॥

उदया मदिं व खइये बंधादी सुदमिवत्थि चरिमदुगं।

उदयंसे वीसं च य साणे अडवीसतियबंधो॥734॥

उदया इगिवीसचऊ णववीसतियं च णउदियं सत्तं।

मिस्से अडवीसदुगं णववीसतियं च बंधुदया॥735॥

बाणउदिणउदिसत्तं मिच्छे कुमदिं व होदि बंधतियं।

पुरिसं वा सण्णीये इदरे कुमदिं व णत्थि इगिणउदी॥736॥ कुलयं।

(भव्ये सर्वमभव्ये बन्धोदया अविरत इव सत्त्वं तु।

नवतिचतुष्कमाहारबन्धनद्विकहीनं श्रुतमिवोपशमे बन्धः॥732॥

उदया एकपञ्चविंशं नवविंशत्रयं च प्रथमचतुष्कं सत्त्वम्।

उपशम इव बन्धांशा वेदकसम्ये नैकबन्धः॥733॥

उदया मतिर्व क्षायिके बन्धादिः श्रुतमिवास्ति चरमद्विकम्।

उदयांशे विंशं च च साने अष्टविंशत्रिकबन्धः॥734॥

उदया एकविंशचत्वारः नवविंशत्रयश्च नवतिकं सत्त्वम्।

मिश्रे अष्टविंशद्विकं नवविंशत्रयं च बन्धोदयाः॥735॥

द्वानवतिनवतिसत्त्वं मिथ्ये कुमतिर्व भवति बन्धत्रयम्।

पुरुषो वा संज्ञिनि इतरस्मिन् कुमतिर्व नास्ति एकनवतिः॥736॥

कुलकम्।)

आहारे बंधुदया संढं वा णवरि णत्थि इगिवीसं।

पुरिसं वा कम्मंसा इदरे कम्मं व बंधतियं॥737॥

(आहारे बन्धोदया षण्ढो नवरि नास्ति एकविंशम्।

पुरुषो वा कर्मांशाः इतरस्मिन् कर्म व बन्धत्रयम्॥737॥)

अत्थि णवट्ठ य दुदओ दसणवसत्तं च विज्जदे एत्थ।

इदि बंधुदयप्पहुदीसुदणामे सारमादेसे॥738॥

(अस्ति नवाष्ट च द्व्युदयो दशनवसत्त्वं विद्यतेऽत्र।

इति बन्धोदयप्रभृतिश्रुतनाम्नि सारमादेशे॥738॥)

चारुसुदंसणधरणे कुवलयसंतोसणे समत्थेण।

माधवचंदेण महावीरेणत्थेण वित्थरिदो॥739॥

(चारुसुदर्शनधरणे कुवलयसन्तोषणे समर्थेन।

माधवचन्द्रेण महावीरेणार्थेन विस्तरितः॥739॥)

णवपंचोदयसत्ता तेवीसे पण्णुवीस छव्वीसे।

अट्ठचदुरट्ठवीसे णवसत्तुगुतीसतीसम्मि॥740॥

एगेगं इगितीसे एगे एगुदयमट्ठसत्ताणि।

उवरदबंधे दसदस उदयंसा होंति णियमेण॥741॥ जुम्मं।

(नवपञ्चोदयसत्ताः त्रयोविंशे पञ्चविंशे षड्विंशे।

अष्टचतुष्कमष्टाविंशे नवसप्तैकोनत्रिंशत्रिंशतोः॥740॥

एकैकमेकत्रिंशतौ एकस्मिन्नेकोदयोऽष्टसत्त्वानि।

उपरतबन्धे दश दश उदयांशा भवन्ति नियमेन॥741॥ युग्मम्।)

उदयं सट्ठाणाणि य सामित्तादो दु जाणिदव्वाणि।

बंधुदयं च णिरुंभिय सत्तस्स य संभवगदीए॥741-1॥

तियपणछवीसबंधे इगिवीसादेक्कतीसचरिमुदया।

बाणउदी णउदिचऊ सत्तं अडवीसगे उदया॥742॥

पुव्वं व ण चउवीसं बाणउदिचउक्कसत्तमुगुतीसे।

तीसे पुव्वं वुदया पढमिल्लं सत्तयं सत्तं॥743॥ जुम्मं।

(त्रिकपञ्चषड्विंशबन्धे एकविंशादेकत्रिंशचरमोदयाः।

द्वानवतिः नवतिचतुष्कं सत्त्वमष्टविंशके उदयाः॥742॥

पूर्वं व न चतुर्विंशं द्वानवतिचतुष्कसत्त्वमेकोनत्रिंशे।

त्रिंशे पूर्वं वोदयाः प्रथमाद्यं सप्तकं सत्त्वम्॥743॥ युग्मम्।)

इगितीसे तीसुदओ तेणउदी सत्तयं हवे एगे।

तीसुदओ पढमचऊ सीदादिचउक्कमवि सत्तं॥744॥

(एकत्रिंशे त्रिंशोदयः त्रिनवति सत्त्वं भवति एकस्मिन्।

त्रिंशोदयः प्रथमचतुष्कमशीत्यादिचतुष्कमपि सत्त्वम्॥744॥)

उवरदबंधेसुदया चउपणवीसूण सव्वयं होदि।

सत्तं पढमचउक्कं सीदादीछक्कमवि होदि॥745॥

(उपरतबन्धेषूदयाः चतुःपञ्चविंशोनं सर्वं भवति।

सत्त्वं प्रथमचतुष्कमशीत्यादिषट्कमपि भवति॥745॥)

वीसादिसु बंधंसा णभदु छण्णव पणपणं च छसत्तं।

छण्णव छड दुसु छद्दस अट्ठदसं छक्कछक्क णभति दुसु॥746॥

(विंशादिषु बन्धांशा नभोद्विकं षण्णव पञ्चपञ्च च षट्सप्त।

षण्णव षडष्ट द्वयोः षड्दश अष्टदश षट्कषट्कं नभस्त्रिकं

द्वयोः॥746॥)

वीसुदये बंधो ण हि उणसीदीसत्तसत्तरी सत्तं।

इगिवीसे तेवीसप्पहुदीतीसंतया बंधा॥747॥

सत्तं तिणउदिपहुदीसीदंता अट्ठसत्तरी य हवे।

चउवीसे पढमतियं णववीसं तीसयं बंधो॥748॥

बाणउदी णउदिचऊ सत्तं पणछस्सगट्ठणववीसे।

बंधा आदिमछक्कं पढमिल्लं सत्तयं सत्तं॥749॥

ते णवसगसदरिजुदा आदिमछस्सीदिअट्ठसदरीहिं।

णवसत्तसत्तरीहिं सीदिचउक्केहिं सहिदाणि॥750॥ कलावयं।

(विंशोदये बन्धो न हि एकोनाशीतिसप्तसप्तती सत्त्वम्।

एकविंशे त्रयोविंशप्रभृतित्रिंशान्तका बन्धाः॥747॥

सत्त्वं त्रिनवतिप्रभृत्यशीत्यन्तानि अष्टसप्ततिश्च भवेत्।

चतुर्विंशे प्रथमत्रयं नवविंशं त्रिंशत्कं बन्धः॥748॥

द्वानवतिः नवतिचतुष्कं सत्त्वं पञ्चषट्सप्ताष्टनवविंशे।

बन्धा आदिमषट्कं प्रथमाद्यं सप्तकं सत्त्वम्॥749॥

तानि नवसप्तसप्ततियुतानि आदिमषडशीत्यष्टसप्ततिभिः।

नवसप्तसप्ततिभिरशीतिचतुष्कैः सहितानि॥750॥ कलापकम्।)

तीसे अट्ठवि बंधो ऊणत्तीसं व होदि सत्तं तु।

इगितीसे तेवीसप्पहुदीतीसंतयं बंधो॥751॥ऊणत्तीसं॥

सत्तं दुणऊदिणऊदीतिय सीदडहंत्तरी य णवगट्ठे।

बंधो ण सीदिपहुदीसुसमविसमं सत्तमुद्दिट्ठं॥752॥ जुम्मं।

(त्रिंशे अष्टापि बन्ध एकोनत्रिंशं व भवति सत्त्वं तु।

एकत्रिंशे त्रयोविंशप्रभृतित्रिंशान्तको बन्धः॥751॥

सत्त्वं द्विनवतिनवतित्रिकमशीत्यष्टसप्ततिश्च नवकाष्टसु।

बन्धो न अशीतिप्रभृतिषु समविषमं सत्त्वमुद्दिष्टम्॥752॥ युग्मम्।)

सत्ते बंधुदया चदुसग सगणव चतुसगं च सगणवयं।

छण्णव पणणव पणचदु चदुसिगिछक्कं णभेक्क सुण्णेगं॥753॥

(सत्वे बन्धोदया चतुःसप्त सप्तनव चतुःसप्त च सप्तनवकम्।

षण्णव पञ्चनव पञ्चचतुष्कं चतुर्ष्वेकषट्कं नभ एकं

शून्यमेकम्॥753॥)

तेणऊदीए बंधा ऊगुतीसादीचऊक्कमुदओ दु।

इगिपणछस्सगअट्ठयणववीसं तीसयं णेयं॥754॥

(त्रिनवत्यां बन्धा एकोनत्रिंशादिचतुष्कमुदयस्तु।

एकपञ्चषट्सप्ताष्टकनवविंशं त्रिंशत्को ज्ञेयः॥754॥)

बाणउदीए बंधा इगितीसूणाणि अट्ठठाणाणि।

इगिवीसादीएक्कत्तीसंता उदयठाणाणि॥755॥

(द्वानवत्यां बन्धा एकत्रिंशोनानि अष्टस्थानानि।

एकविंशाद्येकत्रिंशान्तानि उदयस्थानानि॥755॥)

इगिणवदीए बंधा अडवीसत्तिदयमेक्कयं चुदओ।

तेणउदिं वा णउदीबंधा बाणउदियं व हवे॥756॥

चरिमदुवीसूणुदयो तिसु दुसु बंधा छतुरियहीणं च।

बासीदी बंधुदया पुव्वं विगिवीसचत्तारि॥757॥ जुम्मं।

(एकनवत्यां बन्धा अष्टविंशत्रितयमेकश्चोदयः।

त्रिनवतिर्वा नवतिबन्धा द्वानवतिर्व भवेत्॥756॥

चरमद्विविंशोनोदयस्त्रिषु द्वयोर्बन्धाः षट्तुरीयहीनं च।

द्व्यशीत्यां बन्धोदयाः पूर्वं इवैकविंशचत्वारः॥757॥ युग्मम्।)

सीदादिचउसु बंधा जसकित्ती समपदे हवे उदओ।

इगिसगणवधियवीसं तीसेक्कत्तीसणवगं च॥758॥

वीसं छडणववीसं तीसं चट्ठं च विसमठाणुदया।

दसणवगे ण हि बंधो कमेण णवअट्ठयं उदओ॥759॥ जुम्मं।

(अशीत्यादिचतुर्षु बन्धो यशस्कीर्तिः समपदे भवेदुदयाः।

एकसप्तनवाधिकविंशं त्रिंशैकत्रिंशनवकं च॥758॥

विंशः षडष्टनवविंशं त्रिंशच्चाष्ट च विषमस्थानोदयाः।

दशनवके न हि बन्धः क्रमेण नवाष्टक उदयः॥759॥ युग्मम्।)

तेवीसबंधगे इगिवीसणवुदयेसु आदिमचउक्के।

बाणउदिणउदिअडचउबासीदी सत्तठाणाणि॥760॥

तेणुवरिमपंचुदये ते चेवंसा विवज्ज बासीदिं।

एवं पणछव्वीसे अडवीसे एक्कवीसुदये॥761॥

बाणउदिणउदिसत्तं एवं पणुवीसयादिपंचुदये।

पणसगवीसे णउदी विगुव्वणे अत्थिणाहारे॥762॥ विसेसयं।

(त्रयोविंशबन्धके एकविंशनवोदयेषु आदिमचतुष्के।

द्वानवतिनवत्यष्टचतुर्द्वय्शीतिः सत्त्वस्थानानि॥760॥

तेनोपरिमपञ्चोदये ते चैवांशा विवर्ज्य द्वय्शीतिम्।

एवं पञ्चषड्विंशे अष्टविंशेन एकविंशोदये॥761॥

द्वानवतिनवतिसत्त्वमेवं पञ्चविंशकादिपञ्चकोदये।

पञ्चसप्तविंशे नवतिर्विगूर्वणे अस्ति नाहारे॥762॥ विशेषकम्।)

तेण णभिगितीसुदये बाणउदिचउक्कमेक्कतीसुदये।

णवरि ण इगिणउदिपदं णववीसिगिवीसबंधुदये॥763॥

तेणवदिसत्तसत्तं एवं पणछक्कवीसठाणुदये।

चउवीसे बाणउदी णउदिचउक्कं च सत्तपदं॥764॥ जुम्मं।

(तेन नभएकत्रिंशोदये द्वानवतिचतुष्कमेकत्रिंशोदये।

नवरि न एकनवतिपदं नवविंशैकविंशबन्धोदययोः॥763॥

त्रिनवतिसप्तसत्त्वमेवं पञ्चषट्कविंशस्थानोदये।

चतुर्विंशे द्वानवतिः नवतिचतुष्कं च सत्त्वपदम्॥764॥ युग्मम्।)

सगवीसचउक्कुदये तेणउदीछक्कमेवमिगितीसे।

तिगिणउदी ण हि तीसे इगिपणसगअट्ठणवयवीसुदये॥765॥

तेणउदीछक्कसत्तं इगिपणवीसेसु अत्थि बासीदी।

तेण छचउवीसुदये बाणउदी णउदिचउसत्तं॥766॥ जुम्मं।

(सप्तविंशचतुष्कोदये त्रिनवतिषट्कमेवमेकत्रिंशे।

त्र्येकनवतिर्न हि त्रिंशे एकपञ्चसप्ताष्टनवकविंशोदये॥765॥

त्रिनवतिषट्कसत्त्वमेकपञ्चविंशयोरस्ति द्वय्शीतिः।

तेन षट्चतुर्विंशोदये द्वानवतिः नवतिचतुष्कसत्त्वम्॥766॥ युग्मम्।)

एवं खिगितीसे ण हि बासीदी एक्कतीसबंधेण।

तीसुदये तेणउदी सत्तपदं एक्कमेव हवे॥767॥

(एवं खैकत्रिंशे न हि द्वय्शीतिरेकत्रिंशबन्धेन।

त्रिंशोदये त्रिनवतिः सत्त्वपदमेकमेव भवेत्॥767॥)

इगिबंधट्ठाणेण दु तीसट्ठाणोदये णिरुंधम्मि।

पढमचऊसीदिचऊ सत्तट्ठाणाणि णामस्स॥768॥

(एकबन्धस्थानेन तु त्रिंशस्थानोदये निरोधे।

प्रथमचतुष्काशीतिचतुष्कं सत्त्वस्थानानि नाम्नः॥768॥)

तेवीसबंधठाणे दुखणउदडचदुरसीदि सत्तपदे।

इगिवीसादिणउदओ बासीदे एक्कवीसचऊ॥769॥

(त्रयोविंशबन्धस्थाने द्विखनवत्यष्टचतुरशीतिसत्त्वपदे।

एकविंशादिनवोदयः द्वय्शीतौ एकविंशचतुष्कम्॥769॥)

एवं पणछव्वीसे अडवीसे बंधगे दुणउदंसे।

इगिवीसादिणवुदया चउवीसट्ठाणपरिहीणा॥770॥

इगिणउदीए तीसं उदओ णउदीए तिरियसण्णिं वा।

अडसीदीए तीसदु णववीसे बंधगे तिणउदीए॥771॥

इगिवीसादट्ठुदओ चउवीसूणो दुणउदिणउदितिये।

इगिवीसणविगिणउदे णिरयं व छवीसतीसधिया॥772॥

बासीदे इगिचउपणछव्वीसा तीसबंधतिगिणउदी।

सुरमिव दुणउदिणउदी चउसुदओ ऊणतीसं वा॥773॥ कलावयं।

(एवं पञ्चषड्विंशे अष्टविंशे बन्धके तु द्वानवत्यंशे।

एकविंशादिनवोदयाः चतुर्विंशस्थानपरिहीनाः॥770॥

एकनवत्यां त्रिंश उदयो नवत्यां तिर्यक्संज्ञी वा।

अष्टाशीतौ त्रिंशद्विकं नवविंशे बन्धके त्रिनवत्याम्॥771॥

एकविंशादष्टोदयः चतुर्विंशोनो द्विनवतिनवतित्रये।

एकविंशनव एकनवत्यां निरयो व षड्विंशत्रिंशाधिकाः॥772॥

द्वय्शीत्यामेकचतुःपञ्चषड्विंशः त्रिंशबन्धे त्र्येकनवतौ।

सुर इव द्विनवतिनवतिचतुर्षूदय एकोनत्रिंशं वा॥773॥ कलापकम्।)

इगितीसबंधठाणे तेणउदे तीसमेव उदयपदं।

इगिबंध तिणउदिचऊ सोदिचउक्केवि तीसुदओ॥774॥

(एकत्रिंशबन्धस्थाने त्रिनवत्यां त्रिंशमेव उदयपदम्।

एकबन्धे त्रिनवतिचतुष्के अशीतिचतुष्केपि त्रिंशोदयः॥774॥)

इगिवीसट्ठाणुदये तिगिणउदे णवयवीसदुगबंधो।

तेण दुखणउदिसत्ते आदिमछक्कं हवे बंधो॥775॥

एवमडसीदितिदए ण हि अडवीसं पुणोवि चउवीसे।

दुखणउदडसीदितिए सत्ते पुव्वं व बंधपदं॥776॥ जुम्मं।

(एकविंशस्थानोदये त्र्येकनवत्यां नवविंशद्विकबन्धः।

तेन द्विखनवतिसत्त्वे आदिमषट्कं भवेद्बन्धः॥775॥

एवमष्टाशीतित्रितये न हि अष्टविंशं पुनरपि चतुर्विंशे।

द्विखनवत्यष्टाशीतित्रये सत्त्वे पूर्वं व बन्धपदम्॥776॥ युग्मम्।)

पणवीसे तिगिणउदे एगुणतीसंदुगं दुणउदीए।

आदिमछक्कं बंधो णउदिचउक्केवि णऽडवीसं॥777॥

(पञ्चविंशे त्र्येकनवतौ एकोनत्रिंशद्विकं द्विनवत्याम्।

आदिमषट्कं बन्धो नवतिचतुष्केपि नाष्टविंशम्॥777॥)

छव्वीसे तिगिणउदे उणतीसं बंध दुगखणउदीए।

आदिमछक्कं एवं अउसीदितिए ण अडवीसं॥778॥

(षड्विंशे त्र्येकनवतौ एकोनत्रिंशं बन्धो द्विकखनवत्याम्।

आदिमषट्कमेवमष्टाशीतित्रये नाष्टविंशम्॥778॥)

सगवीसे तिगिणउदे णववीसदुबंधयं दुणउदीए।

आदिमछण्णउदितिए एयं अडवीसयं णत्थि॥779॥

(सप्तविंशे त्र्येकनवतौ नवविंशद्विबन्धको द्विनवत्याम्।

आदिमषण्णवतित्रये एवमष्टाविंशकं नास्ति॥779॥)

अडवीसे तिगिणउदे उणतीसदु दुजुदणउदिणउदितिये।

बंधो सगवीसं वा णउदीए अत्थि णडवीसं॥780॥

(अष्टाविंशे त्र्येकनवत्यामेकोनत्रिंशद्विकं द्वियुतनवतिनवतित्रये।

बन्धः सप्तविंशं वा नवतौ अस्ति नाष्टाविंशम्॥780॥)

अडवीसमिवुणतीसे तीसे तेणउदिसत्तगे बंधो।

णववीसेक्कत्तीसं इगिणउदी अट्ठवीसदुगं॥781॥

तेण दुणउदे णउदे अडसीदे बंधमादिमं छक्कं।

चुलसीदेवि य एवं णवरि ण अडवीसबंधपदं॥782॥ जुम्मं।

(अष्टविंश इवैकोनत्रिंशे त्रिंशे त्रिनवतिसत्त्वके बन्धः।

नवविंशैकत्रिंशमेकनवत्यामष्टविंशद्विकम्॥781॥

तेन द्विनवतौ नवतौ अष्टाशीतौ बन्ध आदिमं षट्कम्।

चतुरशीत्यामपि च एवं नवरि न अष्टविंशबन्धपदम्॥782॥

युग्मम्।)

तीसुदयं विगितीसे सजोग्गबाणउदिणउदितियसत्ते।

उवसंतचउक्कुदये सत्ते बंधस्स ण वियारो॥783॥

(त्रिंशोदयं वैकत्रिंशे स्वयोग्यद्वानवतिनवतित्रयसत्त्वे।

उपशान्तचतुष्कोदये सत्त्वे बन्धस्य न विचारः॥783॥)

णामस्स य बंधादिसु दुतिसंजोगा परूविदा एवं।

सुदवणवसंतगुणगणसायरचंदेण सम्मदिणा॥784॥

(नाम्नश्च बन्धादिषु द्वित्रिसंयोगाः प्ररूपिता एवम्।

श्रुतवनवसन्तगुणगणसागरचन्द्रेण सन्मतिना॥784॥)

6- प्रत्ययाधिकार

णमिऊण अभयणंदिं सुदसायरपारगिंदणंदिगुरुं।

वरवीरणं दिणाहं पयडीणं पच्चयं वोच्छं॥785॥

(नत्वा अभयनन्दिं श्रुतसागरपारगेन्द्रनन्दिगुरुम्।

वरवीरनन्दिनाथं प्रकृतीनां प्रत्ययं वक्ष्ये॥785॥)

मिच्छत्तं अविरमणं कसायजोगा य आसवा होंति।

पण बारस पणुवीसं पण्णरसा होंति तब्भेया॥786॥

(मिथ्यात्वमविरमणं कषाययोगौ च आस्रवा भवन्ति।

पञ्च द्वादश पञ्चविंशं पञ्चदश भवन्ति तद्भेदाः॥786॥)

चदुपच्चइगो बंधो पढमे णंतरतिगे तिपच्चइगो।

मिस्सगबिदियं उवरिमदुगं च देसेक्कदेसम्मि॥787॥

(चतुःप्रत्ययको बन्धः प्रथमे अनन्तरत्रिके त्रिप्रत्ययकः।

मिश्रकद्वितीये उपरिमद्विकं च देशैकदेशे॥787॥)

उबरिल्लपंचये पुण दुपच्चया जोगपच्चओ तिण्हं।

सामण्णपच्चया खलु अट्ठण्हं होंति कम्माणं॥788॥

(उपरिमपञ्चके पुनः द्विप्रत्ययौ योगप्रत्ययः त्रयाणाम्।

सामान्यप्रत्ययाः खलु अष्टानां भवन्ति कर्मणाम्॥788॥)

पणवण्णा पण्णासा तिदाल छादाल सत्ततीसा य।

चदुवीसा बावीसा बावीसमपुव्वकरणोत्ति॥789॥

थूले सोलसपहुदी एगूणं जाव होदि दसठाणं।

सुहुमादिसु दस णवयं णवयं जोगिम्मि सत्तेव॥790॥ जुम्मं।

(पञ्चपञ्चाशत् पञ्चाशत् त्रिचत्वारिंशत् षट्चत्वारिंशत्सप्तत्रिंशच्च।

चतुर्विंशतिः द्वाविंशतिः द्वाविंशमपूर्वकरण इति॥789॥

स्थूले षोडशप्रभृतय एकोना यावत् भवति दशस्थानम्।

सूक्ष्मादिषु दश नवकं नवकं योगिनि सप्तैव॥790॥ युग्मम्।)

पण चदु सुण्णं णवयं पण्णारस दोण्णि सुण्णछक्कं च।

एक्केक्कं दस जाव य एक्कं सुण्णं च चारि सग सुण्णं॥790-1॥

दोण्णि य सत्त य चोद्दसणुदयेवि एयार वीस तेत्तीसं।

पणतीस दुसिगिदालं सत्तेतालट्ठदाल दुसु पण्णं॥790-2॥ जुम्मं।

(पञ्चचतुष्कं शून्यं नवकं पञ्चदश द्वे शून्यं षट्कं च।

एकैकं दश यावच्च एकं शून्यं च चत्वारि सप्त शून्यम्॥790-1॥

द्वौ च सप्त च चतुर्दशानुदयेपि एकादश विंशं त्रयस्त्रिंशत्।

पञ्चत्रिंशत् द्वयोरेकचत्वारिंशत्सप्तचत्वारिंशदष्टचत्वारिंशत् द्वयोः

पञ्चाशत्॥790-2॥ युग्मम्।)

मिच्छे पणमिच्छत्तं पढमकसायं तु सासणे मिस्से।

सुण्णं अविरदसम्मे बिदियकसायं विगुव्वदुग कम्मं॥790-3॥

ओरालमिस्स तसवह णवयं देसम्मि अविरदेक्कारा।

तदियकसायं पण्णर पमत्तविरदम्मि हारदुगछेदो॥790-4॥

सुण्णं पमादरहिदे पुव्वे छण्णोकसायवोच्छेदो।

अणियट्टिम्मि य कमसो एक्केक्कं वेदतियकसायतियं॥790-5॥

सुहुमे सुहुमो लोहो सुण्णं उवसंतगेसु खीणेसु।

अलीयुभयवयणमणचउ जोगिम्मि य सुणह वोच्छामि॥790-6॥

सच्चाणुभयं वयणं मणं च ओरालकायजोगं च।

ओरालमिस्स कम्मं उवयारेणेव सब्भाओ॥790-7॥ कुलयं।

(मिथ्ये पञ्चमिथ्यात्वं प्रथमकषायस्तु सासादने मिश्रे।

शून्यमविरतसम्ये द्वितीयकषायः वैगूर्वद्विकं कर्म॥790-3॥

औरालमिश्रं त्रसवधः नवकं देशे अविरता एकादश।

तृतीयकषायः पञ्चदश प्रमत्तविरते आहारकद्विकच्छेदः॥790-4॥

शून्यं प्रमादरहिते अपूर्वे षण्णोकषायव्युच्छेदः।

अनिवृत्तौ च क्रमश एकैकं वेदत्रयकषायत्रयम्॥790-5॥

सूक्ष्मे सक्ष्मो लोभः शून्यमुपशान्तकेषु क्षीणेषु।

अलीकोभयवचनमनश्चतुष्कं योगिनि च शृणुत वक्ष्यामि॥790-6॥

सत्यानुभयं वचनं मनश्च औरालकाययोगश्च।

औरालमिश्रं कार्मणमुपचारेणैव सद्भावः॥790-7॥ कुलकम्।)

अवरादीणं ठाणं ठाणपयारा पयारकूडा य।

कूडुच्चारणभंगा पंचविहा होंति इगिसमये॥791॥

(अवरादीनां स्थानं स्थानप्रकाराः प्रकारकूटाश्च।

कूटोच्चारणभङ्गोः पञ्चविधा भवन्ति एकसमये॥791॥)

दस अट्ठारस दसयं सत्तर णव सोलसं च दोण्हंपि।

अट्ठ य चोद्दस पणयं सत्त तिये दुति दुगेगमेगमदो॥792॥

(दश अष्टादश दशकं सप्तदश नव षोडश च द्वयोरपि।

अष्ट च चतुर्दश पञ्चकं सप्त त्रिके द्वित्रिकं द्विकैकमेकमतः॥792॥)

एक्कं च तिण्णि पंच य हेट्ठुवरीदो दु मज्झिमे छक्कं।

मिच्छे ठाणपयारा इगिदुगमिदरेसु तिण्णि देसोत्ति॥793॥

(एकः च त्रयः पञ्च च अधस्तनोपरितस्तु मध्यमे षट्कम्।

मिथ्ये स्थानप्रकारा एकद्विकमितरेषु त्रयः देश इति॥793॥)

भयदुगरहियं पढमं एक्कदरजुदं दुसहियमिदि तिण्णं।

सामण्णा तियकूडा मिच्छा अणहीणतिण्णिवि य॥794॥

(भयद्विकरहितं प्रथममेकतरयुतं द्विसहितमिति त्रयः।

सामान्यानि त्रीणि कूटानि मिथ्या अनहीनत्रीण्यपि च॥794॥)

मिच्छत्ताणण्णदरं एक्केणक्खेण एक्ककायादी।

तत्तो कसायवेददुजुगलाणेक्कं च जोगाणं॥795॥

(मिथ्यात्वानामन्यतरमेकेनाक्षेण एककायादि।

ततः कषायवेदद्वियुगलानामेकं च योगानाम्॥795॥)

अणरहिदसहिदकूडे बावत्तरिसय सयाण तेणउदी।

सट्ठी धुवा हु मिच्छे भयदुगसंजोगजा अधुवा॥796॥

(अनरहितसहितकूटे द्वासप्ततिशतं शतानां त्रिनवतिः।

षष्ठिः ध्रुवा हि मिथ्ये भयद्विकसंयोगजा अध्रुवाः॥796॥)

चउवीसट्ठारसयं तालं चोद्दस असीदि सोलसयं।

छण्णउदी बारसयं बत्तीसं बिसद सोल बिसदं च॥797॥

सोलस बिसदं कमसो धुवगुणगारा अपुव्वकरणोत्ति।

अद्धुवगुणिदे भंगा धुवभंगाणं ण भेदादो॥798॥ जुम्मं।

(चतुर्विंशाष्टादशशतं चत्वारिंशच्चतुर्दशाशीतिः षोडशशतम्।

षण्णवतिः द्वादशशतं द्वात्रिंशद्विशतं षोडश द्विशतं च॥797॥

षोडश द्विषतं क्रमशो ध्रुवगुणकारा अपूर्वकरण इति।

अध्रुवगुणिते भङ्गा ध्रुवभङ्गानां न भेदात्॥798॥ युग्मम्।)

छप्पंचादेयंतं रूवुत्तरभाजिदे कमेण हदे।

लद्धं मिच्छचउक्के देसे संजोगगुणगारा॥799॥

(षट्पञ्चाद्येकान्तं रूपोत्तरभाजिते क्रमेण हते।

लब्धं मिथ्यचतुष्के देशे संयोगगुणकाराः॥799॥)

पडिणीगमंतराए उवघादो तप्पदोसणिण्हवणे।

आवरणदुगं भूयो बंधदि अच्चासणाएवि॥800॥

(प्रत्यनीकमन्तराय उपघातस्तत्प्रदोषनिह्नवने।

आवरणद्विकं भूयो बध्नाति अत्यासादनयापि॥800॥)

भूदाणुकंपवदजोगजुंजिदो खंतिदाणगुरुभत्तो।

बंधदि भूयो सादं विवरीयो बंधदे इदरं॥801॥

(भूतानुकम्पव्रतयोगयुञ्जितः क्षान्तिदानगुरुभक्तः।

बध्नाति भूयः सातं विपरीतो बध्नाति इतरत्॥801॥)

अरहंतसिद्धचेदियतवसुदगुरुधम्मसंघपडिणीगो।

बंधदि दंसणमोहं अणंतसंसारिओ जेण॥802॥

(अर्हत्सिद्धचैत्यतपःश्रुतगुरुधर्मसंघप्रत्यनीकः।

बध्नाति दर्शनमोहमनन्तसांसारिको येन॥802॥)

तिव्वकसाओ बहुमोहपरिणदो रागदोससंतत्तो।

बंधदि चरित्तमोहं दुविहंपि चरित्तगुणघादी॥803॥

(तीव्रकषायो बहुमोहपरिणतो रागद्वेषसंतप्तः।

बध्नाति चारित्रमोहं द्विविधमपि चारित्रगुणघाती॥803॥)

मिच्छो हु महारंभो णिस्सीलो तिव्वलोहसंजुत्तो।

णिरयाउगं णिबंधइ पावमई रुद्दपरिणामी॥804॥

(मिथ्यो हि महारम्भो निःशीलः तीव्रलोभसंयुक्तः।

निरयायुष्कं निबध्नाति पापमतिः रुद्रपरिणामी॥804॥)

उम्मग्गदेसगो मग्गणासगो गूढहियय माइल्लो।

सठसीलो य ससल्लो तिरियाउं बंधदे जीवो॥805॥

(उन्मार्गदेशको मार्गनाशको गूढहृदयो मायावी।

शठशीलश्च सशल्यः तिर्यगायुष्कं बध्नाति जीवः॥805॥)

पयडीए तणुकसाओ दाणरदी सीलसंजमविहीणो।

मज्झिमगुणेहिं जुत्तो मणुवाऊं बंधदे जीवो॥806॥

(प्रकृत्या तनुकषायो दानरतिः शीलसंयमविहीनः।

मध्यमगुणैः युक्तौ मानवायुष्कं बध्नाति जीवः॥806॥)

अणुवदमहव्वदेहिं य बालतवाकामणिज्जाराए य।

देवाउगं णिबंधइ सम्माइट्ठी य जो जीवो॥807॥

(अणुव्रतमहाव्रतैश्च बालतपोकामनिर्जरया च।

देवायुष्कं निबध्नाति सम्यग्दृष्टिश्च यो जीवः॥807॥)

मणवयणकायवक्को माइल्लो गारवेहिं पडिबद्धो।

असुहं बंधदि णामं तप्पडिवक्खेहिं सुहणामं॥808॥

(मनोवचनकायवक्रो मायावी गारवैः प्रतिबद्धः।

अशुभं बध्नाति नाम तत्प्रतिपक्षैः शुभनाम॥808॥)

अरहंतादिसु भत्तो सुत्तरुची पढणुमाणगुणपेही।

बंधदि उच्चागोदं विवरीओ बंधदे इदरं॥809॥

(अर्हदादिषु भक्तः सूत्ररुचिः पठनानुमननगुणदर्शी।

बध्नाति उच्चगोत्रं विपरीतो बध्नातीतरत्॥809॥)

पाणवधादीसु रदो जिणपूजामोक्खमग्गविग्घयरो।

अज्जेइ अंतरायं ण लहइ जं इच्छियं जेण॥810॥

(प्राणबधादिषु रतो जिनपूजामोक्षमार्गविघ्नकरः।

अर्जयति अन्तरायं न लभते यदीप्सितं येन॥810॥)

7- भावचूलिकाधिकार

गोम्मटजिणिंदचंदं पणमिय गोम्मटपयत्थसंजुत्तं।

गोम्मटसंगहविसयं भावगयं चूलियं वोच्छं॥811॥

(गोम्मटजिनेन्द्रचन्द्रं प्रणम्य गोम्मटपदार्थसंयुक्तम्।

गोम्मटसंग्रहविषयं भावगतां चूलिकां वक्ष्ये॥811॥)

जेहिं दु लक्खिज्जंते उवसमआदीसु जणिदभावेहिं।

जीवा ते गुणसण्णा णिद्दिट्ठा सव्वदरसीहिं॥812॥

(यैस्तु लक्ष्यन्ते उपशमादिषु जनितभावैः।

जीवास्ते गुणसंज्ञा निर्दिष्टाः सर्वदर्शिभिः॥812॥)

उवसम खइओ मिस्सो ओदयियो पारिणामियो भावो।

भेदा दुग णव तत्तो दुगुणिगिवीसं तियं कमसो॥813॥

(औपशमिकः क्षायिको मिश्र औदयिकः पारिणामिको भावः।

भेदा द्विकं नव ततो द्विगुणमेकविंशतिः त्रयः क्रमशः॥813॥)

कम्मुवसमम्मि उवसमभावो खीणम्मि खइयभावो दु।

उदयो जीवस्स गुणो खओवसमिओ हवे भावो॥814॥

कम्मुदयजकम्मिगुणो ओदयियो तत्थ होदि भावो दु।

कारणणिरवेक्खभवो सभावियो होदि परिणामो॥815॥ जुम्मं।

(कर्मोपशमे उपशमभावः क्षीणे क्षायिकभावस्तु।

उदयो जीवस्य गुणः क्षायोपशमिको भवेत् भावः॥814॥

कर्मोदयजकर्मिगुण औदयिकस्तत्र भवति भावस्तु।

कारणनिरपेक्षभवः स्वाभाविको भवति परिणामः॥815॥ युग्मम्।)

उवसमभावो उवसमसम्मं चरणं च तारिसं खइओ।

खाइय णाणं दंसण सम्म चरित्तं च दाणादी॥816॥

(उपशमभाव उपशमसम्यक्त्वं चरणं तादृशः क्षायिकः।

क्षायिकं ज्ञानं दर्शनं सम्यक्त्वं चारित्रं च दानादयः॥816॥)

खाओवसमियभावो चउणाण तिदंसण तिअण्णाणं।

दाणादिपंच वेदगसरागचारित्तदेसजमं॥817॥

(क्षायोपशमिकभावः चतुर्ज्ञानं त्रिदर्शनं त्र्यज्ञानम्।

दानादिपञ्च वेदकसरागचारित्रदेशयमम्॥817॥)

ओदयिया पुण भावा गदिलिंगकसाय तह य मिच्छत्तं।

लेस्सासिद्धासंजमअण्णाणं होंति इगिवीसं॥818॥

(औदयिकाः पुनः भावा गतिलिङ्गकषायास्तथा च मिथ्यात्वम्।

लेश्यासिद्धासंयमाज्ञानं भवन्ति एकविंशतिः॥818॥)

जीवत्तं भव्वत्तमभव्वत्तादी हवंति परिणामा।

इदि मूलुत्तरभावा भंगवियप्पे बहू जाणे॥819॥

(जीवत्वं भव्यत्वमभव्यत्वादयो भवन्ति परिणामाः।

इति मूलोत्तरभावा भङ्गविकल्पे बहवो जानीहि॥819॥)

ओघादेसे संभवभावं मूलुत्तरं ठवेदूण।

पत्तेये अविरुद्धे परसगजोगेवि भंगा हु॥820॥

(ओघादेशे संभवभावं मूलोत्तरं स्थापयित्वा।

प्रत्येके अविरुद्धे परस्वकयोगेपि भङ्गा हि॥820॥)

मिच्छतिये तिचउक्के दोसुवि सिद्धेवि मूलभावा हु।

तिग पण पणगं चउरो तिग दोण्णि य संभवा होंति॥821॥

(मिथ्यत्रये त्रिचतुष्के द्वयोरपि सिद्धेपि मूलभावा हि।

त्रिकं पञ्च पञ्चकं चत्वारः त्रिकं द्वौ च संभवा भवन्ति॥821॥)

तत्थेव मूलभंगा दसछव्वीसं कमेण पणतीसं।

उगुवीसं दस पणगं ठाणं पडि उत्तरं वोच्छं॥822॥

(तत्रैव मूलभङ्गा दश षड्विंशं क्रमेण पञ्चत्रिंशत्।

एकोनविंशं दश पञ्चकं स्थानं प्रति उत्तरं वक्ष्यामि॥822॥)

उत्तरभंगा दुविहा ठाणगया पदगयात्ति पढमम्मि।

सगजोगेण य भंगाणयणं णत्थित्ति णिद्दिट्ठं॥823॥

(उत्तरभङ्गा द्विविधाः स्थानगताः पदगता इति प्रथमे।

स्वकयोगेन च भङ्गानयनं नास्तीति निर्दिष्टम्॥823॥)

मिच्छदुगे मिस्सतिये पमत्तसत्ते य मिस्सठाणाणि।

तिग दुग चउरो एक्कं ठाणं सव्वत्थ ओदयियं॥824॥

(मिथ्यद्विके मिश्रत्रये प्रमत्तसप्तके च मिश्रस्थानानि।

त्रिकं द्विकं चत्वारि एकं स्थानं सर्वत्र औदयिकम्॥824॥)

तत्थावरणजभावा पणछस्सत्तेव दाणपंचेव।

अयदचउक्के वेदगसम्मं देसम्मि देसजमं॥825॥

(तत्रावरणजभावा पञ्चषट्सप्तैव दानपञ्चैव।

अयतचतुष्के वेदकसम्यं देशे देशयमम्॥825॥)

रागजमं तु पमत्ते इदरे मिच्छादिजेट्ठठाणाणि।

वेभंगेण विहीणं चक्खुविहीणं च मिच्छदुगे॥826॥

(रागयमं तु प्रमत्ते इतरस्मिन् मिथ्यादिजेष्ठस्थानानि।

वैभङ्गेन विहीनं चक्षुर्विहीनं च मिथ्यद्विके॥826॥)

अवधिदुगेण विहीणं मिस्सतिए होदि अण्णठाणं तु।

मणणाणेणवधिदुगेणुभयेणूणं तदो अण्णे॥827॥

(अवधिद्विकेन विहीनं मिश्रत्रये भवति अन्यत्स्थानं तु।
मनोज्ञानेनावधिद्विकेनोभयेनोनं ततः अन्यानि॥827॥)

लिंगकसाया लेस्सा संगुणिदा चदुगदीसु अविरुद्धा।
बारस बावत्तरियं तत्तियमेत्तं च अडदालं॥828॥
(लिङ्गकषाया लेश्याः संगुणिता चतुर्गतिषु अविरुद्धा।
द्वादश द्वासप्ततिः तावन्मात्रं च अष्टचत्वारिंशत्॥828॥)

णवरि विसेसं जाणे सुर मिस्से अविरदे य सुहलेस्सा।
चदुवीस तत्थ भंगा असहायपरक्कमुद्दिट्ठा॥829॥
(नवरि विशेषं जानीहि सुरे मिश्रे अविरते च शुभलेश्याः।
चतुर्विंशं तत्र भङ्गा असहायपराक्रमोद्दिष्टाः॥829॥)

चक्खूण मिच्छसासणसम्मा तेरिच्छगा हवंति सदा।
चारिकसायतिलेस्साणब्भासे तत्थ भंगा हु॥830॥
(चक्षुरूनं मिथ्यसासनसम्यञ्चः तैरश्चिका भवन्ति सदा।
चतुःकषायत्रिलेश्यानामभ्यासे तत्र भङ्गा हि॥830॥)

खाइयअविरदसम्मे चउ सोल बिहत्तरी य बारं च।
तद्देसो मणुसेव य छत्तीसा तब्भवा भंगा॥831॥
(क्षायिकाविरतसम्ये चत्वारः षोडश द्वासप्ततिश्च द्वादश च।
तद्देशो मनुष्य एव च षट्त्रिंशत् तद्भवा भङ्गाः॥831॥)

परिणामो दुट्ठाणो मिच्छे सेसेसु एक्कठाणो दु।

सम्मे अण्णं सम्मं चारित्ते णत्थि चारित्तं॥832॥

(परिणामो द्विस्थानो मिथ्ये शेषेषु एकस्थानस्तु।

सम्ये अन्यत्सम्यं चारित्रे नास्ति चारित्रम्॥832॥)

मिच्छदुगयदचउक्के अट्ठट्ठाणेण खयियठाणेण।

जुद परजोगजभंगा पुध आणिय मेलिदव्वा हु॥833॥

(मिथ्यद्विकायतचतुष्के अष्टस्थानेन क्षायिकस्थानेन।

युतं परयोगजभङ्गा पृथगानीय मेलयितव्या हि॥833॥)

उदयेणक्खे चढिदे गुणगारा एव होंति सव्वत्थ।

अवसेसभावठाणेणक्खे संचारिदे खेवा॥834॥

(उदयेनाक्षे चटिते गुणकारा एव भवन्ति सर्वत्र।

अवशेषभावस्थानेनाक्षे संचारिते क्षेपाः॥834॥)

दुसु दुसु देसे दोसुवि चउरुत्तर दुसदगसिदिसहिदसदं।

बावत्तरि छत्तीसा बारमपुव्वे गुणिज्जपमा॥835॥

बारचउतिदुगमेक्कं थूले तो इगि हवे अजोगित्ति।

पुण बार बार सुण्णं चउसद छत्तीस देसोत्ति॥836॥ जुम्मं।

(द्वयोः द्वयोः देशे द्वयोरपि चतुरुत्तरद्विशतकमशीतिसहितशतम्।

द्वासप्ततिः षट्त्रिंशत् द्वादश अपूर्वे गुण्यप्रमा॥835॥

द्वादशचतुस्त्रिद्विकैकं स्थूले अतः एको भवेत् अयोगीति।

पुनः द्वादश द्वादश शून्यं चतुःशतं षट्त्रिंशत् देश इति॥836॥

युग्मम्।)

वामे दुसु दुसु दुसु तिसु खीणे दोसुवि कमेण गुणगारा।

णव छब्बारस तीसं वीसं वीसं चउक्कं च॥837॥

(वामे द्वयोः द्वयोः द्वयोः त्रिषु क्षीणे द्वयोरपि क्रमेण गुणकाराः।

नव षट् द्वादश त्रिंशं विंशं विंशं चतुष्कं च॥837॥)

पुणरवि देसोत्ति गुणो तिदुणभछछक्कयं पुणो खेवा।

पुव्वपदे अड पंचयमेगारमुगुतीसमुगुवीसं॥838॥

(पुनरपि देश इति गुणः त्रिद्विनभःषट्षट्कं पुनः क्षेपाः।

पूर्वपदे अष्ट पञ्चकमेकादश एकोनत्रिंशमेकोनविंशम्॥838॥)

उगुवीस तियं तत्तो तिदुणभछछक्कयं च देसोत्ति।

चउसुवसमगेसु गुणा तालं रुऊणया खेवा॥839॥

(एकोनविंशं त्रयः ततः त्रिद्विनभःषट्षट्कं च देश इति।

चतुर्षूपशामकेषु गुणाः चत्वारिंशत् रूपोनाः क्षेपाः॥839॥)

मिच्छादिठाणभंगा अट्ठारसया हवंति तेसीदा।

बारसया पणवण्णा सहस्ससहिया हु पणसीदा॥840॥

(मिथ्यादिस्थानभङ्गा अष्टादशशतं भवन्ति त्र्यशीतिः।

द्वादशशतं पञ्चपञ्चाशत् सहस्रसहिता हि पञ्चाशीतिः॥840॥)

रूवहियडवीससया सगणउदा दससया णवेणहिया।

एक्कारसया दोण्हं खवगेसु जहाकमं वोच्छं॥841॥

(रूपाधिकाष्टविंशशतानि सप्तनवतिः दशशतानि नवेनाधिकाः।

एकादशशतानि द्वयोः क्षपकेषु यथाक्रमं वक्ष्यामि॥841॥)

पुव्वंपंचणियट्टीसुहुमे खीणे दहाण छव्वीसा।

तत्तियमेत्तो दसअडछच्चदुचदुचदुय एगूणं॥842॥

(अपूर्वपञ्चानिवृत्तिसूक्ष्मे क्षीणे दशानां षड्विंशतिः।

तावन्मात्रा दशाष्टषट्चतुश्चतुश्चतुष्कमेकोनम्॥842॥)

उवसामगेसु दुगुणं रूवहियं होदि सत्त जोगिम्हि।

सत्तेव अजोगिम्मि य सिद्धे तिण्णेव भंगा हु॥843॥

(उपशामकेषु द्विगुणं रूपाधिकं भवति सप्त योगिनि।

सप्तैव अयोगिनि सिद्धे त्रय एव भङ्गा हि॥843॥)

दुविहा पुण पदभंगा जादिगपदसव्वपदभवात्ति हवे।

जातिपदखइगमिस्से पिंडेव य होदि सगजोगो॥844॥

(द्विविधाः पुनः पदभङ्गा जातिगपदसर्वपदभवा इति भवेत्।

जातिपदक्षायिकमिश्रे पिण्डे एव च भवति स्वकयोगः॥844॥)

अयदुवसमगचउक्के एक्कं दो उवसमस्स जादिपदो।

खइगपदं तत्थेक्कं खवके जिणसिद्धगेसु दु पण चदू॥845॥

(अयतौपशमिकचतुष्के एकं द्वे उपशमस्य जातिपदम्।

क्षायिकपदं तत्रैकं क्षपके जिनसिद्धकेषु द्वे पञ्च चत्वारि॥845॥)

मिच्छतिये मिस्सपदा तिण्णि य अयदम्मि होंति चत्तारि।

देसतिये पंचपदा तत्तो खीणोत्ति तिण्णिपदा॥846॥

(मिथ्यत्रये मिश्रपदानि त्रीणि च अयते भवन्ति चत्वारि।

देशत्रये पञ्चपदानि ततः क्षोण इति त्रिपदानि॥846॥)

मिच्छे अट्ठुदयपदा ते तिसु सत्तेव तो सवेदोत्ति।

छस्सुहुमोत्ति य पणगं खीणोत्ति जिणेसु चदुतिदुगं॥847॥

(मिथ्ये अष्टोदयपदानि तानि त्रिषु सप्तैवातः सवेद इति।

षट् सूक्ष्म इति च पञ्चकं क्षीण इति जिनेषु चतुस्त्रिद्विकम्॥847॥)

मिच्छे परिणामपदा दोण्णि य सेसेसु होदि एक्कं तु।

जातिपदं पडि वोच्छं मिच्छादिसु भंगपिंडं तु॥848॥

(मिथ्ये परिणामपदे द्वे च शेषेषु भवति एकं तु।

जातिपदं प्रति वक्ष्यामि मिथ्यादिषु भङ्गपिण्डं तु॥848॥)

अट्ठ गुणिज्जा वामे तिसु सग छच्चउसु छक्क पणगं च।

थूले सुहुमे पणगं दुसु चउतियदुगमदो सुण्णं॥849॥

(अष्ट गुण्यानि वामे त्रिषु सप्त षट् चतुर्षु षट्कं पञ्चकं च।

स्थूले सूक्ष्मे पञ्चकं द्वयोः चतुस्त्रिकद्विकमतः शून्यम्॥849॥)

बारट्ठट्ठछवीसं तिसु तिसु बत्तीसयं च चउवीसं।

तो तालं चउवीसं गुणगारा बार बार णभं॥850॥

(द्वादशाष्टाष्टषड्विंशं त्रिषु त्रिषु द्वात्रिंशत्कं च चतुर्विंशम्।

अतः चत्वारिंशत् चतुर्विंशं गुणकारा द्वादश द्वादश नभः॥850॥)

वामे चउदस दुसु दस अडवीसं तिसु हवंति चोत्तीसं।

तिसु छव्वीस दुदालं खेवा छव्वीस बार बार णवं॥851॥

(वामे चतुर्दश द्वयोः दश अष्टविंशं त्रिषु भवन्ति चतुस्त्रिंशत्।

त्रिषु षड्विंशं द्विचत्वारिंशत् क्षेपाः षड्विंशं द्वादश द्वादश

नव॥851॥)

एक्कारं दसगुणियं दुसु छावट्ठी दसाहियं विसयं।

तिसु छव्वीसं बिसयं वेदुवसामोत्ति दुसय बासीदी॥852॥

बादालं बेण्णिसया तत्तो सुहुमोत्ति दुसय दोसहियं।

उवसंतम्मि य भंगा खवगेसु जहाकमं वोच्छं॥853॥ जुम्मं।

(एकादश दशगुणितं द्वयोः षट्षष्टिः दशाधिकं द्विशतम्।

त्रिषु षड्विंशं द्विशतं वेदोपशम इति द्विशतं व्यशीतिः॥852॥

द्वाचत्वारिंशद्द्विशतं ततः सूक्ष्म इति द्विशतं द्विसहितम्।

उपशान्ते च भङ्गाः क्षपकेषु यथाक्रमं वक्ष्यामि॥853॥ युग्मम्।)

सत्तरसं दसगुणिदं वेदित्ति सयाहियं तु छादालं।

सुहुमोत्ति खीणमोहे बावीससयं हवे भंगा॥854॥

अडदालं छत्तीसं जिणेसु सिद्धेसु होंति णव भंगा।

एत्तो सव्वपदं पडि मिच्छादिसु सुणह वोच्छामि॥855॥ जुम्मं।

(सप्तदश दशगुणितं वेद इति शताधिकं तु षट्चत्वारिंशत्।

सूक्ष्म इति क्षीणमोहे द्वाविंशशतं भवेयुः भङ्गाः॥854॥

अष्टचत्वारिंशत् षट्त्रिंशत् जिनेषु सिद्धेषु भवन्ति नव भङ्गाः।

एतस्मात्सर्वपदं प्रति मिथ्यादिषु शृणुत वक्ष्यामि॥855॥ युग्मम्।)

भव्विदराणण्णदरं गदीण लिंगाण कोहपहुदीणं।

इगिसमये लेस्साणं सम्मत्ताणं च णियमेण॥856॥

(भव्येतरयोरन्यतरत् गतीनां लिङ्गानां क्रोधप्रभृतिनाम्।

एकसमये लेश्यानां सम्यक्त्वानां च नियमेन॥856॥)

पत्तेयपदा मिच्छे पण्णरसा पंच चेव उवजोगा।

दाणादी ओदयिये चत्तारि य जीवभावो य॥857॥

(प्रत्येकपदानि मिथ्ये पञ्चदश पञ्च चैव उपयोगाः।

दानादयः औदयिके चत्वारि च जीवभावश्च॥857॥)

पिंडपदा पंचेव य भव्विदरदुगं गदी य लिंगं च।

कोहादी लेस्सावि य इदि वीसपदा हु उड्ढेण॥858॥

(पिण्डपदानि पञ्चैव च भव्येतरद्विकं गतिश्च लिङ्गं च।

क्रोधादयः लेश्या अपि च इति विंशपदानि हि वृद्ध्या॥858॥)

पत्तेयाणं उवरिं भव्विदरदुगस्स होदि गदि लिंगे।

कोहादिलेस्ससम्मत्ताणं रयणा तिरिच्छेण॥859॥

(प्रत्येकानामुपरि भव्येतरद्विकस्य भवति गतिलिङ्गयोः।

क्रोधादिलेश्यासम्यक्त्वानां रचना तिरश्चा॥859॥)

एक्कादी दुगुणकमा एक्केक्कं रुंधिऊण हेट्ठम्मि।

पदसंजोगे भंगा गच्छं पडि होंति ऊवरुवरिं॥860॥

(एकादि द्विगुणक्रमादेकैकं रुद्ध्वा अधस्तने।

पदसंयोगे भङ्गा गच्छं प्रति भवन्ति उपर्युपरि॥860॥)

इट्ठपदे रुऊणे दुगसंवग्गम्मि होदि इट्ठधणं।

असरित्थाणंतधणं दुगुणेगूणे सगीयसव्वधणं॥861॥

(इष्टपदे रूपोने द्विकसंवर्गे भवति इष्टधनम्।

असदृशानामन्तधनं द्विगुणे एकोने स्वकीयसर्वधनम्॥861॥)

तेरिच्छा हु सरित्था अविरददेसाण खयियसम्मत्तं।

मोत्तूण संभवं पडि खयिगस्सवि आणए भंगे॥862॥

(तिर्यञ्चि हि सदृशानि अविरतदेशयोः क्षायिकसम्यक्त्वम्।

मुक्त्वा संभवं प्रति क्षायिकस्यापि आनयेत् भङ्गान्॥862॥)

उड्ढतिरिच्छपदाणं दव्वसमासेण होदि सव्वधणं।

सव्वपदाणं भंगे मिच्छादिगुणेसु णियमेण॥863॥

(ऊर्ध्वतिर्यक्पदानां द्रव्यसमासेन भवति सर्वधनम्।

सर्वपदानां भंगे मिथ्यादिगुणेषु नियमेन॥863॥)

मिच्छादीणं दुति दुसु अपुव्वअणियट्टिखवगसमगेसु।

सुहुमुवसमगे संते सेसे पत्तेयपदसंखा॥864॥

पण्णर सोलट्ठारस वीसुगुवीसं च वीसमुगुवीसं।

इगिवीस वीसचउदसतेरसपणगं जहाकमसो॥865॥ जुम्मं।

(मिथ्यादीनां द्वित्रिषु द्वयोः अपूर्वानिवृत्तिक्षपकोपशमकेषु।

सूक्ष्मोपशमके शान्ते शेषे प्रत्येकपदसंख्या॥864॥

पञ्चदश शोडशाष्टादश विंशैकोनविंशं च विंशमेकोनविंशम्।

एकविंशं विंशचतुर्दशत्रयोदशपञ्चकं यथाक्रमशः॥865॥ युग्मम्।)

मिच्छाइट्ठिप्पहुदिं खीणकसाओत्ति सव्वपदभंगा।

पण्णट्ठिं च सहस्सा पंचसया होंति छत्तीसा॥866॥

(मिथ्यादृष्टिप्रभृति क्षीणकषाय इति सर्वपदभङ्गाः।

पञ्चषष्ठिः च सहस्राणि पञ्चशतानि भवन्ति षट्त्रिंशत्॥866॥)

तग्गुणगारा कमसो पणणउदेयत्तरीसयाण दलं।

ऊणट्ठारसयाणं दलं तु सत्तहियसोलसयं॥867॥

(तद्गुणकाराः क्रमशः पञ्चनवत्येकसप्ततिशतानां दलम्।

एकोनमष्टादशशतानां दलं तु सप्ताधिकषोडशशतम्॥867॥)

तेवत्तरिं सयाइं सत्तावट्ठी य अविरदे सम्मे।

सोलस चेव सयाइं चउसट्ठी खयियसम्मस्स॥868॥

(त्रिसप्ततिशतानि सप्तषष्ठिश्च अविरते सम्ये।

षोडश चैव शतानि चतुःषष्ठिः क्षायिकसम्यस्य॥868॥)

ऊणत्तीससयाइं एक्काणउदी य देसविरदम्मि।

छावत्तरि पंचसया खइयणरे णत्थि तिरियम्मि॥869॥

(एकोनत्रिंशच्छतानि एकनवतिश्च देशविरते।

षट्सप्ततिः पञ्चशतानि क्षायिकनरे नास्ति तिरश्चि॥869॥)

इगिदालं च सयाइं चउदालं च य पमत्त इदरे य।

पुव्वुवसमगे वेदाणियट्टिभागे सहस्समट्ठूणं ॥870॥

(एकचत्वारिंशच्च शतानि चतुश्चत्वारिंशच्च च प्रमत्ते इतरस्मिंश्च।

अपूर्वोपशमके वेदानिवृत्तिभागे सहस्रमष्टोनम्॥870॥)

अडसट्ठी एक्कसयं कसायभागम्मि सुहुमगे संते।

अडदालं चउवीसं खवगेसु जहाकमं वोच्छं॥871॥

(अष्टषष्टिः एकशतं कषायभागे सूक्ष्मके शान्ते।

अष्टचत्वारिंशत् चतुर्विंशं क्षपकेषु यथाक्रमं वक्ष्यामि॥871॥)

अडदालं चारिसयापुव्वे अणियट्टिवेदभागे य।

सीदी कसायभागे तत्तो बत्तीस सोलं तु॥872॥

(अष्टचत्वारिंशत् चतुःशतान्यपूर्वे अनिवृत्तिवेदभागे च।

अशीतिः कषायभागे ततो द्वात्रिंशत् षोडश तु॥872॥)

जोगिम्मि अजोग्गिम्मि य बेसदछप्पण्णयाण गुणगारा।

चउसट्ठी बत्तीसा गुणगुणिदेक्कूणया सव्वे॥873॥

(योगिनि अयोगिन च द्विशतषट्पञ्चाशतां गुणकाराः।

चतुःषष्टिः द्वात्रिंशत् गुण्यगुणिते एकोनकाः सर्वे॥873॥)

सिद्धेसु सुद्धभंगा एक्कत्तीसा हवंति णियमेण।

सव्वपदं पडि भंगा असहायपरक्कमुद्दिट्ठा॥874॥

(सिद्धेषु शुद्धभङ्गा एकत्रिंशत् भवन्ति नियमेन।

सर्वपदं प्रति भङ्गा असहायपराक्रमोद्दिष्टाः॥874॥)

आदेसेवि य एवं संभवभावेहिं ठाणभंगाणि।

पदभंगाणि य कमसो अव्वामोहेण आणेज्जो॥875॥

(आदेशेपि च एवं संभवभावैः स्थानभङ्गाः।

पदभङ्गाश्च क्रमशः अव्यामोहेन आनेयाः॥875॥)

असिदिसदं किरियाणं अक्किरियाणं च आहु चुलसीदी।

सत्तट्ठण्णाणीणं वेणयियाणं तु बत्तीसं॥876॥

(अशीतिशतं क्रियानामक्रियाणां चाहुः चतुरशीतिः।

सप्तषष्ठिरज्ञानिनां वैनयिकानां तु द्वात्रिंशत् ॥876॥)

अत्थि सदो परदोवि य णिच्चाणिच्चत्तणेण य णवत्था।

कालीसरप्पणियदिसहावेहिं य ते हि भंगा हु॥877॥

(अस्ति स्वतः परतोपि च नित्यानित्यत्वेन च नवार्थाः।

कालेश्वरात्मनियतिस्वभावैश्च ते हि भङ्गा हि ॥877॥)

अत्थि सदो परदोवि य णिच्चाणिच्चत्तणेण य णवत्था।

एसिं अत्था सुगमा कालादीणं तु वोच्छामि॥878॥

(अस्ति स्वतः परतोपि च नित्यानित्यत्वेन च नवार्थाः।

एषामर्थाः सुगमाः कालादीनां तु वक्ष्यामि॥878॥)

कालो सव्वं जणयदि कालो सव्वं विणस्सदे भूदं।

जागत्ति हि सुत्तेसुवि ण सक्कदे वंचिदुं कालो॥879॥

(कालः सर्वं जनयति कालः सर्वं विनाशयति भूतम्।

जागर्ति हि सुप्तेष्वपि न शक्यते वञ्चितुं कालः॥879॥)

अण्णाणी हु अणीसो अप्पा तस्स य सुहं च दुक्खं च।

सग्गं णिरयं गमणं सव्वं ईसरकयं होदि॥880॥

(अज्ञानी हि अनीश आत्मा तस्य च सुखं च दुःखं च।

स्वर्गं निरयं गमनं सर्वमीश्वरकृतं भवति॥880॥)

एक्को चेव महप्पा पुरिसो देवो य सव्ववावी य।

सव्वंगणिगूढोवि य सचेयणो णिग्गुणो परमो॥881॥

(एकश्चैव महात्मा पुरुषो देवश्च सर्वव्यापी च।

सर्वाङ्गनिगूढोपि च सचेतनो निर्गुणः परमः॥881॥)

जत्तु जदा जेण जहा जस्स य णियमेण होदि तत्तु तदा।

तेण तहा तस्स हवे इदि वादो णियदिवादो दु॥882॥

(यत्तु यदा येन यथा यस्य च नियमेन भवति तत्तु तदा।

तेन तथा तस्य भवेदिति वादो नियतिवादस्तु॥882॥)

को करइ कंटयाणं तिक्खत्तं मियविहंगमादीणं।

विविहत्तं तु सहाओ इदि सव्वंपि य सहाओत्ति॥883॥

(कः करोति कण्टकानां तीक्ष्णत्वं मृगविहङ्गमादीनाम्।

विविधत्वं तु स्वभाव इति सर्वमपि च स्वभाव इति॥883॥)

णत्थि सदो परदोवि य सत्तपयत्था य पुण्णपाऊणा।

कालादियादिभंगा सत्तरि चदुपंतिसंजादा॥884।

(नास्ति स्वतः परतोपि च सप्तपदार्थाश्च पुण्यपापोनाः।

कालादिकादिभङ्गाः सप्ततिः चतुःपङ्क्तिसंजाताः॥884।)

णत्थि य सत्तपदत्था णियदीदो कालदो तिपंतिभवा।

चोद्दस इदि णत्थित्ते अक्किरियाणं च चुलसीदी॥885॥

(नास्ति च सप्तपदार्था नियतितः कालतः त्रिपङ्क्तिभवाः।

चतुर्दश इति नास्तित्वे अक्रियाणां च चतुरशीतिः॥885॥)

को जाणइ णवभावे सत्तमसत्तं दयं अवच्चमिदि।

अवयणजुद सत्ततयं इदि भंगा होंति तेसट्ठी॥886॥

(को जानाति नवभावेषु सत्त्वमसत्त्वं द्वयमवाच्यमिति।

अवचनयुतं सप्ततयमिति भङ्गा भवन्ति त्रिषष्टिः॥886॥)

को जाणइ सत्तचऊ भावं सुद्धं खु दोण्णिपंतिभवा।

चत्तारि होंति एवं अण्णाणीणं तु सत्तट्ठी॥887॥

(को जानाति सत्त्वचतुष्कं भावं शुद्धं खलु द्विपंङ्क्तिभवाः।

चत्वारो भवन्ति एवमज्ञानिनां तु सप्तषष्टिः॥887॥)

मणवयणकायदाणगविणवो सुरणिवइणाणिजदिवुड्ढे।

बाले मादुपिदुम्मि च कायव्वी चेदि अट्ठचऊ॥888॥

(मनोवचनकायदानगविनयः सुरनृपतिज्ञानियतिवृद्धे।

बाले मातृपित्रोश्च कर्तव्यः चेति अष्टचतुष्कम्॥888॥)

सच्छंददिट्ठीहिं वियप्पियाणि तेसट्ठिजुत्ताणि सयाणि तिण्णि।

पाखंडिणं वाउलकारणाणि अण्णाणिचित्ताणि हरंति ताणि॥889॥

(स्वच्छन्दद्दष्टिभिः विकल्पितानि त्रिषष्ठियुक्तानि शतानि त्रीणि।

पाखण्डिनां व्याकुलकारणानि अज्ञानिचित्तानि हरन्ति तानि॥889॥)

आलसड्ढो णिरुच्छाहो फलं किंचिं ण भुंजदे।

थणक्खीरादिपाणं वा पउरुसेण विणा ण हि॥890॥

(आलस्याढ्यो निरुत्साहः फलं किञ्चिन्न भुङ्क्ते।

स्तनक्षीरादिपानं वा पौरुषेण विना न हि॥890॥)

दइवमेव परं मण्णे धिप्पउरुसमणत्थयं।

एसो सालसमुत्तुंगो कण्णो हण्णइ संगरे॥891॥

(दैवमेव परं मन्ये धिक् पौरुषमनर्थकम्।

एष सालसमुत्तुङ्गः कर्णो हन्यते संगरे॥891॥)

संजोगमेवेति वदंति तण्णा णेवेक्कचक्केण रहो पयादि।

अंधो य पंगू य वणं पविट्ठा ते संपजुत्ता णयरं पविट्ठा॥892॥

(संयोगमेवेति वदन्ति तज्ज्ञा नैवैकचक्रेण रथः प्रयाति।

अन्धश्च पङ्गुश्च वनं प्रविष्टौ संप्रयुक्तौ नगरप्रविष्टौ॥892॥)

सइउट्ठिया पसिद्धी दुव्वारा मेलिदेहिंवि सुरेहिं।

मज्झिमपंडवखित्ता माला पंचसुवि खित्तेव॥893॥

(सकृदुत्थिता प्रसिद्धिः दुर्वारा मिलितैरपि सुरैः।

मध्यमपाण्डवक्षिप्ता माला पञ्चस्वपि क्षिप्तेव॥893॥)

जावदिया वयणवहा तावदिया चेव होंति णयवादा।

जावदिया णयवादा तावदिया चेव होंति परसमया॥894॥

(यावन्तो वचनपथाः तावन्तश्चैव भवन्ति नयवादाः।

यावन्तो नयवादास्तावन्तश्चैव भवन्ति परसमयाः॥894॥)

परसमयाणं वयणं मिच्छं खलु होइ सव्वहा वयणा।

जेणाणं पुण वयणं सम्मं खु कहंचिवयणादो॥895॥

(परसमयानां वचनं मिथ्या खलु भवति सर्वथावचनात्।

जैनानां पुनः वचनं सम्यक्खलु कथंचिद्वचनात्॥895॥)

8- त्रिकरणचूलिकाधिकार

णमह गुणरयणभूसण सिद्धंतामियमहद्धिभवभावं।

वरवीरणंदिचंदं णिम्मलगुणमिंदणंदिगुरुं॥896॥

(नमत गुणरत्नभूषण सिद्धान्तामृतमहाब्धिभवभावम्।

वरनीरनन्दिचन्द्रं निर्मलगुणमिन्द्रनन्द्रिगुरुम्॥896॥)

इगिवीसमोहखवणुवसमणणिमित्ताणि तिकरणाणि तहिं।

पढमं अधापवत्तं करणं तु करेदि अपमत्तो॥897॥

(एकविंशतिमोहक्षपणोपशमननिमित्तानि त्रिकरणानि तस्मिन्।

प्रथममधःप्रवृत्तं करणं तु करोति अप्रमत्तः॥897॥)

जम्हा उवरिमभावा हेट्ठिमभावेहिं सरिसगा होंति।

तम्हा पढमं करणं अधापवत्तोत्ति णिद्दिट्ठं॥898॥

(यस्मादुपरितनभावा अधस्तनभावैः सदृशका भवन्ति।

तस्मात् प्रथमं करणमधःप्रवृत्तमिति निर्दिष्टम्॥898॥)

अंतोमुहुत्तमेत्तो तक्कालो होदि तत्थ परिणामा।

लोगाणमसंखपमा उवरुवरिं सरिसवड्ढिगया॥899॥

(अन्तर्मुहूर्तमात्रः तत्कालो भवति तत्र परिणामाः।

लोकानासंख्यप्रमा उपर्युपरि सदृशवृद्धिगताः॥899॥)

बावत्तरितिसहस्सा सोलस चउ चारि एक्कयं चेव।

धणअद्धाणविसेसे तियसंखा होइ संखेज्जे॥900॥

(द्वासप्ततित्रिसहस्राणि षोडश चतुष्कं चत्वारि एकं चैव।

धनाध्वानविशेषाः त्रयसंख्या भवति संख्येये॥900॥)

आदिधणादो सव्वं पचयधणं संखभागपरिमाणं।

करणे अधापवत्ते होदित्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥901॥

(आदिधनात्सर्वं प्रचयधनं संख्यभागपरिमाणम्।

करणे अधःप्रवृत्ते भवतीति जिनैर्निर्दिष्टम्॥901॥)

उभयधणे संमिलिदे पदकदिगुणसंखरूवहदपचयं।

सव्वधणं तं तम्हा पदकदिसंखेण भाजिदे पचयं॥902॥

(उभयधने संमिलिते पदकृतिगुणसंख्यरूपहतप्रचयः।

सर्वधनं ततस्मात् पदकृतिसंख्येन भाजिते प्रचयम्॥902॥)

चयधणहीणं दव्वं पदभजिदे होदि आदिपरिमाणं।

आदिम्मि चये उड्ढे पडिसमयधणं तु भावाणं॥903॥

(चयधनहीनं द्रव्यं पदभक्ते भवति आदिपरिमाणम्।

आदौ चये वृद्धे प्रतिसमयधनं तु भावानाम्॥903॥)

पचयधणस्साणयणे पचयं पभवं तु पचयमेव हवे।

रूऊणपदं तु पदं सव्वत्थवि होदि णियमेण॥904॥

(प्रचयधनस्यानयने प्रचयः प्रभवस्तु प्रचय एव भवेत्।

रूपोनपदं तु पदं सर्वत्रापि भवति नियमेन॥904॥)

पडिसमयधणेवि पदं पचयं पभवं च होइ तेरिच्छे।

अणुकट्टिपदं सव्वद्धाणस्स य संखभावो हु॥905॥

(प्रतिसमयधनेपि पदं प्रचयः प्रभवश्च भवति तिरश्चि।

अनुकृष्टिपदं सर्वाध्वानस्य च संख्यभागो हि॥905॥)

अणुकट्टिपदेण हदे पचये पचयो दु होइ तेरिच्छे।

पचयधणूणं दव्वं सगपदभजिदं हवे आदि॥906॥

(अनुकृष्टिपदेन हते प्रचये प्रचयस्तु भवति तिरश्चि।

प्रचयधनोनं द्रव्यं स्वकपदभाजितं भवेदादिः॥906॥)

आदिम्मि कमे वड्ढदि अणुकट्टिस्स य चयं तु तेरिच्छे।

इदि उड्ढतिरियरयणा अधापवत्तम्मि करणम्मि॥907॥

(आदौ क्रमेण वर्धते अनुकृष्टेः च चयस्तु तिरश्चि।

इति ऊर्ध्वतिर्यग्रचना अधःप्रवृत्ते करणे॥907॥)

अंतोमुहुत्तकालं गमिऊण अधापवत्तकरणं तु।

पडिसमयं सुज्झंता अपुव्वकरणं समल्लियइ॥908॥

(अन्तर्मुहूर्तकालं गमयित्वा अधःप्रवृत्तकरणं तु।

प्रतिसमयं शुद्धय्न्नपूर्वकरणं समाश्रयति॥908॥)

छण्णउदिचउसहस्सा अट्ठ य सोलस धणं तदद्धाणं।

परिणामविसेसोवि य चउ संखापुव्वकरणसंदिट्ठी॥909॥

(षण्णवतिचतुःसहस्री अष्टौ च षोडश धनं तदध्वानः।

परिणामविशेषोपि च चत्वारि संख्यातान्यपूर्वकरणसंदृष्टिः॥909॥)

अंतोमुहुत्तमेत्ते पडिसमयमसंखलोगपरिणामा।

कमउड्ढापुव्वगुणे अणुकट्टी णत्थि णियमेण॥910॥

(अन्तर्मुहूर्तमात्रे प्रतिसमयमसंख्यलोकपरिणामाः।

क्रमवृद्धाः अपूर्वगुणे अनुकृष्टिर्नास्ति नियमेन॥910॥)

एकम्हि कालसमये संठाणादीहिं जह णिवट्टंति।

ण णिवट्टंति तहंवि य परिणामेहिं मिहो जे हु॥911॥

होंति अणियट्टिणो ते पडिसमयं जस्सिमेक्कपरिणामो।

विमलयरझाणहुदवहसिहाहिं णिद्दड्ढकम्मवणा॥912॥ जुम्मं॥

(एकस्मिन् कालसमये संस्थानादिभिर्यथा निवर्तन्ते।

न निवर्तन्ते तथापि च परिणामैर्मिथो ये हि॥911॥

भवन्ति अनिवर्तिनस्ते प्रतिसमयं येषामेकपरिणामः।

विमलतरध्यानहुतवहशिखाभिर्निर्दग्धकर्मवनाः॥912॥ युग्मम्।)

9- कर्मस्थितिरचनाधिकार

सिद्धे विसुद्धणिलये पणट्ठकम्मे विणट्ठसंसारे।

पणमिय सिरसा वोच्छं कम्मट्ठिदिरयणसब्भावं॥913॥

(सिद्धान् विशुद्धनिलयान् प्रणष्टकर्मणः विनष्टसंसारान्।

प्रणम्य शिरसा वक्ष्यामि कर्मस्थितिरचनासद्भावम्॥913॥)

कम्मसरूवंणागयदव्वे ण य एदि उदयरूवेण।

रूवेणुदीरणस्स य आवाहा जाव ताव हवे॥914॥

(कर्मस्वरूपेणागतद्रव्यं न च एति उदयरूपेण।

रूपेणोदीरणाया वा आबाधा यावत्तावद्भवेत्॥914॥)

उदयं पडि सत्तण्हं आबाहा कोडिकोडि उवहीणं।

वाससयं तप्पडिभागेण य सेसट्ठिदीणं च॥915॥

(उदयं प्रति सप्तानामाबाधा कोटीकोटिः उदधीनाम्।

वर्षशतं तत्प्रतिभागेन च शेषस्थितीनां च॥915॥)

अंतोकोडाकोडीठिदिस्स अंतोमुहुत्तमावाहा।

संखेज्जगुणविहीणं सव्वजहण्णट्ठिदिस्स हवे॥916॥

(अन्तःकोटीकोटिस्थितेः अन्तर्मुहूर्त आबाधा।

संख्यातगुणविहीनः सर्वजघन्यस्थितेः भवेत्॥916॥)

पुव्वाणं कोडितिभागादासंखेवअद्धओत्ति हवे।

आउस्स य आवाहा णट्ठिदिपडिभागमाउस्स॥917॥

(पूर्वाणां कोटित्रिभागादासंक्षेपाद्धा वा इति भवेत्।

आयुषश्च आबाधा न स्थितिप्रतिभाग आयुषः॥917॥)

आवलियं आवाहा उदीरणमासिज्ज सत्तकम्माणं।

परभवियआउगस्स य उदीरणा णत्थि णियमेण॥918॥

(आवलिकमाबाधा उदीरणामाश्रित्य सप्तकर्मणाम्।

परभवीयायुष्कस्य च उदीरणा नास्ति नियमेन॥918॥)

आवाहूणियकम्मट्ठिदीणिसेगो दु सत्तकम्माणं।

आउस्स णिसेगो पुण सगट्ठिदी होदि णियमेण॥919॥

(आबाधोनितकर्मस्थितिः निषेकस्तु सप्तकर्मणाम्।

आयुषः निषेकः पुनः स्वकस्थितिः भवति नियमेन॥919॥)

आवाहं वोलाविय पढमणिसेगम्मि देय बहुगं तु।

तत्तो विसेसहीणं बिदियस्सादिमणिसेओत्ति॥920॥

(आबाधां वा अपलाप्य प्रथमनिषेके देयं बहुकं तु।

ततो विशेषहीनं द्वितीयस्यादिमनिषेक इति॥920॥)

बिदिये बिदियणिसेगे हाणी पुव्विल्लहाणिअद्धं तु।

एवं गुणहाणिं पडि हाणी अद्धद्धयं होदि॥921॥

(द्वितीये द्वितीयनिषेके हानिः पूर्वहान्यर्धं तु।

एवं गुणहानिं प्रति हानिः अर्धार्धं भवति॥921॥)

दव्वं ठिदिगुणहाणीणद्धाणं दलसला णिसेयछिदी।

अण्णोण्णगुणसलावि य जाणेज्जो सव्वठिदिरयणे॥922॥

(द्रव्यं स्थितिः गुणहानीनामध्वानं दलशला निषेकच्छतिः।

अन्योन्यगुणशला अपि च ज्ञातव्यं सर्वस्थितिरचनायाम्॥922॥)

तेवट्ठिं च सयाइं अडदाला अट्ठ छक्क सोलसयं।

चउसट्ठिं च विजाणे दव्वादीणं च संदिट्ठी॥923॥

(त्रिषष्टिश्च शतानि अष्टचत्वारिंशदष्ट षट्कं षोडशकम्।

चतुःषष्ठिं च विजानीहि द्रव्यादीनां च संदृष्टिः॥923॥)

दव्वं समयपबद्धं उत्तपमाणं तु होदि तस्सेव।

जीवसहत्थणकालो ठिदिअद्धा संखपल्लमिदा॥924॥

(द्रव्यं समयप्रबद्धं उक्तप्रमाणं तु भवति तस्यैव।

जीवेन सह स्थानकालः स्थित्यद्धा संख्यपल्यमिताः॥924॥)

मिच्छे वग्गसलायप्पहुदिं पल्लस्स पढममूलोत्ति।

वग्गहदी चरिमो तच्छिदिसंकलिदं चउत्थो य॥925॥

(मिथ्ये वर्गशलाकप्रभृति पल्यस्य प्रथममूलमिति।

वर्गहतिः चरमः तच्छितिसंकलितं चतुर्थश्च॥925॥)

वग्गसलायेणवहिदपल्लं अण्णोण्णगुणिदरासी हु।

णाणागुणहाणिसला वग्गसलच्छेदणूणपल्लछिदी॥926॥

(वर्गशलाकयावहितपल्यमन्योन्यगुणितराशिर्हि।

नानागुणहानिशला वर्गशलच्छेदन्यूनपल्यछितिः॥926॥)

सव्वसलायाणं जदि पयदणिसेये लहेज्ज एक्कस्स।

किं होदित्ति णिसेये सलाहिदे होदि गुणहाणी॥927॥

(सर्वशलाकानां यदि प्रकृतनिषेके लभ्यते एकस्य।

किं भवतीति निषेके शलाहिते भवति गुणहानिः॥927॥)

दोगुणहाणिपमाणं णिसेयहारो दु होइ तेण हिदे।

इट्ठे पढमणिसेये विसेसमागच्छदे तत्थ॥928॥

(द्विगुणहानिप्रमाणं निषेकहारस्तु भवति तेन हिते।

इष्टे प्रथमनिषेके विशेष आगच्छति तत्र॥928॥)

रूऊणण्णोण्णब्भत्थवहिददव्वं च चरिमगुणदव्वं।

होदि तदो दुगुणकमो आदिमगुणहाणिदव्वोत्ति॥929॥

(रूपोनान्योन्याभ्यस्तावहितद्रव्यं च चरमगुणद्रव्यम्।

भवति ततो द्विगुणक्रममादिमगुणहानिद्रव्यमिति॥929॥)

रूऊणद्धाणद्धेणूणेण णिसेयभागहारेण।

हदगुणहाणिविभजिदे सगसगदव्वे विसेसा हु॥930॥

(रूपोनाध्वानार्धेनोनेन निषेकभागहारेण।

हतगुणहानिविभाजिते स्वकस्वकद्रव्ये विशेषा हि॥930॥)

पचयस्स य संकलणं सगसगगुणहाणिदव्वमज्झम्हि।

अवणियगुणहाणिहिदे आदिपमाणं तु सव्वत्थ॥931॥

(प्रचयस्य च संकलनं स्वकस्वकगुणहानिद्रव्यमध्ये।

अपनीय गुणहानिहिते आदिप्रमाणं तु सर्वत्र॥931॥)

सव्वासिं पयडीणं णिसेयहारो य एयगुणहाणी।

सरिसा हवंति णाणागुणहाणिसलाउ वोच्छामि॥932॥

(सर्वासां प्रकृतीनां निषेकहारश्च एकगुणहानिः।

सदृशे भवतः नानागुणहानिशला वक्ष्यामि॥932॥)

मिच्छत्तस्स य उत्ता उवरीदो तिण्णि तिण्णि संमिलिदा।

अट्ठगुणेणूणकमा सत्तसु रइदा तिरिच्छेण॥933॥

(मिथ्यात्वस्य च उक्ता उपरितः त्रयः त्रयः संमिलिताः।

अष्टगुणेनोनक्रमाः सप्तसु रचिता तिरश्चा॥933॥)

तत्थंतिमच्छिदिस्स य अट्ठमभागो सलायछेदा हु।

आदिमरासिपमाणं दसकोडाकोडिपडिबद्धे॥934॥

(तत्रान्तिमच्छिते श्चाष्टमभागः शलाकच्छेदा हि।

आदिमराशिप्रमाणं दशकोटीकोटिप्रतिबद्धे॥934॥)

इगिपंतिगदं पुध पुध अप्पिट्ठेण य हदे हवे णियमा।

अप्पिट्ठस्स य पंती णाणागुणहाणिपडिबद्धा॥935॥

(एकपङ्क्तिगतं पृथक् पृथगात्मेष्टेन च हते भवेन्नियमात्।

आत्मेष्टस्य च पङ्क्तयो नानागुणहानिप्रतिबद्धाः॥935॥)

अप्पिट्ठपंतिचरिमो जेत्तियमेत्ताण वग्गमूलाणं।

छिदिणिवहोत्ति णिहाणिय सेसं च य मेलिदे इट्ठा॥936॥

(आत्मेष्टपङ्क्तिचरमः यावन्मात्राणां वर्गमूलानाम्।

छितिनिवह इति निर्धार्य शेषं च च मेलिते इष्टा॥936॥)

इट्ठसलायपमाणे दुगसंवग्गे कदे दु इट्ठस्स।

पयडिस्स य अण्णोण्णभत्थपमाणं हवे णियमा॥937॥

(इष्टशलाकाप्रमाणे द्विकसंवर्गे कृते तु इष्टस्य।

प्रकृतेश्च अन्योन्याभ्यस्तप्रमाणं भवेन्नियमात्॥937॥)

आवरणवेदणीये विग्घे पल्लस्स बिदियतदियपदं।

णामागोदे बिदियं संखातीदं हवंतित्ति॥938॥

(आवरणवेदनीये विघ्ने पल्यस्य द्वितीयतृतीयपदम्।

नामगोत्रे द्वितीयं संख्यातीतं भवन्तीति॥938॥)

आउस्स य संखेज्जा तप्पडिभागा हवंति णियमेण।

इदि अत्थपदं जाणिय इट्ठठिदिस्साणए मदिमं॥939॥

(आयुषश्च संख्येयाः प्रत्प्रतिभागा भवन्ति नियमेन।

इति अर्थपदं ज्ञात्वा इष्टस्थितेरानयेत् मतिमान्॥939॥)

उक्कस्सट्ठिदिबंधे सयलाबाहा हु सव्वठिदिरयणा।

तक्काले दीसदि तो धोधो बंधट्ठिदीणं च॥940॥

(उत्कृष्टस्थितिबन्धे सकलाबाधा हि सर्वस्थितिरचना।

तत्काले दृश्यते अतः अधोऽधो बन्धस्थितीनां च॥940॥)

आबाधाणं बिदियो तदियो कमसो हि चरमसमयो दु।

पढमो बिदियो तदियो कमसो चरिमो णिसेओ दु॥941॥

(आबाधानां द्वितीयः तृतीयः क्रमशो चरमसमयस्तु।

प्रथमो द्वितीयः तृतीयः क्रमशः चरमो निषेकस्तु॥941॥)

समयपबद्धपमाणं होदि तिरिच्छेण वट्टमाणम्मि।

पडिसमयं बंधुदओ एक्को समयप्पबद्धो दु॥942॥

(समयप्रबद्धप्रमाणं भवति तिरश्चा वर्तमाने।

प्रतिसमयं बन्धोदय एकः समयप्रबद्धस्तु॥942॥)

सत्तं समयपबद्धं दिवड्ढगुणहाणिताडियं ऊणं।

तियकोणसरूवट्ठिददव्वे मिलिदे हवे णियमा॥943॥

(सत्त्वं समयप्रबद्धं द्वर्ध्यर्धगुणहानिताडितमूनम्।

त्रिककोणस्वरूपस्थितद्रव्ये मिलिते भवेन्नियमात्॥943॥)

उवरिमगुणहाणीणं धणमंतिमहीणपढमदलमेत्तं।

पढमे समयपबद्धं ऊणकमेणट्ठिया तिरिया॥944॥

(उपरितनगुणहानीनां धनमन्तिमहीनप्रथमदलमात्रम्।

प्रथमे समयप्रबद्धमूनक्रमेण स्थितं तिरश्चा॥944॥)

अंतोकोडाकोडिट्ठिदित्ति सव्वे णिरंतरट्ठाणा।

उक्कस्सट्ठाणादो सण्णिस्स य होंति णियमेण॥945॥

(अन्तःकोटीकोटिस्थितिरिति सर्वाणि निरन्तरस्थानानि।

उत्कृष्टस्थानात् संज्ञिनश्च भवन्ति नियमेन॥945॥)

संखेज्जसहस्साणिवि सेढीरूढम्मि सांतरा होंति।

सगसगअवरोत्ति हवे उक्कस्सादोदु सेसाणं॥946॥

(संख्येयसहस्राण्यपि श्रेणीरूढे सान्तरा भवन्ति।

स्वकस्वकावर इति भवेदुत्कृष्टात्तु शेषाणाम्॥946॥)

आउट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणा असंखलोगमिदा।

णामागोदे सरिसं आवरणदु तदियविग्घे य॥947॥

(आयुःस्थितिबन्धाध्यवसायस्थानानि असंख्यलोकमितानि।

नामगोत्रे सदृशमावरणद्विके तृतीयविघ्ने च॥947॥)

सव्वुवरि मोहणीये असंखगुणिदक्कमा हु गुणगारो।

पल्लासंखेज्जदिमो पयडिसमाहारमासेज्ज॥748॥

(सर्वोपरि मोहनीये असंख्यगुणितक्रमाणि हि गुणकारः।

पल्यासंख्येयिमः प्रकृतिसमाहारमासाद्य॥948॥)

अवरट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणा असंखलोगमिदा।

अहियकमा उक्कस्सट्ठिदिपरिणामोत्ति णियमेण॥949॥

(अवरस्थितिबन्धाध्यवसायस्थानानि असंख्यलोकमितानि।

अधिकक्रमाणि उत्कृष्टस्थितिपरिणाम इति नियमेन॥949॥)

अहियागमणणिमित्तं गुणहाणी होदि भागहारो दु।

दुगुणं दुगुणं वड्ढी गुणहाणिं पडि कमेण हवे॥950॥

(अधिकागमननिमित्तं गुणहानिः भवति भागहारस्तु।

द्विगुणा द्विगुणा वृद्धिः गुणहानिं प्रति क्रमेण भवेत्॥950॥)

ठिदिगुणहाणिपमाणं अज्झवसाणम्मि होदि गुणहाणी।

णाणागुणहाणिसला असंखभागो ठिदिस्स हवे॥951॥

(स्थितिगुणहानिप्रमाणमध्यवसाने भवति गुणहानिः।

नानागुणहानिशला असंख्यभागः स्थितेर्भवेत्॥951॥)

लोगाणमसंखपमा जहण्णठड्ढिम्मि तम्हि छट्ठाणा।

ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणं होंति सत्तण्हं॥952॥

(लोकानामसंख्यप्रमाणि जघन्यवृद्धौ तस्मिन् षट्स्थानानि।

स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानानां भवन्ति सप्तानाम्॥952॥)

आठस्स जहण्णट्ठिदिबंधणजोग्गा असंखलोगमिदा।

आवलिअसंखभागेणुवरुवरिं होंति गुणिदकमा॥953॥

(आयुषः जघन्यस्थितिबन्धनयोग्यानि असंख्यलोकमितानि।

आवल्यसंख्यभागेनोपर्युपरि भवन्ति गुणितक्रमाणि॥953॥)

पल्लासंखेज्जदिमा अणुकट्ठी तत्तियाणि खंडाणि।

अहियकमाणि तिरिच्छे चरिमं खंडं च अहियं तु॥954॥

(पल्यासंख्येयिमा अनुकृष्टिः तावन्ति खण्डानि।

अधिकक्रमाणि तिरश्चि चरमं खण्डं च अधिकं तु॥954॥)

लोगाणमसंखमिदा अहियपमाणा हवंति पत्तेयं।

समुदायेणवि तच्चिय ण हि अणुकिट्ठिम्मि गुणहाणी॥955॥

(लोकानामसंख्यमितानि अधिकप्रमाणानि भवन्ति प्रत्येकम्।

समुदायेनापि तावत् न हि अनुकृष्टौ गुणहानिः॥955॥)

पढमं पढमं खंडं अण्णोण्णं पेक्खिऊण विसरित्थं।

हेट्ठिल्लुक्कस्सादोऽणंतगुणादुवरिमजहण्णं॥956॥

(प्रथमं प्रथमं खण्डमन्योन्यं प्रेक्ष्य विसदृशम्।

अधस्तनोत्कृष्टादनन्तगुणादुपरितनजघन्यम्॥956॥)

बिदियं बिदियं खंडं अण्णोण्णं पेक्खिऊण विसरित्थं।

हेट्ठिल्लुक्कस्सादोणंतगुणादुवरिमजहण्णं॥957॥

(द्वितीयं द्वितीयं खण्डमन्योन्यं प्रेक्ष्य विसदृशम्।

अधस्तनोत्कृष्टादनन्तगुणादुपरिमजघन्यम्॥957॥)

चरिमं चरिमं खंडं अण्णोण्णं पेक्खिऊण विसरित्थं।

हेट्ठिल्लुक्कस्सादोणंतगुणादुवरिमजहण्णं॥958॥

(चरमं चरमं खण्डमन्योन्यं प्रेक्ष्य विसदृशम्।

अधस्तनोत्कृष्टादनन्तगुणादुपरिमजघन्यम्॥958॥)

हेट्ठिमखंडुक्कस्सं उव्वंकं होदि अवरिमजहण्णं।

अट्ठंकं होदि तदोणंतगुणं उवरिमजहण्णं॥959॥

(अधस्तनखण्डोत्कृष्टमुर्वङ्को भवति उपरिमजघन्यम्।

अष्टाङ्को भवति ततोऽनन्तगुणमुपरिमजघन्यम्॥959॥)

अवरुक्कस्सठिदीणं जहण्णमुक्कस्सयं च णिव्वग्गं।

सेसा सव्वे खंडा खलु होंति उड्ढेण॥960॥

(अवरोत्कृष्टस्थितीनां जघन्यमुत्कृष्टकं च निर्वर्गम्।

शेषाः सर्वे खण्डाः सदृशाः खलु भवन्ति वृद्ध्या॥960॥)

अट्ठण्हंपि य एवं आठजहण्णट्ठिदिस्स वरखंडं।

जावय तावय खंडा अणुकट्टिपदे विसेसहिया॥961॥

तत्तो उवरिमखंडा सगसगउक्कस्सगोत्ति सेसाणं।

सव्वे ठिदियणखंडाऽसंखेज्जगुणक्कमा तिरिये॥962॥ जुम्मं।

(अष्टानामपि च एवमायुर्जघन्यस्थितेः वरखण्डम्।

यावत् तावत् खण्डा अनुकृष्टिपदे विशेषाधिकाः॥961॥

ततः उपरिमखण्डाः स्वकस्वकोत्कृष्टक इति शेषाणाम्।

सर्वे स्थितितनखण्डा असंख्येयगुणक्रमाः तिरश्चि॥962॥ युग्मम्।)

रसबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखलोगमेत्ताणि।

अवरट्ठिदिस्स अवरट्ठिदिपरिणामम्हि थोवाणि॥963॥

(रसबन्धाध्यवसायस्थानानि असंख्यलोकमात्राणि।

अवरस्थितेरवरस्थितिपरिणामे स्तोकानि॥963॥)

तत्तो कमेण वड्ढदि पडिभागेण य असंखलोगेण।

अवरट्ठिदिस्स जेट्ठट्ठिदिपरिणामोत्ति णियमेण॥964॥

(ततः क्रमेण वर्द्धते प्रतिभागेन च असंख्यलोकेन।

अवरस्थितेः ज्येष्ठस्थितिपरिणाम इति नियमेन॥964॥)

ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति

गोम्मटसंगहसुत्तं गोम्मटदेवेण गोम्मटं रइयं।

कम्माण णिज्जरट्ठं तच्चट्ठवधारणट्ठं च॥965॥

(गोम्मटसंग्रहसूत्रं गोम्मटदेवेन गोम्मटं चरितम्।

कर्मणां निर्जरार्थं तत्त्वार्थावधारणार्थं च॥965॥)

जम्हि गुणा विस्संता गणहरदेवादिइड्ढिपत्ताणं।

सो अजियसेणणाहो जस्स गुरू जयउ सो राओ॥966॥

(यस्मिन् गुणा विश्रान्ता गणधरदेवादिऋद्धिप्राप्तानाम्।

सः अजितसेननाथो यस्य गुरुर्जयतु स रायः॥966॥)

सिद्धंतुदयतडुग्गयणिम्मलवरणेमिचंदकरकलिया।

गुणरयणभूसणंबुहिमइवेला भरउ भुवणयलं॥967॥

(सिद्धान्तोदयतटोद्गतनिर्मलवरनेमिचन्द्रकरकलिता।

गुणरत्नभूषणाम्बुधिमतिवेला भरतु भुवनतलम्॥967॥)

गोम्मटसंगहसुत्तं गोम्मटसिहरुवरि गोम्मटजिणो य।

गोम्मटरायविणिम्मियदक्खिणकुक्कडजिणो जयउ॥968॥

(गोम्मटसंग्रहसूत्रं गोम्मटशिखरोपरि गोम्मटजिनश्च।

गोम्मटरायविनिर्मितदक्षिणकुक्कटजिनो जयतु॥968॥)

जेण विणिम्मयपडिमावयणं सव्वट्ठसिद्धिदेवेहिं।

सव्वपरमोहिजोगिहिं दिट्ठं सो गोम्मटो जयउ॥969॥

(येन विनिर्मितप्रतिमावदनं सर्वार्थसिद्धिदेवैः।

सर्वपरमावधियोगिभिः दृष्टं स गोम्मटो जयतु॥969॥)

वज्जयणं जिणभवणं ईसिपभारं सुवण्णकलसं तु।

तिहुवणपडिमाणिक्कं जेण कयं जयउ सो राओ॥970॥

(वज्रतलं जिनभवनमीषत्प्राग्भारं सुवर्णकलशं तु।

त्रिभुवनप्रतिमानमेकं येन कृतं जयतु स रायः॥970॥)

जेणुब्भियथंभुवरिमजक्खतिरीटग्गकिरणजलधोया।

सिद्धाण सुद्धपाया सो राओ गोम्मटो जयउ॥971॥

(येनोद्भितस्तम्भोपरिमयक्षतिरीटाग्रकिरणजलधौतौ।

सिद्धानां शुद्धपादौ स रायो गोम्मटो जयतु॥971॥)

गोम्मटसुत्तल्लिहणे गोम्मटरायेण जा कया देसी।

सो राओ चिरकालं णामेण य वीरमत्तंडी॥972॥

(गोम्मटसूत्रलेखने गोम्मटरायेन या कृता देशी।

स रायः चिरकालं नाम्ना च वीरमार्तण्डी॥972॥)

इति गोम्मटसारस्य कर्मकाण्डं संस्कृतच्छायासहितं समाप्तम्।